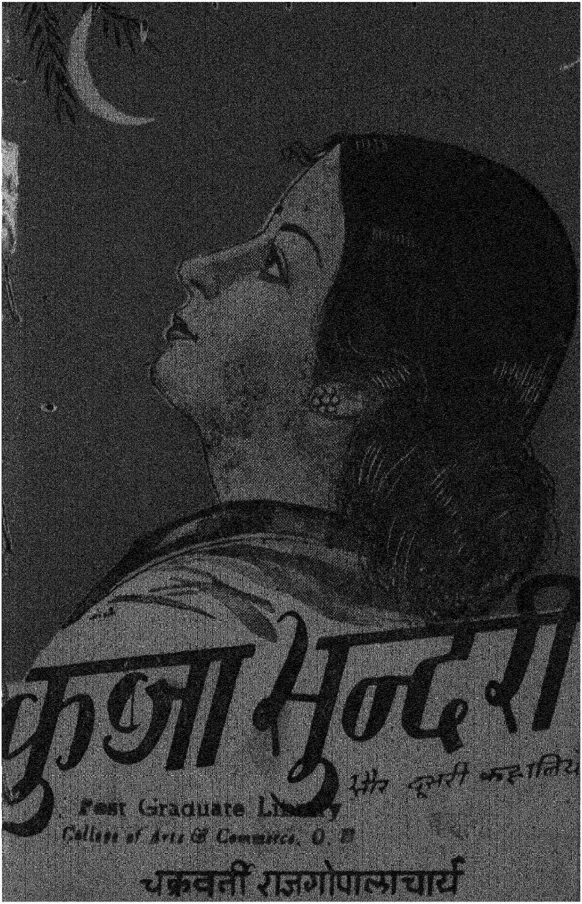

Post Graduate Li...y
College of Arts & Commerce, O. ...

कुब्जा सुन्दरी
और
दूसरी कहानियां

श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य की सोलह मौलिक
कहानियों का संग्रह

●

अनुवादिका
श्री शान्ति भटनागर, एम. ए.

१९५१

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय

मंत्री, सस्ता साहित्य मण्डल

नई दिल्ली

दूसरी बार : १९५१

मूल्य

दो रुपये

मुद्रक

देवीप्रसाद शर्मा

हिन्दुस्तान टाइम्स प्रेस, नई दिल्ली

लेखक की ओर से

ये कहानियां मूलतः तमिल में लिखी गई थीं और विभिन्न तमिल पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थीं। इनका अंगरेज़ी अनुवाद मेरे पुत्र स्वर्गीय डाक्टर सी. आर. रामस्वामी ने किया था। उसीके आधार पर श्रीमती शांति भटनागर ने इनका हिंदी रूपान्तर किया है।

ये कहानियाँ सन् १९२५ से लेकर अबतक भिन्न-भिन्न अवसरों पर लिखी गई हैं। यहाँ वे तिथि के अनुसार क्रमबद्ध नहीं की गई हैं।

नई दिल्ली
दिसम्बर, १९८६

—च० राजगोपालाचार्य

सूची

१.	कुब्जा सुन्दरी	१
२.	अर्द्ध नारी	१५
३.	मनहूस गाडी	२५
४.	पुनर्जन्म	५३
५.	स्पर्धा	७७
६.	भविष्य-वाणी	८४
७.	पश्चात्ताप	८९
८.	मा	९४
९.	शान्ति	१०३
१०.	देवयानी	११७
११.	चुनाव	१२९
१२.	देव-दर्शन	१३९
१३.	अबोध बालक	१४४
१४.	सीताराम	१४८
१५.	पटाखे	१५५
१६.	जगदीश शास्त्री का सपना	१६२

: १ :

कुब्जा सुन्दरी

"उन्हें कुछ भी हो; हमें क्या ? ऐसी बातों में पड़ना खतरनाक होता है। मेरा कहना मानो और ऐसा मत करो।"

"खतरे की कोई बात नहीं है, कामू! वह हमारी लिखावट नहीं पहचानते और अगर उन्हें मालूम भी हो जाय तो क्या? एक मज़ाक ही सही।"

"अच्छी बात है; लेकिन तुम खुद लिखो, मैं अपनी क़लम से नहीं लिखूंगी।"

"यही सही; लाओ मुझे दो, मैं लिखूंगी। इसमें मुश्किल ही क्या है ?"

यह बातचीत लड़कियों के वीरेशलिंग होस्टल के एक कमरे में हुई। कमला और कामाक्षी बी० ए० में पढती थीं। उन्होंने मिलकर शरारत से भरा हुआ एक गुमनाम पत्र लिखा—

"गीता-प्रसंग-शिरोमणि नरसिंह शास्त्री को हमारा प्रणाम !

महानुभाव, वीरेशलिंग होस्टल की हम छात्राएं आपकी सेवा में नम्रतापूर्वक निम्नलिखित प्रार्थना-पत्र भेजती हैं—

हम आपकी उस भावना का आदर करती हैं, जिसके कारण आपने अपने बड़े पद का त्याग किया और ईश्वर-भक्ति से प्रेरित होकर सर्वसाधारण को पुराने शास्त्रों के समझाने का धार्मिक कार्य उठाया।

जेसा प्रतिभाशाली भाषण आपने पिछले रविवार को वसंत हॉल में दिया था वैसा हमने आज तक नहीं सुना। अब तक कोई भी व्यक्ति गीता या उपनिषदों के मर्म इतनी सुन्दरता के साथ नहीं समझा पाया है। किंतु क्या कारण है कि जो सत्य आप दूसरों को इतनी अच्छी तरह समझाते है उससे खुद लाभ नहीं उठाते ?

क्या आपने अपने भाषण में यह बात बहुत ही अच्छे ढंग से नही समझाई थी कि विषय-भोग की ओर से हमें अपने विचार उसी प्रकार समेट लेने चाहिएं जिस प्रकार कछुआ अपनी खोपड़ी के अन्दर अपने सारे अंग समेट लेता है ? और, क्या आपने यह भी नहीं कहा था कि हमारी पांचों ज्ञानेंद्रियां पांच घोड़ों की तरह हैं जिनकी रास कसकर रखनी चाहिए, नही तो वे हमारे काबू से बाहर चली जायंगी और हमें ख़तरे में डाल देंगी ? फिर आपने अपने उपदेशों का स्वयं पालन क्यों नहीं किया ? आपने वहां दो घंटे तक भाषण दिया और इस बीच एक बार भी लड़कियों की ओर आंख उठाकर नही देखा। जिन लोगों ने वहां आपको देखा उन्होंने आपको बिना गेरुआ वस्त्रवाला एक संन्यासी समझा। लेकिन पिछले दो दिनों का आपका आचरण इस बात को झूठा सिद्ध करता है। आप पुण्य के मार्ग से बुरी तरह हट रहे हैं और पाप के गड्ढे में गिरने ही वाले हैं। ऐसा मालूम होता है कि आपको अपनी आंखों पर वश नहीं रह गया है। हममें-से कुछ ने तो आपके बारे में प्रिंसिपल साहब से कहने तक का इरादा कर लिया था, लेकिन फिर सोचा कि आपको बदनाम करना ठीक नहीं होगा और इसीलिए यह पत्र लिखा।

जब आपकी पत्नी का देहान्त हो गया था तो आपने प्रचलित प्रथा के अनुसार अपना दूसरा ब्याह क्यों नहीं कर लिया ? कृपाकर हमारी सलाह मानिये और गीता का उपदेश देना बन्दकर अपने घर चले जाइये और ब्याह कर लीजिये। आप अभी बहुत बूढ़े नहीं हुए है। हमारी समझ में अभी आप करीब पचास वर्ष के ही होंगे। हमने आपके लिए एक लड़की पसन्द की है। रेणिगुन्ट जंकशन से आगे वंकीपुर नाम का स्टेशन

है। वहीं दक्षिणी सड़क पर एक बड़ा-सा मकान है जिसमें गोविन्दार्य नाम के एक सज्जन रहते हैं। उनके करीब बाईस वर्ष की एक कन्या है। अगर आप तैयार हों तो हम उससे आपका ब्याह तय करा देंगी। हमें बस एक इशारे की ज़रूरत है। अगर आप अपनी छत की रस्सी पर अपनी रेशमी किनारीवाली चादर फैला देंगे और उसपर अपना छाता टांग देंगे तो उन्हें हम यहांसे देख सकेंगी और समझेंगी कि आप हमारे प्रस्ताव से सहमत हैं। इसके बाद हम सब कुछ स्वयं कर लेंगी और लड़की के घरवालों से मिलकर उन्हें राजी करा लेंगी।

आप अपनी बदनामी मत कराइये और न अपनी नेकनामी पर बट्टा लगाइये। मेहरबानी करके छत पर खड़े होकर हमें घूरा मत कीजिए।

—वीरेशलिंग होस्टल की छात्राएं।"

२

महादानपुर नरसिंह शास्त्री ने बिना किसी शिकायत का मौका दिये बारह साल तक सब-जजी की। इसके बाद वह एक साल तक जज के पद पर भी रहे। उनकी पत्नी को ब्याह के बाद पन्द्रह वर्ष तक कोई सन्तान नहीं हुई। सोलहवें साल उन्होंने एक कन्या को जन्म दिया। नरसिंह शास्त्री ने चिकित्सा और सुश्रूषा का पहले से ही समुचित प्रबंध कर रखा था। परन्तु डॉक्टरों की लाख चेष्टा करने पर भी प्रसव के सत्तरहवें दिन उनकी पत्नी का प्रसूतिका-ज्वर से देहान्त हो गया।

नरसिंह शास्त्री की विधवा बहिन, जो उम्र में उनसे बड़ी थी, उनके घर आकर रहने लगी और बड़े प्यार से बच्ची का लालन-पालन करने लगी। उन्होंने अपने छोटे भाई पर दूसरा ब्याह करने के लिए बार-बार ज़ोर डाला, लेकिन उन्होने ऐसा करने से दृढतापूर्वक इन्कार कर दिया और एक संन्यासी की तरह जीवन बिताया। उनका सारा समय या तो दफ़्तर के काम में बीतता या धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में।

लेकिन उनके दुर्भाग्य का अन्त यहीं नहीं हुआ। उनकी बड़ी बहिन मना करने पर भी मार्गशीर्ष एकादशी के त्यौहार पर श्रीरंग जाने

की ज़िद करती रहीं। वहां जाने पर उन्हें हैज़ा हो गया और वह मर गईं। उस वक्त तक बच्ची पूरी दो वर्ष की भी नहीं हो पाई थी।

एक बार फिर शास्त्री के वे सम्बन्धी, जिनके क्वारी कन्याएं थी, उनके पास आये। उन्होंने उनपर दबाव डाला कि अगर और किसीके लिए नहीं तो बच्ची की ख़ातिर ही शादी कर लो। परन्तु शास्त्री ने न केवल ब्याह करने से इन्कार कर दिया बल्कि अपनी नौकरी भी छोड़ दी। चूंकि उन्हें पुराने और नये धार्मिक साहित्य का बहुत अच्छा ज्ञान था, इसलिए वह बहुत जल्दी ही धार्मिक विषयों के एक सुन्दर उपदेशक प्रसिद्ध हो गये। मद्रास में लोग उनका व्याख्यान सुनने के लिए इतनी ही बड़ी संख्या में इकट्ठे होते जितनी कि संगीत-उत्सवों में। हर जाति के स्त्री-पुरुष—पढ़े-लिखे और अनपढ दोनों—उनके व्याख्यान बड़ी उत्सुकता से सुनते और उन्हें गीता-प्रसंग-शिरोमणि कहते, जिसका अर्थ था "गीता के उपदेशकों में सबसे बड़े मणि।"

इस तरह कई महीने बीत गये। परन्तु क्या पिछले जन्म का कर्म मिट सकता है ? वह व्यक्ति जो इतने समय से संन्यासियों-जैसा जीवन बिताता आया था, उस बुध की रात को मूर्ख बन गया।

वह लड़कियों के वीरेशलिंग होस्टल के पीछे की गली में एक छतदार मकान में रहते थे। एक दिन ऐसा हुआ कि जिस समय लड़किया अपनी छत पर आकर खड़ी हुई करीब-करीब उसी समय वह भी अपनी छत पर आये और उन्होने लड़कियों की ओर देखने की धृष्टता की। दो या तीन दिन तक ऐसा ही संयोग हुआ। लड़कियों को यह बात अच्छी नहीं लगी और उन्होंने उनके पास ऊपर लिखा गुमनाम पत्र भेजा।

३

डाकिये ने दरवाज़े पर खटखट की। शास्त्री ने खुद जाकर चिट्ठी ली। उसे पढकर उनका हृदय अचानक लांछन से क्षुब्ध हो उठा और उन्होंने पत्र को जलाकर राख कर देना चाहा। किन्तु कुछ सोच-समझकर उन्होंने उसे होशियारी से मोडकर अपने थैले में रख लिया।

क्षोभ के समुद्र में मानो वह डूब-से गये। उनकी प्रतिज्ञा झूठी पड़ गई थी, उनका ज्ञान निरर्थक सिद्ध हो गया था। उन्हें बहुत ही दुःख हुआ और उनकी समझ में नही आया कि वह इस अपमान को कैसे सहन करें।

उन्होंने यों ही एक किताब उठा ली और उसे पढ़ने की चेष्टा की, लेकिन मन नहीं लगा। बहुत प्रयत्न करने पर भी वह उस अपमान की बात को चित्त से नही हटा सके। "हे भगवान्, क्या मै सचमुच पापी होता जा रहा हूं? सीताराम!" इस तरह गिड़गिड़ाकर उन्होंने अपने मान्य देवता का स्मरण किया और दया की याचना की।

उस रात उन्हें नीद नही आई। उन्हें अपनी मृत पत्नी और बहिन की याद आई और उन्होने मद्रास छोड़कर अपने गांव चले जाने का निश्चय किया। लेकिन एकाएक उन्हे याद आया कि अगले इतवार को चिन्ताड्रिपेट में कपड़े के बड़े व्यापारी रामनाथ चेट्टियार के मकान पर गीता का उपदेश देना है। "इस वादे को मं कैसे तोड़ सकता हूं? लेकिन मैं भाषण दूंगा कैसे?" इन्ही उलझनों में पड़े-पड़े वह सारी रात जागते रहे।

४

शिरोमणि की छत पर छाते या चादर का कोई संकेत न देखकर लड़कियों को बड़ी निराशा हुई। अगले दिन भी कुछ संकेत न मिला। लड़कियों को यह सोचकर बड़ा दुःख हुआ कि उनकी चाल चली नहीं।

"कामाक्षी, अभी हमें एक दिन और इन्तज़ार करनी चाहिए," कमला ने कहा।

"वह हमारे धोखे में नही आ सकता, बड़ा चलता हुआ आदमी है," कामाक्षी ने जवाब दिया।

"कितने की शर्त लगाती हो?"

"दो रुपये की।"

"अच्छा, दो दिन का वक्त दो।"

तीसरे दिन रात को शास्त्री खुली छत पर बैठे-बैठे आकाश की ओर देख रहे थे और उनके मस्तिष्क में घूम रही थी ये बातें—"इस महान् ब्रह्माण्ड में मैं एक कण के बराबर हूं। मैं बड़ी तेजी से घुमाया जा रहा हूं, फिर भी मैं किसी तरह अपनी जगह पर टिका हुआ हूं। मैं किस तरह अपनी क्षुद्रता को पूरी तरह से समझ सकता हूं और किस तरह उसकी यथेष्ट निन्दा कर सकता हूं? मेरे भगवान, क्या मेरी चिन्ता और भय का तुमपर कोई असर नही पड़ता? मेरी रक्षा करो, मेरे स्वामी!" यह कहकर वह रोने लगे और बहुत देर तक इसी प्रकार चिन्ता में पड़े रहे। अन्त में उन्हें नींद आ गई। सपने में उन्हें अपनी मृत पत्नी दिखाई दीं; एक तश्तरी में शास्त्री को पान-सुपारी देती हुई बोलीं "निराश मत होओ" और फिर गायब हो गई। इस सपने के बाद शास्त्री का दिमाग़ कुछ हल्का हुआ। सपने में स्त्री का दीखना शुभ लक्षण था। कोई साहस-पूर्ण कार्य करने के लिए यह एक अच्छा शकुन था। उन्होने अपने मन को यह समझाने की चेष्टा की कि मृत पत्नी ने सपने में आकर सलाह दी है कि मैं दूसरा ब्याह कर लूं। "लड़कियों ने जो कहा वह ठीक ही है," उन्होंने सोचा। "जब तक अपने मे कठोर जीवन बिताने की क्षमता न आ जाय तब तक अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति को दबाने से कोई लाभ नहीं। जब मन ही पवित्र न हो तब सिर्फ़ बाहरी इंद्रियों के दमन से कोई लाभ नहीं। 'अहम्' के वश होकर मैंने शास्त्रों का अनादर किया है। मेरे लिए फिर से ब्याह कर लेना ही ठीक है," शास्त्री ने मन-ही-मन में तय किया। लड़कियों की शरारत मे उन्हें ईश्वर का हाथ दिखाई दिया।

अगले दिन सुबह उन्होंने छत की रस्सी पर अपनी रेशमी किनारी-वाली चादर डाल दी और छाता भी लटका दिया।

होस्टल में आनन्द की लहर दौड़ गई। कमला और कामू खुशी के मारे नाच उठी।

कमला ने चिल्लाकर कहा—"लाओ मेरे दो रुपये।"

"अच्छा-अच्छा, अब तुम वंकीपुर के लिए चल दो," कामाक्षी बोली।

५.

गोविन्दार्य वंकीपुर के एक धनी व्यक्ति थे। उनका एक पढे-लिखे घराने में जन्म हुआ था और वह ख़ुद भी बड़े विद्वान थे। उनके कोई पुत्र न था, केवल सुन्दरी नाम की एक कन्या थी जिसको उन्होंने ख़ूब संस्कृत पढ़ाई थी। जब वह बारह साल की थी और गोविन्दार्य उसके लिए वर की तलाश में थे, तो उसे बड़ा बुरा बुख़ार आया, जिसके कारण वह लंगड़ी हो गई और उसकी कमर भी झुक गई। इलाज हर तरह का कराया गया लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। क्वारी पुत्री के इस दुःख से गोविन्दार्य की पत्नी का हृदय टूट गया। वह बीमार पड़ गई और कुछ दिनों बाद इस संसार से चल बसी।

गोविन्दार्य ने अपनी पुत्री का ब्याह कर शास्त्रों के आदेश का पालन करने की भरपूर चेष्टा की। उन्होने दहेज़ में काफ़ी धन देने का भी वादा किया, लेकिन कोई भी उनकी अपाहज और अपंग लडकी से ब्याह करने को राज़ी नहीं हुआ। सुन्दरी साहसी लडकी थी; उसने अपने दुर्भाग्य को शान्तिपूर्वक सहन किया और अपने पिता को समझाने की भी पूरी कोशिश की। ख़ुद वह तमिल और संस्कृत साहित्य का अध्ययन करने में मग्न रहती।

अपंग होने पर भी सुन्दरी घर का सारा काम-काज सम्हालती थी। उसका नाम सुन्दरी था, पर उसकी मा समझ नहीं पाती थी कि किस घड़ी में उसका यह नाम रखा गया कि बाद में वह इतनी कुरूप हो गई। जब उसका यह नाम रखा गया था तब वह सचमुच सुन्दरी थी। उसकी मा उसे अपने सम्बन्धियों के सब बच्चों से अधिक सुन्दर समझती थी। उसका रंग शायद बहुत काला था, लेकिन इससे क्या? उसकी नाक, उसका माथा, उसकी भौहें तस्वीर के मानिन्द थी। अगर उसकी टांगों और पीठ की तरफ़ ध्यान न दिया जाता तो वह भी बहुत-सी दूसरी

लड़कियों के बराबर ही सुन्दर लगती थी। अपंग होने के कारण उसका नाम तो नही बदला जा सकता था, परन्तु वंकीपुर में उसका एक नया अर्थ लगाया जाने लगा था। उसका नाम कुब्जा का पर्यायवाची बन गया था।

कमला, जिसने गुमनाम पत्र लिखा था, वंकीपुर के ही एक धन-वान ज़मीदार की लाड़ली लड़की थी। वह सुन्दरी की सहेली थी और अक्सर गोविन्दार्य के घर आती-जाती रहती थी।

"क्या बात है, कमला ? अभी छुट्टियां तो हुई नहीं; फिर तुम घर कैसे चली आई ?" गोविन्दार्य ने कमला के एकाएक आने पर पूछा।

"चाचाजी, मैंने सुन्दरी के लिए एक वर ढूंढा है, बस आप अपनी मंज़ूरी दे दीजिये," कमला ने जवाब दिया।

गोविन्दार्य ने समझा कि यह मेरी अभागिनी लड़की का मज़ाक उड़ा रही है, इसलिए उन्हें कुछ क्रोध-सा आया। किन्तु कमला ने जो कुछ सोच रखा था और जो कुछ हुआ था सब बता दिया।

गोविन्दार्य ने रंजीदा होते हुए कहा—"कैसी बच्चों की-सी बात करती है, कमला ? भला वह सुन्दरी को कैसे अपना सकते हैं ? मेरा दुर्भाग्य इतनी आसानी से नहीं टल सकता।"

"नही चाचाजी, वह अब हमारी मुट्ठी में हैं, हम उन्हें राज़ी कर लेंगी," कमला ने कहा।

"कमला तुम साहसी हो; लेकिन मेरी मदद तो बस भगवान् ही कर सकते है," यह कहकर गोविन्दार्य फूट-फूटकर रोने लगे।

इस पर साहसी सुन्दरी ने कहा—"पिताजी मैं हाथ जोड़ती हूं, आप मेरे कारण दुःखी न हों।"

दूसरे दिन उन्होंने अपने घर की ओर आती हुई एक गाड़ी की खड़खड़ाहट सुनी। नरसिंह शास्त्री उसमें से धीरे-से उतरकर बाहर आए। कमला ने उनका स्वागत किया और एक आधुनिक भारतीय कन्या की निर्भीकता के साथ वह उन्हें अन्दर ले गईं।

नरसिंह शास्त्री ने दरवाजे पर कमला को देखकर उसे अपनी प्रस्तावित पत्नी समझा और अपने सौभाग्य पर प्रसन्न होते हुए वह भीतर घुसे। लेकिन जब असली बात का पता चला और उन्होंने सुन्दरी को देखा तो उन्हें बड़ी निराशा हुई। एक क्षण के लिए उन्हे घृणा-सी हुई और उनका यह भाव उनके चेहरे पर आने ही वाला था कि जल्दी से उन्होंने अपने को सम्हाल लिया। उनका ज्ञान उथला नही था, उसी समय उसीने उनकी सहायता की।

मद्रास से चलते समय भी उनके मन में धार्मिक विरक्ति का भाव था और उन्होंने सोचा था कि मैं भगवान् के आदेश का पालन कर रहा हूं। इसलिए उन्होंने सुन्दरी को देखकर अपने मन में सोचा—"यह मेरी परीक्षा है, मुझे इसमें सच्चा उतरना चाहिए। मैंने शास्त्रों और विद्या को जो कलंकित किया है उसका यह सही प्रायश्चित्त है। इस लड़की को, जिसके साथ भाग्य ने इतनी निष्ठुरता दिखलाई है, अगर मैं अपने यहां शरण दे सकूं तो मुझे इसे अपने लिए बड़े सौभाग्य की बात समझनी चाहिए।" इस तरह उन्होंने घृणा के पहले आवेश पर विजय पाई।

कमला ने बात यही नहीं छोड़ी। उसने बड़ी होशियारी के साथ सुन्दरी के पठन-पाठन, विशेषत: उसके संस्कृत-ज्ञान की विस्तार के साथ चर्चा की। इससे शास्त्री को तसल्ली हुई और जब सुन्दरी ने उनसे बातचीत की तो उसका शारीरिक रूप मानो लुप्त-सा हो गया और केवल उसकी आत्मा चमकती रही। उन्हें विश्वास हो गया कि यह मेरी पुत्री लक्ष्मी के लिए एक आदर्श मा बन सकेगी। उन्होंने अपने मन में कहा—"मेरी आत्मा पर जो मैल जमी हुई है वह साफ़ हो जायगी और उसकी हालत सुधर जायगी। मुझे अभी तक इस बात का बोध नही हुआ कि शरीर और आत्मा अलग-अलग है। मैं अबतक अज्ञान और अन्धकार में हूं। मुझे अभी सच्चा बोध प्राप्त करना है। आत्मा की सुन्दरता पर बाह्य शरीर की कुरूपता का असर नहीं पड़ता।

आत्मा की एक अलग सत्ता है जो सुन्दर होती है और हमें सुख देती है। हमारे शास्त्र हमें यही विश्वास दिलाते हैं।" एक-एक कर शास्त्री को अध्ययन किया हुआ सारा वेदान्त-दर्शन याद आने लगा।

बातचीत खतम हुई और ब्याह पक्का हो गया। गोविन्दार्य के हर्ष का ठिकाना न रहा।

"आप मेरे दामाद नहीं, बल्कि एक देवता हैं और मेरी रक्षा करने आये हैं," उन्होंने शास्त्री से कहा और उनके पैर पकड़ लिये, मानो वह सचमुच कोई महात्मा हों। उन्हें अपनी पत्नी की याद आ गई। वह आंसुओं की बाढ़ रोक नहीं सके और फूट-फूटकर रोने लगे।

तब कमला ने समझाया—"चाचाजी, इस शुभ अवसर पर आपको रोना नहीं चाहिए; यह तो खुशी मनाने का वक्त है।"

"तुम्हारी बड़ी उम्र हो बेटी, तुम हर तरह से सुखी रहो;" गोविन्दार्य ने कमला से कहा और उसे एक तश्तरी में नारियल और पान रखकर दिया।

कॉलेज में पढ़नेवाली लड़की कमला की आंखों में भी आंसू छलछला आये।

होस्टल लौटकर उसने अपनी सहेली कामाक्षी से कहा—"कामाक्षी, हमारे गीताशिरोमणि बहुत ही नेक आदमी हैं। हमने तो सिर्फ़ उनका मज़ाक उड़ाना चाहा था और उन्हें उनकी वासना के लिए शर्मिन्दा करना चाहा था, लेकिन नतीजा यह हुआ कि उनका ब्याह सचमुच पक्का हो गया।"

उसने फिर कहा—"ब्याह तिरुपति के मन्दिर में होगा और सारे संस्कार एक दिन में ही समाप्त कर दिये जायेंगे। मुझे भी जाना होगा; गोविन्दार्य ने कहा है कि मेरे बिना उनका काम नहीं चलेगा।"

"लेकिन हमें छुट्टी नहीं मिल सकेगी," कामाक्षी ने कहा।

"ज़रूर मिलेगी, हमें ब्याह में जाना ही होगा", कमला ने उत्तर दिया।

"तुम जाओगी तो मैं भी चलूंगी," कामाक्षी ने कहा ।

दो और लड़कियां भी उनके साथ चलने को तैयार हो गईं और इस तरह नरसिंह शास्त्री के ब्याह में तिरुपति जाने के लिए यह छोटी-सी मजेदार टोली बन गई ।

"बूढ़े का ब्याह होगा शानदार," सब लड़कियों ने एक स्वर से कहा और वे चलने के दिन का इन्तज़ार करने लगी ।

मद्रास में इस खबर के फैलते ही धार्मिक संस्थाओं में हलचल मच गई । किसीने पूछा, "हमने सुना है कि शिरोमणि शास्त्री ब्याह कर रहे हैं; लड़की कहां की है और उसकी उम्र क्या है ?" किसीने कहा आठ वर्ष की है, किसीने कहा बारह की है और किसीने बताया कि जवान है । क्या बस, क्या ट्राम, जहां सुनिये वहां यही चर्चा थी और समाज-सुधारकों में बड़ी खलबली मची हुई थी ।

आल्वारपेट में 'महिला-समानाधिकार सभा' की एक बैठक हुई जिसमें यह प्रस्ताव बड़े ज़ोरों के साथ पास किया गया कि ४५ वर्ष से अधिक उम्र वाले पुरुषों का ब्याह रोका जाय । लेकिन बाद में प्रस्ताव में संशोधन करके उम्र की हद ४५ वर्ष से बढ़ाकर ४९ कर दी गई और सभा इस बात के लिए भी तैयार हो गई कि अगर ब्याही जानेवाली स्त्री की उम्र ३५ वर्ष से अधिक होगी तो पुरुष की आयु पर कोई बन्धन नहीं होगा ।

६

दो साल बीत गये । कावेरी नदी के किनारे एक छोटे-से गांव की बात है । नरसिंह शास्त्री की छोटी-सी लड़की लक्ष्मी ने अपनी मा से पूछा—"सब लोग कहते हैं कि तुम सुन्दर नहीं हो । लेकिन तुम तो इतनी सुन्दर हो । फिर वे ऐसा क्यों कहते हैं, मा ?"

"बेटी, मेरी कमर को देखो । क्या वह कमान की तरह झुकी हुई नहीं है ? औरों की कमर सीधी होती है । मैं जमीन पर हाथ टेककर

चलती हूं, इसलिए जो भी मुझे देखता है वह मेरी हंसी उड़ाता है," सौतेली मा सुन्दरी ने समझाया।

"क्या तुम्हारी कमर में दुःख होता है, मा ?"

"नहीं बेटी, दुःख नही होता।"

"तो फिर इससे क्या कि तुम झुककर चलती हो ? बछिया भी तो तुम्हारी तरह चलती है ? क्या वह सुन्दर नहीं लगती ?"

"लक्ष्मी क्या कह रही है?" नरसिह शास्त्री ने घर में घुसते हुए पूछा।

"लक्ष्मी कहती है कि मै बछिया की तरह सुन्दर हूं और लोगों का यह कहना है कि मै बदसूरत हूं बिलकुल ग़लत है। आपकी क्या राय है ?" सुन्दरी ने पूछा।

"मै उससे सहमत हूं," शास्त्री ने जवाब दिया।

पिता के आ जाने से लक्ष्मी और भी बातें बनाने लगी। वह अपनी मा के सामने खड़ी हो गई और बोली—"देखो, जब मैं तुम्हें देखती हूं तो मुझे तुम्हारा बदन नही दिखाई देता।"

"अगर तू आंखें फाड़कर देखे तो तुझे बदन भी दीख जायगा," सुन्दरी ने जवाब दिया।

"नहीं मा," लक्ष्मी ने जवाब दिया, "जब मै तुम्हारा बदन देखती हूं तो तुम नहीं दिखाई देतीं और जब तुम्हें देखती हूं तो तुम्हारा बदन नहीं दिखाई देता।"

"कुछ समझ में आ रहा है कि यह क्या कह रही है ? शास्त्री ने सुन्दरी से पूछा।"

"बकवास कर रही है, जिसका न सिर है न पैर," सुन्दरी ने कहा।

नरसिह शास्त्री ने लक्ष्मी को छाती से चिपटा लिया और वह असीम आनन्द के सागर में डूब गए; बोले—"सुन्दरी, आज लक्ष्मी की बात सुनकर उपनिषदों के एक श्लोक का अर्थ समझ में आ गया। उपनिषदों में भी ऐसी ही बच्चों-जैसी बातें कही गई हैं।"

"वह श्लोक क्या है ?" सुन्दरी ने पूछा।

"वह श्लोक यह है कि आंखों में जो वस्तु दिखाई देती है वह आत्मा है। जब मैंने तुम्हें पाया तो मैं समझा कि एक प्रकार से मैं उस श्लोक का अर्थ समझ गया। लेकिन आज इस बच्ची की बातों ने उसका मतलब और भी साफ़ कर दिया है। जब दो आदमी एक-दूसरे को पूरे प्रेम के साथ देखते हैं तो शरीर उनकी आंखों से ओझल हो जाता है। आत्मा आत्मा को देखती है। यही बात लक्ष्मी कहती है और यही श्लोक में भी कहा गया है।"

"तुम्हारा मतलब यह है कि आत्मा और शरीर दो अलग-अलग चीज़ें हैं ?" सुन्दरी ने पूछा।

"नहीं, यह बात नहीं," शास्त्री ने कहा, "यह तो उस सत्य का एक अंश मात्र है। इधर देखो, इस समय मैं तुम्हें देख रहा हूं, तुम्हारे शरीर को नहीं। वह दृष्टि से ओझल हो गया है। तुम्हारी आखें, नाक, कान, मुंह, सब कुछ ओझल हो गया है। सिर्फ़ तुम रह गई हो। यही वह चीज़ है जो नेत्रों में दिखाई देती है।"

सुन्दरी ने भी उपनिषद् पढ़े थे। वह बोली—"वे इसका दूसरा मतलब लगाते हैं। जब कोई सन्त या ज्ञानी अपनी आंखें बन्दकर गहरी समाधि में होता है तो वह अपनी आत्मा को अपने चित्त की आंखों में देखता है। उपनिषदों का अर्थ बतानेवाले इस श्लोक का यही अर्थ लगाते हैं।"

"इसका यह अर्थ भी है," नरसिंह शास्त्री ने कहा, "लेकिन जो लक्ष्मी कहती है वह ज्यादा ठीक और व्यावहारिक अर्थ है। मैं न तो साधु हूं और न सन्त, फिर भी जब मैं तुम्हें एकाग्र प्यार के साथ देखता हूं तो तुम्हारा शरीर दिखाई नहीं देता। उस समय तुम्हारी आत्मा दिखाई देती है और उसे देखकर मैं सन्तुष्ट हो जाता हूं। जब हमारी आंखें एक-दूसरे से मिलती हैं और हम उससे आनन्दित हो उठते हैं तो उस समय केवल तुम्हारा मुह नहीं बल्कि तुम्हारा पूरा अस्तित्व मेरी आखों

के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है। अगर मै तुम्हारी नाक, माथा, या उस पर लगा हुआ तिलक, या तुम्हारी भौहें देखता हूं तो तुम्हारा केवल वही हिस्सा दिखाई देता है और तुम नजरों मे ओझल हो जाती हो।"

संक्षेप यह कि शास्त्री और सुन्दरी ने परस्पर प्रेम और सम्मान का व्यवहार रखते हुए सच्चा दार्शनिक और उच्च जीवन बिताया। सच पूछिये तो सुन्दरता और कुछ नही प्रेम है। शरीर की सुन्दरता और कुरूपता तो ब्याह से पहले देखी जाती है। जो स्थायी वस्तु है वह है चरित्र। ब्याह के बाद जब आत्मा से आत्मा का बन्धन हो जाता है तो शरीर और रूप ओझल हो जाते हैं। यह बात स्त्री और पुरुष दोनों के लिए सत्य है। उसकी नाक तो देखो, उसके दांत तो देखो, उसका मुंह तो देखो, ये सब बातें तो बाहरी आदमी कहते हैं और इन्हीं से उनका वास्ता भी होता है। परन्तु प्रेम के बन्धन में बंधे हुए जोड़े के लिए इन बातों का अस्तित्व मिट चुकता है और इनसे उसे न आनन्द मिलता है, न दुःख।

: २ :

अर्द्धनारी

अर्द्धनारी एक हरिजन का लड़का था। वह सेलम ज़िले के कोक्कलई गांव में रहता था। हरिजन-सेवक-संघ के मन्त्री श्री मलकानी जब दक्षिण भारत आये तो उससे मिलकर बड़े प्रसन्न हुए और उसे अपने साथ दिल्ली ले गये। वहां उन्होंने उसे एक स्कूल में भरती करा दिया और उसकी देखरेख की। वही उन्होंने कह-सुनकर उसे एक मशहूर व्यापारी कम्पनी के दफ़्तर में ६०) महीने पर नौकरी भी दिलवा दी। अर्द्धनारी ईमानदार और मेहनती था और देखने में जंचता था; इसलिए मालिकों से उसकी अच्छी तरह निभती रही। चौबीस साल की उम्र से पहले ही पहले उसे १५०) महीना मिलने लगा और जब कुछ समय बाद बंग्लूर में उसी कम्पनी की एक बड़ी मिल में जगह ख़ाली हुई तो वह वहां २००) महीना तनख़्वाह पर भेज दिया गया।

अर्द्धनारी ने दो साल बंग्लूर में बड़े आनन्द के साथ बिताये। उसके ऊपर का अफ़सर गोविन्द राव, जो दो साल तक मैनचेस्टर में काम सीख चुका था, क़रीब-क़रीब उसीकी उम्र का था और उसके स्वभाव और व्यवहार को पसन्द करता था; इसलिए दोनों पक्के दोस्त बन गये।

गोविन्द राव के पंकजा नाम की एक बहिन थी। दोनों एक-दूसरे से बहुत प्यार करते थे। जब पंकजा दस साल की थी तभी उनके मां-बाप का देहान्त हो गया था। अब वह बीस साल की थी और अभी तक क्वारी

थी। जब कभी गोविन्द राव अर्द्धनारी के घर जाता तो पंकजा भी उसके साथ जाती थी। अर्द्धनारी भी गोविन्द राव से मिलने आया करता था। इस तरह उसे और पंकजा को एक-दूसरे से मिलने का अक्सर मौका मिलता था। गोविन्द राव को भी यह देखकर खुशी होती थी कि ये एक-दूसरे को चाहते हैं। वह अक्सर अपने मन में सोचा करता—"क्यों न इन दोनों का ब्याह कर दिया जाय ओर ये यही बस जायं ?"

एक दिन गोविन्द राव ने अपनी बहिन से पूछा—"पंकजा, क्या तुमने कभी अपने ब्याह के बारे में भी सोचा है ?"

"इस बारे में मेरी कोई खास दिलचस्पी नहीं," पंकजा ने उत्तर दिया।

"तो क्यों न तुम्हारा ब्याह अर्द्धनारी से कर दिया जाय ?"

पंकजा ने इस प्रश्न पर कोई आपत्ति नहीं की, लेकिन उसने इधर-उधर की चर्चा छेड़कर बात टाल दी।

कुछ हफ्तों बाद जब अकस्मात् यही चर्चा उसके सामने फिर छिड़ी तो उसने अपने भाई से कहा—"तो क्या गोपू, तुम मुझसे ऊब गये हो ? क्या मै तुम्हें भार मालूम होने लगी हूं ?" यह कहकर पहले तो वह हंसी, पर बाद में फूट-फूटकर रोने लगी। लड़कियां, खासकर वे जिनकी मां मर चुकी होती है, बड़ी भावुक होती हैं।

"पगली कही की ! जी ऊबने और भार माल्रूम होने की क्या बात है ? मुझे तो बस इतना बता दो कि तुम ब्याह करना चाहती हो या नहीं ? अगर तुम नही चाहती तो इससे मुझे बड़ी खुशी होगी, क्योकि उस हालत में तुम हमेशा मेरे साथ रह सकोगी।" यह कहकर गोविन्द राव ने पंकजा के आंसू पोछ डाले। कुछ रुककर उसने फिर कहा—"मा तो अब रही नही, पंकजा ! इसलिए ब्याह के बारे में तुमसे पूछने और तुम्हारे मन की बातों का पता लगानेवाला अब मेरे सिवा और कौन है ?"

"जब ब्याह का वक्त आयगा तो कर लूंगी; अभी से बहस करने से क्या फ़ायदा ?" पंकजा ने कहा।

"ऐसा लगता है कि तुम दोनों एक-दूसरे को पसन्द करते हो। जब हमने जात-पांत का विचार ही छोड़ दिया है तो क्यों न तुम उसके साथ ब्याह कर लो ?"

"हां, हमें जात-पांत से तो कुछ नही करना है, लेकिन अभी यह तो नहीं पता कि इस बारे में उनका क्या ख़याल है।"

"इसकी चिन्ता न करो, तुम-जैसी पत्नी पाकर तो वह अपना अहोभाग्य समझेगा।"

गोविन्द राव को विश्वास था कि इस दुनिया में उसकी बहिन की बराबरी करनेवाली और कोई स्त्री नहीं।

चर्चा जब अर्द्धनारी से छिड़ी तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। लेकिन एक क्षण बाद ही उसका मुह उतर गया और वह बोला—"यह कैसे हो सकता है, गोविन्द राव ?"

"क्यों ? अड़चन क्या है ?"

"कहां मेरी जाति और कहां तुम्हारी !"

"ओः, जाति का सवाल ! वाहियात !" गोविन्द राव ने जोर से हसकर कहा। "कौन ब्राह्मण है और कौन नही ? हमने तो ऐसी बातों के बारे में सोचना मुद्दत से छोड़ रखा है। अगर तुम दोनों एक-दूसरे को पसन्द करते हो और ब्याह करने का पक्का इरादा रखते हो तो जात-पांत के बारे में चिन्ता करने की कोई ज़रूरत नही।"

अर्द्धनारी ने गोविन्द राव और पंकजा से कह रखा था कि मैं कोयमुत्तूर ज़िले का एक शैव मुदलियार हूं। शैव मुदलियार ऊंची जाति के शाकाहारी अब्राह्मण होते हैं। एक बार भयवश अपने को शैव कह चुकने के बाद अर्द्धनारी बात बदल नही सका। उसे अपनी जाति के बारे में सच बात बताते हुए लज्जा आती थी। दिल्ली में कुछ लोग उसके बारे में जानते थे, किन्तु बंग्लूर में किसी को पता नहीं था।

"पंकजा की क्या इच्छा है ?" अर्द्धनारी ने पूछा।

"मालूम होता है कि वह तुम्हें पसन्द करती है। मेरे सवालों के उसने जो जवाब दिये उनसे पता चलता है कि वह राज़ी है।"

"क्या यह अच्छा नहीं होगा कि मैं खुद उससे बातें करके उसका इरादा मालूम कर लूं?"

"हां, हां, क्यों नहीं ?" गोविन्द राव ने उत्तर दिया।

इस तरह बात टल गई। अर्द्धनारी ने निश्चय कर लिया कि चाहे कुछ भी हो वह पंकजा को सारी बातें ठीक-ठीक बता देगा; किन्तु बाद में उसका यह निश्चय ढीला पड़ गया।

"मैं बेकार क्यों उसे ये बातें बताऊं?" अर्द्धनारी ने मन में सोचा। "अगर मैं ऐसा करूंगा तो पंकजा और गोविन्द राव दोनों मुझसे घृणा करने लगेंगे। वे कहते तो ज़रूर हैं कि वे जात-पांत का भेद-भाव नही मानते, लेकिन अगर उन्हें मालूम हो जाय कि मै अछूत हूं तो वे कभी राज़ी नहीं होंगे। इसके अलावा वे मुझे झूठा समझेंगे।"

अगले दिन उसने इस विषय पर फिर विचार किया और सच्ची बात कह देने के इरादे से वह गोविन्द राव के घर की ओर चल पड़ा। परन्तु रास्ते में उसने अपने मन में फिर सोचा—"जब हम दोनों एक-दूसरे को प्यार करते है तो क्यों जात-पांत के चक्कर में पड़ें? इस सामाजिक अन्याय को हम प्रोत्साहन ही क्यों दें? जाति किसने बनाई है? क्या सब ढोंग नही है? मै क्यों इस बात को इतना महत्व दूं और पंकजा से इस बारे में बातचीत करूं? उन्होंने मुझसे साफ़-साफ़ कह दिया है कि उन्हें जांत-पांत की चिन्ता नहीं। फिर मैं ही क्यों इसकी चर्चा करूं?" अन्त में अर्द्धनारी ने सत्य को दबा देने का संकल्प कर लिया।

"क्या तुम मुझे सचमुच पसन्द करती हो?" उसने जाकर पंकजा से पूछा। "क्या हम ब्याह कर लें और सुख के साथ रहें?"

"लेकिन क्या तुम ऐसा चाहते हो?" पंकजा ने पूछा।

अर्द्धनारी का पिता मुनियप, उसका भाई रंग और उसकी मा कुप्पायी सब कोक्कलई गांव में चेरी (अछूतों के मोहल्ले) में रहते थे।

अर्द्धनारी पहले दिल्ली से और फिर बंग्लूर से उन्हें हर महीने बीस रुपये भेजा करता था। उनके लिए यह एक राजसी रकम थी और वे बड़ी मौज मे गुज़ारा करते थे। उन्हें यह पता नही था कि अर्द्धनारी कितना कमा रहा है, लेकिन हर महीने बीस रुपये पाते रहना वे अपने लिए बड़े सौभाग्य की बात समझते थे। दुर्भाग्य से मुनियप को शराब पीने की लत थी। जब उसे हर महीने रुपये मिलने लगे तो उसकी यह लत और भी बढ़ गई। रग इस बात को पसन्द नही करता था, लेकिन वह बाप को रोकने में असमर्थ था। वह एक गांव के स्कूल मे मास्टर था और अभी तक अविवाहित था। जब उसकी मा उसे अपने लिए बहू ढूंढने को कहती तो वह यह कहकर कि अभी नही कुछ दिन और ठहर जाओ बात टाल देता।

बंग्लूर में बदली हो जाने के बाद मे अर्द्धनारी साल में दो बार अपने मा-बाप से मिलने जाता था। जब उसे पता चला कि बाप को शराब पीने की लत पड़ गई है तो उसे बड़ी लज्जा आई। वह अपने घर का कूड़ा-करकट और मैलापन बरदाश्त नही कर पाता था, इसलिए जब वहां जाता था तो एक या दो दिन ठहरकर जल्दी-से-जल्दी वापस आ जाता था।

अर्द्धनारी जब बंग्लूर लौटने को तैयार होता तो उसका पिता उससे कहता—"अर्द्धनारी, हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे।"

इसपर अर्द्धनारी जवाब देता—"हरगिज नही, अगर वे तुम्हें मेरे साथ देख लेंगे तो मुझे नौकरी से अलग कर देंगे।"

और रंग भी कहता—"हां पिताजी, हमें नहीं जाना चाहिए।"

अर्द्धनारी उन्हें बराबर रुपये भेजता रहता था, इसलिए वे उससे ज़्यादा बहस नहीं करते थे। कुछ दिनों तक बात इसी तरह चलती रही।

अर्द्धनारी ने सोचा कि ब्याह हो जाने के बाद मेरे लिए सबसे अच्छा यही होगा कि मैं कहीं दूर उत्तर में चला जाऊं। वह बराबर अपने मन में कहता—"इसमें तो कोई शक नही कि वे मुझपर बड़े दयालु हैं, लेकिन अगर उन्हें यह पता लग गया कि मैं अछूत हूं तो बात ज़रूर बिगड़ जायगी। अगर यह मान भी लिया जाय कि वे परवा नहीं करेंगे तो भी

जब वे मेरे पिता और दूसरे सम्बन्धियों की आदतें और रहन-सहन का ढंग देखेंगे तो जरूर पंकजा का जी फट जायगा और उसके बाद शायद वह मेरा मुह भी नही देखेगी।" इस विचार के साथ ही साथ अर्द्धनारी का सत्य को छिपाने का सकल्प भी दृढ बनता गया और उसने जल्दी मे जल्दी ब्याह कर कहीं उत्तर में चले जाने का निश्चय किया। उसने अपनी कम्पनी के डाइरेक्टरों को पत्र लिखा और उनसे प्रार्थना की कि उसकी बदली उत्तरी भारत की किसी दूसरी मिल में कर दी जाय।

एक दिन पंकजा ने अचानक कहा—"अर्द्धनारी, मै तुम्हारी मा से मिलना चाहती हूं। हमने तय किया है कि तुम एक हफ़्ते की छुट्टी ले लो और हमारे साथ कोयमुत्तूर, उटाकमन्ड और दूसरे स्थानों की सैर करने चलो। तुम्हारी क्या राय है ?"

गोविन्द राव ने भी कहा—"आजकल दफ़्तर में काम ज़्यादा नहीं है। अगले महीने के पहले हफ़्ते मे चलना सबके लिए ठीक रहेगा।"

अर्द्धनारी का हृदय धड़कने लगा। उसने कहा—"हां, हां, हम ऐसा कर सकते है, लेकिन मेरे पास आज ही घर से चिट्ठी आई है जिसमें लिखा है कि गांव मे बड़े जोरों से हैज़ा फैल रहा है।"

यह सुनकर पंकजा को बहुत चिन्ता हुई। "हैज़ा !" उसने घबराहट के साथ कहा। "क्या तुमने अपने सम्बन्धियों को वहांसे दूसरी जगह जाने को लिख दिया है ? उन्हें यही आने को क्यों नही लिख देते ?"

"मैं अभी-अभी यही लिखने को सोच रहा था", अर्द्धनारी ने उत्तर दिया।

तीन दिन बाद अर्द्धनारी को रंग का एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था—

छोटे भाई अर्द्धनारी को आशीर्वाद !

यहां बड़े ज़ोरों से हैज़ा फैल रहा है। बहुत-से लोग मर चुके है और हमें भी घबराहट हो रही है। पिताजी का पहले ही जैसा हाल है, वह हमारी सलाह नही मानते। इस महीने तुमने जो रुपया भेजा था वह सब खतम हो चुका है। हम सोच रहे है कि अगर तुम ३०) और भेज

सको तो हम मकान में ताला डालकर जबतक हैज़े का खतरा दूर न हो जाय तबतक के लिए सेलम चले जाय।

तुम्हारा सस्नेह.
रंग

इस पत्र को पढकर अर्द्धनारी को बड़ा दुःख और आश्चर्य हुआ। "इसका क्या मतलब?" उसने सोचा, "जो बात मैं झूठ बोलने के लिए कह रहा था वह सच निकली? शायद भगवान् मेरी परीक्षा ले रहे हैं।" एकाएक अर्द्धनारी निश्चय न कर सका कि उसे क्या करना चाहिए। बाद में उसने सोचा कि कल रुपये भेज दूंगा।

उस रात अर्द्धनारी को नींद नहीं आई। बुरे-बुरे और लज्जा-जनक विचार उसके मस्तिष्क मे चक्कर काटते रहे। जब कभी उसे अपने पिता का ध्यान आता, उसका हृदय ग्लानि से भर उठता। कई बार उसके मन में विचार आता—"बाप हैजे मे मर जाय तो मुसीबत से छुटकारा मिले।" लेकिन दूसरे ही क्षण वह अपनेको इस भावना के लिए कोसता। सारी रात वह इसी तरह अपनी खाट पर बेचैनी से करवटें बदलता रहा और सुबह ही ठंडे पानी मे नहाया। डाकिया चिट्ठियां लाया और, जैसी कि उसे आशा थी, उसके गांव से एक और पत्र आया। कांपते हुए हाथों मे उसने उसे खोला और पढा —

"पिताजी को हैज़ा हो गया है। हम बहुत घबराये हुए है। मारिआयी हमपर दया करे। हमारे पास एक भी पैसा नही है।

—रंग"

पत्र को पढकर अर्द्धनारी का मुह स्याह पड़ गया। वह बड़ी देर तक अपनी कुरसी पर ही बैठा रहा और उस दिन उसने रुपये नही भेजे। दूसरे दिन भी ऐसा ही हुआ।

"तुम्हारे गांव में हैज़े का क्या हाल है?" पंकजा ने पूछा।

"अभी बहुत बुरा है", अर्द्धनारी ने उत्तर दिया।

"क्या कॉफी में चीनी ठीक है?" गोविन्द राव ने बीच में पूछा।

"हां, कॉफ़ी बहुत अच्छी बनी है", अर्द्धनारी ने उत्तर दिया।

घर लौटकर उसने देखा कि एक और पत्र आया हुआ रखा है। उसमें लिखा था—

"मा को भी हैजे के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। तुमने रुपया नहीं भेजा; हम लाचार हैं। जल्दी आओ।"

अर्द्धनारी ने उस दिन भी रुपये नहीं भेजे। उसने अपना हृदय पत्थर का बना लिया और सोचा—"मेरे जीवन का यह कलंक अब हमेशा के लिए छूट जायगा। इस छुटकारे में मुझे भगवान् की दया दिखाई देती है। उसकी इच्छा से बढ़कर और कोई भी धर्म या न्याय नहीं। मैं क्यों उसे बदलने की चेष्टा करूं? यदि मा और पिताजी दोनों मर जायेंगे तो फिर पंकजा के साथ ब्याह होने में कोई भी रुकावट नहीं रह जायगी।"

"दुष्ट, कैसे पाप से भरे हुए विचार हैं तेरे!" मानो किसीने एकाएक अर्द्धनारी को धिक्कारते हुए कहा। उसने पीछे घूमकर देखा तो पंकजा को खड़ा पाया। उसे डर लगा कि कहीं भेद खुल तो नहीं गया। लेकिन शीघ्र ही दिमाग का धुंधलापन दूर हो गया और उसने समझ लिया कि किसीने कुछ नहीं कहा था, सब कुछ उसके चित्त का भ्रम था।

"तुम बिना आवाज दिये अंदर कैसे चली आईं?" उसने पंकजा से पूछा।

इसपर पंकजा हंसी और बोली—"घुसने से पहले मैंने दरवाजे पर तीन बार धक्का दिया। तुम किसी बात से परेशान मालूम होते हो, तभी तुम्हें मेरे आने का पता नहीं चला।"

"मुझे अपने गांव जाना चाहिए। ऐसा मालूम होता है कि वहां बीमारी पहले से बढ़ गई है। मेरे माता-पिता वहीं हैं; मुझे उनके लिए कुछ इन्तजाम करना चाहिए", अर्द्धनारी ने कहा।

"बेशक! यह तो बहुत पहले हो जाना चाहिए था। अब अगर तुम वहां जाओ तो बड़ी होशियारी से रहना और जबतक वहां ठहरो कोई चीज़ खाना-पीना मत", पंकजा ने समझाते हुए कहा।

उसी रात अर्द्धनारी सेलम के लिए चल पड़ा, लेकिन सीधा कोक्कलई

न जाकर उसने रास्ते में देर कर दी और गांव चार दिन बाद पहुंचा। उस समय तक मा मर चुकी थी और बेचारा रंग भी उसका साथ दे चुका था। अलबत्ता, शराबी बाप मौत के मुंह से निकल आया था और अब चंगा था।

"मुझे बंग्लूर ले चलो, अब मैं यहां क्या करूंगा ?" मुनियप ने अर्द्धनारी से गिड़गिड़ाकर कहा। परन्तु अर्द्धनारी के कान पर जू भी नहीं रेंगी, वह पत्थर-सा बना रहा और बोला—"मैं तुम्हें काफ़ी रुपये भेजा करूंगा, तुम यही रहो। मेरे साथ चलने के लिए कहना बेकार है, क्योंकि मैं तुम्हें नही ले जा सकता।"

बाप बेटे के सामने एक असहाय बच्चे की तरह गिड़गिड़ाया। उसने सुबकियां लेते हुए कहा—"मैं यहां नही ठहर सकता।"

परन्तु अर्द्धनारी पर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा। उसने सोचा कि मैं पंकजा को कैसे छोड़ सकता हूं और पिता के रोने-धोने पर कान नही दिया। अगले दिन उसके हाथ पर दस रुपये का नोट रख वह सेलम से चल दिया।

पर उसके मन ने धिक्कारा—"हाय, क्या कर डाला तूने ! तूने अपनी मा और भाई को मार डाला। तूने ऐसा क्यों किया ? क्या तेरे जैसा दुष्ट भी कोई होगा ? तू अपने पिता को इस प्रकार कैसे छोड़ सका ? पंकजा से तू क्या कहेगा ?"

इन विचारों ने उसे गाड़ी में सोने नहीं दिया। बंग्लूर पहुंचकर उसने अपने घर तक का रास्ता पैदल ही तय किया। फिर भीतर से कुंडी बन्द कर वह पड़ रहा। न तो उसने अपने आने की सूचना गोविन्द राव या पंकजा को दी और न वह दफ़्तर ही गया।

उसी रात को उसने अपना असबाब फिर बांधा और स्टेशन पर टिकट लेकर वह सेलम की गाड़ी में जा बैठा।

सेलम में उसने सुना कि कोक्कलई में एक आदि द्रविड़ (अछूत) ने कुएं में डूबकर आत्म-हत्या कर ली है। जब वह कोक्कलई पहुंचा तो उसे मालूम हुआ कि वह उसका ही पिता था।

किसीने उसे ख़बर दी कि मुनियप शराबी के सम्बन्ध में पुलिस

चौकी पर जाच की जा रही है। परन्तु वह वहां नही गया और छिपकर सेलम चला आया और बंग्लूर की गाड़ी में बैठ गया।

"पंकजा, तुम मुझे भूल जाने की कोशिश करो", उसने जाकर पकजा से कहा।

"वह मैं बाद मे करूंगी, पहले मुझे सेलम के हाल बताओ।"

"वे सब मर गये। इसकी वजह यह है कि उनके लिए मुझे जो करना चाहिए था वह मैंने नही किया। मुझे अब अपने जीवन में कोई दिलचस्पी नही रह गई। मै अपनी नौकरी से इस्तीफा देने जा रहा हूं और उसके बाद मै गांव चला जाऊंगा। मुझे भूल जाओ।"

पकजा ने अर्द्धनारी की तरफ़ दो-तीन बार देखा, फिर चिन्तित हो वह सब कुछ अपने भाई को बताने भाग गई।

अर्द्धनारी को ज्वर चढ़ आया। पहले डॉक्टर ने टायफ़ॉयड बताया और फिर दिमागी बुख़ार। करीब एक महीने तक वह खाट पर पडा रहा। गोविन्द राव और पंकजा बिना आराम किये लगातार उसके पास बैठे रहे। चौथे सप्ताह के अन्त में बुख़ार टूटा।

"अब चिन्ता की कोई बात नही", डॉक्टर ने कहा और कुछ ही दिनों में अर्द्धनारी अपनी खाट पर उठने-बैठने लगा।

"मै अछूत हूं, पापी हूं। मै सचमुच छूने लायक़ नही हूं, मै झूठा हूं। मै ब्याह नही करूंगा। ईश्वर के लिए मुझे भूल जाओ", अर्द्धनारी ने कहा।

पंकजा ने हंसकर उसे तसल्ली देते हुए कहा;—"इससे क्या कि तुम किस जाति के हो? हम एक-दूसरे से अलग क्यो हो?"

परन्तु अर्द्धनारी नही माना। उसने कहा—"मै जानता हू कि तुम्हे मेरी जाति की चिन्ता नही, परन्तु मैंने अपने माता-पिता का ख़ून किया है", और फिर उसने अपनी सारी कहानी कह सुनाई।

जब वह बिलकुल अच्छा हो गया तो उसने अपनी नौकरी से इस्तीफ़ा दे दिया और कोक्कलई वापस चला गया। अब वह संन्यासी बन गया है और मारिअम्मा के मन्दिर में स्कूल चलाता है।

: ३ :

मनहूस गाड़ी

करुप की गृहस्थी अलग कर दी गई। किसानों में यह प्रथा थी कि बेटे का ब्याह हो जाने पर उसके लिए एक अलग झोंपड़ा बना दिया जाता था और उम्मीद की जाती थी कि वह खुद कमाय-खायगा। सच-मुच यह एक अच्छी प्रथा थी। करुप के माता-पिता बूढ़े हो गए थे और गांव में अपने पुरखों के मकान में रहते थे। करुप का बड़ा भाई खेत पर झोंपड़े में रहता था। अब जब करुप अलग रहने लगा तो जमीन के तीन हिस्से कर दिये गये और उनमें-से एक करुप को दे दिया गया। बड़ा भाई अपना और अपने पिता का खेत जोतता था। सबने मिलकर करुप के लिए भी एक मिट्टी का झोंपड़ा बना दिया। उन्होंने उसे एक जोड़ी बैल और दो बकरियां भी दे दी। करुप तीस साल का हट्टाकट्टा नौजवान था। उसकी पत्नी पार्वती गांव की सबसे सुन्दर और काम-काजू लड़की थी। किसान की कन्या होकर भी वह रानी-जैसी लगती थी। चींटी और शहद की मक्खी चाहे कभी सुस्त बन जाय लेकिन पार्वती कभी खाली नहीं बैठती थी। जब वह अपने नये घर में इस तरह काम करती जैसे वहीं जन्मी और पली हो और बीच-बीच में करुप की ओर देखकर मुसकरा देती तो करुप निहाल हो जाता और सोचता इस दुनिया में मुझे किसी चीज की कमी नहीं।

पार्वती अपने मायके से कुछ रुपये लाई थी। उससे उन्होंने एक दुधारू भैंस खरीद ली। वर्षा समय पर हुई और करुप ने खूब मेहनत

से काम किया, इसलिए फ़सल भी बहुत अच्छी हुई। पार्वती दिन-भर काम करती और माथे पर बल न लाती। करुप, बैल, भेंस और खेत—इन्ही में उसकी सारी दुनिया बसी हुई थी। अवकाश के समय वह अपनी मा के घर से लाये हुए चरखे पर सूत कातती। चादनी रात में उसकी जिठानी भी उसके पास आ बैठती और दोनों देर तक सूत काततीं और बातें करती रहती।

पार्वती की भेंस अच्छी दुधार नस्ल की थी। पार्वती अंधेरे-मुंह उठकर दही बिलोती, मकान झाड़ती-बुहारती और धोती और फिर जुलाहो की बस्ती में मट्ठा बेचने निकल जाती। पैठ के दिन वह मक्खन ताकर घी बनाती और उसे बेच देती। इस तरह वह हर हफ्ते करीब तीन रुपये कमा लेती।

एक साल बाद करुप ने अपना कारबार बढाने का निश्चय किया उसने अपनी पत्नी से कहा—"हमारा खेत छोटा है, इसलिए हमारे पास बारहों महीने काम नही रहता। क्यो न हम एक बैलगाड़ी ख़रीद ले और उससे कुछ रुपया कमायें? फिर तो हम बैलो से भी पूरे साल काम ले सकेंगे। चाचा के लड़के राम को देखो, वह अपनी बैलगाड़ी से हर हफ़्ते कम-से-कम दो-तीन रुपये कमा लेता है। कभी-कभी तो उसे चार रुपये भी मिल जाते है। वीर गाव छोड़कर उड़ुमलपेट जा रहा है। अपना कर्ज़ा उतारने के लिए वह अपनी ज़मीन बेच रहा है। शायद अपनी गाड़ी हमें सस्ते दामों में दे दे।"

"नही, नहीं; हमें वीर की गाड़ी नही चाहिए। हम उस मनहूस गाड़ी को नही ख़रीदेंगे, उसके आने से हमारे ऊपर भी बुरे दिन आ जायेंगे। और फिर, रुपया उधार लेकर बैलगाडी ख़रीदने की ज़रूरत ही क्या है? हमें अब किस बात की कमी है?" पार्वती बोली।

"पगली! वीर तो शराब पीता था और इसी लत ने उसे तबाह किया। उसकी बरबादी से गाड़ी का क्या सरोकार? गाड़ी तो बड़ी

अच्छी और मजबूत है। बीस रुपये कर्ज लेने से हमारा कुछ बिगड़ेगा नहीं। उसे उतार देना नामुमकिन थोड़ी ही है।"

"लेकिन मैं तो अपने रुपयों से कान के बुन्दे खरीदने को सोच रही थी," पार्वती ने कहा।

"ऐसी बेवकूफी की बातें क्यों करती है? तू तो रानी-जैसी सुन्दर है; गहनों से तेरा रूप बिगड़ जायगा," करुप ने कहा।

"औरतें तो जब कोई चीज़ चाहती है तो मर्द ऐसी ही बातें बना देते हैं। खैर, हम औरतें व्यापार की बातें क्या जानें? अपने बापू से सलाह कर लो और जैसा ठीक समझो, करो। मुझसे क्या पूछना?" पार्वती ने कहा।

करुप गाड़ी खरीदने पर तुला हुआ था। इसलिए जब उसने अपने बाप से पूछा तो उसने भी उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ कुछ नही कहा। एक हफ़्ते के अन्दर ही अन्दर गाड़ी खरीद ली गई। उसमें उसके अपने पास के सारे रुपये खर्च हो गये और गांव के जमींदार से भी चालीस रुपये उधार लेकर लगाने पड़े।

२

करुप अक्सर गाड़ी भाड़े पर बाहर ले जाता था। जब कभी दूर जाना होता तो रात को वह वापस नही लौटता और कभी अगले दिन सुबह भी नही आता। ऐसे मौक़ों पर उसका चचेरा भाई राम भी गाड़ी में उसके साथ जाता। एक साल के भीतर ही भीतर करुप को ताड़ी की दूकान दिखा दी गई। फिर क्या था! हर फेरे में ताड़ी की दूकान पर जाना उसका नियम हो गया। गाड़ी की कमाई दिन पर दिन घटने लगी और बैलों के लिए अच्छा चारा लेना दूभर हो गया। एक दिन जब करुप नशे में घर पहुंचा तो पार्वती सन्न रह गई। उसे कुछ पता नहीं था था कि अब तक क्या होता रहा है।

"तुमने मुझे बरबाद कर दिया," उसने रोकर कहा।

"चुप रह, मैंने तेरी कोई चोरी थोड़े ही की है," करुप ने कड़क-कर कहा ।

पार्वती को गुस्सा आ गया, बोली—"तुमने ताड़ी पी है ?"

"हां, पी है; तुझे इससे क्या ? तेरे बाप की कमाई तो नही खर्च की है ! तू पूछने वाली कौन होती है ?"

"खबरदार जो इस घर में घुसे; जाओ अपने बाप के घर । मैंने आज रोटी-वोटी नही बनाई है," पार्वती ने कहा और गुस्से मे उसका मुंह लाल हो गया ।

"चल, मुंहजली कही की, मैं तेरी सड़ी हुई रोटियो के बिना मर नही जाऊंगा ।" यह कहकर करुप ने पार्वती को पीटने को हाथ उठाया ।

ऐसे झगड़े अक्सर होते और कभी-कभी करुप पार्वती को पीट भी बैठता । तब पार्वती अपने बच्चे को लेकर जिठानी के घर चली जाती और वहां करुप की बिगड़ती हुई आदतों पर बाते होती । स्थिति दिन पर दिन बिगड़ती ही गई; बैल जल्दी बूढ़े हो गये और उनमे गाड़ी खींचने का बल न रह गया । करुप ने उन्हे घाटे से एक मेले में बेच दिया और उसके पास अब इतना रुपया नहीं था कि नई जोड़ी खरीद लेता ।

उसने पार्वती से कसमें खाकर प्रतिज्ञा की कि अब मैं ताड़ी की दूकान के पास भी नही फटकूंगा और इस तरह बातो में फंसाकर उसने उससे वे सारे रुपये ले लिये जो उसने मट्ठा-घी बेचकर और सूत कातकर बचाये थे । फिर कुछ रुपये अपनी बडी विधवा बहिन से उधार लेकर वह बैलो की नई जोड़ी खरीद लाया ।

तीन महीने बीत गये । ज़मीदार ने अपने पुराने कर्ज़ के तकाज़े के लिए आदमी भेजा । करुप ने हाथ जोड़कर कुछ दिन और ठहरने को कहा । इस तरह मियाद तीन बार बढाई गई । आखिरकार ज़मीदार के नौकर उसका एक बैल खोलकर ले गये । करुप ज़मीदार के पास दौड़ा हुआ गया और एक महीना और ठहरने की दुहाई मांगने लगा ।

"नही, अब मै एक दिन भी नही ठहरूंगा। इस शराबी को जूतों से पीटो। कर्ज़ चुकाने के लिए तो पैसा नही और बैलों की नई जोड़ी ख़रीदने के लिए पैसा आ गया। ! किसके कहने से तूने ऐसा किया ?" ज़मींदार ने गुस्से में भरकर कहा।

"ऐसा मत कहिये, सरकार, आप तो हमारे माई-बाप है। एक महीने की मोहलत और दे दीजिये। मै खुद आऊंगा और आपका रुपया ज़रूर दे जाऊंगा।"

"यह सब बेकार की बात है। मै अब एक मिनट भी नही ठहर सकता। बुध की पैठ में मै तुम्हारा बैल बेचने के लिए भेज दूंगा।"

"ऐसा मत करिये मालिक, मेरे बाल-बच्चे तबाह हो जायेंगे," करुप रोता हुआ बोला और अपने बैल के पास जाने लगा।

"बाहर निकाल दो, इसे। बैल मत जाने देना इसका। चोर कही का ! जा, रुपये लेकर आ, नही तो बुध को बैल बिकवाये बिना नही रहूंगा" गुस्से में भरे हुए ज़मीदार ने कहा।

करुप ने फिर खुशामद की--"मै बदमाश नही हूं सरकार ! आप मुझे थोडा-सा वक़्त और दे दे। आपका रुपया मारा नही जायगा।"

"नामुमकिन," ज़मीदार ने आख़िरी फैसला करते हुए कहा।

"मैं आपको ब्याज दूंगा, आप अपना रुपया ब्याज के साथ ले लीजिएगा," करुप बोला।

"कुत्ता कही का ! इसे जूते से पीटो। ब्याज ! ब्याज तो ज़रूर देगा तू ! कहांसे लायगा ब्याज ? जा, क़ादिर खां से रुपये उधार लेकर मेरा कर्जा चुका दे। अगर कल तक रुपये नहीं मिले तो मै बैल को औने-पौने बेच डालूंगा," ज़मीदार क्रोध से लाल-पीली आंखें दिखाता हुआ बोला और अन्दर चला गया।

"और कोई चारा ही नहीं है करुप," ज़मींदार के कारिन्दे ने कहा। "कादिर साहब के पास जा, वही तेरी मदद कर सकते है।"

३

करुप ने अपने बाप के पास जाकर ख़ुशामद की कि बड़े भाई से कहकर रुपया उधार दिलवा दो। बूढे के कहने से भाई मदद करने को तैयार हो गया, लेकिन उसकी औरत ने मना कर दिया। वह बोली—

"अगर तुमने रुपये उधार दिये तो फिर वापस नही मिलेंगे। उसे मुसलमान महाजन से ही लेने दो; हमें तो अपने ही खाने-पीने के लाले पड़े हुए हैं। इस साल बारिश अच्छी होगी, इसका क्या ठिकाना ? अगर फ़सल अच्छी नहीं हुई तो हम भूखो मर जायेंगे। उस आड़े वक्त हमारी कौन मदद करेगा ?"

लाचार हो करुप को कादिर खां की शरण लेनी पड़ी। वह किस्त पर रुपये उधार दिया करता था और उसे गांव के हर आदमी, यहां तक कि ज़मीदार की भी कच्ची-पक्की की खबर रहती थी।

"तुम्हें नही मालूम, भाई ! ज़मीदार ने मुझसे रुपये मांगे हैं," कादिर खां ने कहा।

"बड़े आदमियों की मुश्किलें तो किसी तरह दूर हो ही जाती हैं, लेकिन मेरा बैल बिक गया तो मै कही का न रहूंगा। अब तो सिर्फ़ आप ही मुझे उबार सकते है।"

"मैं क्या करूं ? मेरे पास जितना रुपया था सब मैंने ज़मीदार को देने का वादा कर लिया है।"

"अरे साहब, ऐसा न कहिए। मैं तो बरबाद हो जाऊंगा। आपको ग़रीबों की मदद करनी चाहिए। मुझसे ज़मींदार की बातें क्यों करते हैं ?"

"यह तो ठीक है कि ग़रीबों की मदद करनी चाहिए, लेकिन मैं तो पहले ही ज़बान दे चुका हूं।"

बहुत देर तक इसी तरह कहने-सुनने के बाद आखिर में क़ादिर खां राज़ी हो गया। पैंतालीस रुपये के लिए करुप को साठ रुपये के दस्तावेज़ पर दस्तखत करने पड़े। उसने पांच रुपये महीने की क़िस्त देकर एक

साल में सारा रुपया लौटा देने का वादा किया। सूद नहीं लिया गया लेकिन शर्त यह ठहरी कि अगर किसी महीने करुप क़िस्त नहीं अदा कर पायगा तो उसके लिए उसे एक रुपया जुरमाना देना पड़ेगा।

"करुपा, तेरी ईमानदारी और मेहनत पर यक़ीन करके ही मैं रुपये दे रहा हूं। देखना कोई क़िस्त चूकने न पाये। तू एक नेक आदमी है, शराब पीना छोड़ दे। तेरी स्त्री है, एक बच्चा है और ख़ुदा ने चाहा तो और भी बच्चे होंगे। अगर तू शराब पीता रहा तो बरबाद हो जायगा," क़ादिर ख़ां ने उसे समझाया।

कर्ज़ा चुकाकर करुप बैल अपने घर ले आया। बचा हुआ रुपया उसने पार्वती के हाथ पर रख दिया और कहा—

"सुन, मैं तेरे आगे कसम खाता हूं कि आज के बाद से शराब, ताड़ी या सुल्फ़ा छूऊंगा भी नहीं। मैं अपने पास रुपये नहीं रखना चाहता, तू इनका जो चाहे कर। मैं तो जो कमाया करूंगा लाकर तुझे पकड़ा दिया करूंगा।"

पार्वती ने समझा कि भगवान् ने मेरे अच्छे दिन लौटा दिये। वह बहुत ख़ुश हुई और उसके शरीर में एक नई शक्ति आ गई। वह अपना काम पहले से भी ज़्यादा उत्साह से करने लगी।

४

खेत पर अब कोई काम नहीं था और पार्वती से घर पर बिना काम से रहा नहीं जाता था। "मुझे किसी धंधे से लगना चाहिए," उसने सोचा, "जब मेरे पति पर कर्ज़ा है तो मैं बिना कुछ काम किये कैसे रह सकती हूं?"

क़ादिर ख़ां ने अपने पुराने मकान के पास एक नया मकान बनवाना शुरू किया। ईंट पाथनेवाले काम पर जुटे हुए थे। वहीं तीन-चार लड़कियां भी मज़दूरी पर काम करती थीं। पार्वती ने भी उनके साथ काम करना शुरू कर दिया।

वह अंधेरे-मुह उठती, मकान झाड़ती-बुहारती, भेंस और बकरी दुहती, मट्ठा बिलोती और फिर फ़ौरन मट्ठा बेचने गांव में चली जाती। गाहकों से कह-सुनकर वह जल्दी निबट लेती और वे भी उसे देर तक न रोकते, क्योकि उसका सबसे हेलमेल था। घर आकर वह लस्सी पीती, बच्चे को दूध पिलाती और उसे जिठानी के पास छोड़कर अपने काम पर चली जाती। दोपहर को उसे बस इतनी-भर छुट्टी मिलती कि किसी तरह दौड़ी-दौड़ी जाकर लस्सी पी ले, बच्चे को दूध पिला दे और फिर काम पर भाग जाय। ठेकेदार उसे सूरज छिपने के बाद छुट्टी देता, इसलिए जब वह घर लौटकर खाना बनाना शुरू करती तो अंधेरा हो जाता। सब कुछ वह खुशी-खुशी करती। काम बड़ी मेहनत का था और एक दिन में सिर्फ़ दो आने मजदूरी के मिलते थे; फिर भी मुसीबत के दिनों में यही बहुत था।

पार्वती को इस विश्वास से बड़ा ढाढ़स रहता कि मेरा पति अब शराब नहीं पियेगा और वह सुधर गया है। करुप ने एक-दो महीने तक अपना वचन निभाया भी, लेकिन फिर उसमें वे ही पुरानी आदतें पड गई और उसकी सारी कमाई ताड़ी की दूकान में जाने लगी। पार्वती के पल्ले एक पैसा भी नही पड़ता। करुप घर से लगातार दो-दो तीन-तीन दिन तक बाहर रहता और लौटता तो ढोरों के लिए थोड़ा-बहुत घास-दाना ले आता और बाकी आमदनी के लिए इधर-उधर की झूठी बातें बना देता। पार्वती सोचती कि भला थोड़े-से रुपयों के लिए वह झूठ क्या बोलेगा। लेकिन कुछ दिनों बाद करुप ने इसकी भी ज़रूरत नहीं समझी और हारकर पार्वती ने भी उससे पूछना बन्द कर दिया। फिर भी, पैसे कमाने के लिए वह दिन-रात घर पर और घर के बाहर भी काम करती रही।

करुप क़िस्त नही चुका पाया। एक दिन कादिर खां ने आकर रुपये का तकाज़ा किया और बहुत खरी-खोटी सुनाई। यों तो पार्वती को भी मिस्त्री से ऐसी कड़वी बातें सुनने की आदत पड़ गई थी लेकिन कादिर

खा की गन्दी बातें उससे सुनी न गई। भीतर जाकर उसने जोड़े हुए सारे पैसे बटोरे और कादिर खां के सामने लाकर पटक दिये। करुप के बार-बार छीनते-झपटने रहने पर भी वह कुछ न कुछ बचाती ही रहती थी।

उस दिन पार्वती की आंखों के आंसू सूखे नही। जी ठीक नही था, फिर भी अगले दिन वह रोज़ की तरह काम पर चली गई। कादिर खा की गंदी बातें उसके मन से नही उतरी। अब तक तो वह इस बात की परवा किये बिना ही कि मै औरत हूं वह मेहनत के साथ और खुशी-खुशी काम करती रही थी; लेकिन अब उसमें एकाएक परिवर्तन आ गया। उसे अपने साथ काम करनेवाले मर्दों की बातचीत से डर लगने लगा। जैसे-जैसे उसका यह डर बढता गया वैसे-वैसे लफगों की बदमाशिया भी बढती गई। कादिर खां का लडका काम की देखभाल करता था। अब उसकी आंखों और बातों में पाप झलकने लगा।

जब से पार्वती ने मज़दूरी का काम शुरू किया था वह ठीक तरह से अपने बच्चे की देखभाल नही कर पा रही थी। नतीजा यह निकला कि बच्चा कमज़ोर हो गया और एक दिन उसे ज्वर चढ आया। बीमारी के लिए गांवों में न डाक्टर होते हैं न दवाएं। दो-एक बार बच्चे को गरम लोहा छुआने का टोटका किया गया, लेकिन उससे कोई लाभ नही हुआ; एक हफ़्ते बीमार रहकर उसने सदा के लिए आंखें मीच लीं।

करुप औरतो की तरह रोने लगा। उसके पिता ने उसे समझाते हुए कहा—"बेटा, भगवान् ने दिया था उसीने ले लिया।"

"लेकिन चाचा, भगवान् मेरी ऐसी परीक्षा क्यों ले रहा है? मैने तो कभी किसीको नही सताया," पार्वती ने रोकर ससुर से कहा।

"पगली, रोती क्यों है? अभी तू बूढी थोड़े ही हुई है! अभी तो तेरे सात-आठ बच्चे हो सकते है। खेत में डाले हुए सारे बीज थोड़े ही फलते है और फिर भी हम उनके लिए रोते नही।"

"अब मुझे बाल-बच्चे नहीं चाहिए," पार्वती बोली, "मैंने इस दुनिया में काफ़ी सुख-दुःख देख लिया है; अब तो बस यही चाहती हूं कि भगवान् मुझे उठा ले।"

इस पर बूढ़े ने हंसकर कहा—"अपने आदमी को समझा कि वह जो थोड़ा-बहुत कमाता है उसे ताड़ी में न फूंके। फिर तो तुम जल्दी इस दुःख को भूल जाओगे और तुम्हारे और बच्चे होंगे और तुम सुख के साथ जीवन बिताओगे।"

तब करुप ने प्रतिज्ञा की—"मैं अपनी जान की कसम खाकर कहता हूं कि इस ज़हर को अब छूऊंगा भी नहीं। अगर मैं इसे फिर छूऊं तो गोली से उड़ा देना।"

५

पार्वती की मुसीबतें यहीं खतम नहीं हुईं। उसके खोटे दिन चलते रहे। अगले ही बुध को जब करुप रामपुर की ताड़ी की दूकान के पास से गुज़रा तो अपनी कसम-वसम सब भूल बैठा। वह अपनी गाड़ी पर कुछ बोरे लादकर तिरुपुर ले गया था। वहां से दूसरे गाड़ीवानों के साथ लौटते हुए वह ताड़ी की दूकान के सामने ठहर गया और चिल्लाकर बोला—"अरे, ताड़ी पीने के लिए कौन उतर रहा है? मुझे तो पीनी नहीं है। मैं तो इस कम्बख्त चीज़ के पास भी नहीं जाऊंगा।"

"अगर तू नहीं पीना चाहता तो अपना रुपया सेंतकर रख; गला क्यों फाड़ता है?" दूसरे गाड़ीवान ने जवाब दिया और वह गाड़ी से कूदकर ताड़ीखाने में घुस गया। थोड़ी देर बाद करुप भी उसके पीछे-पीछे पहुंचा। उसने अपने मन में कहा—"आज और सही। आज के बाद फिर कभी नहीं पियूंगा।"

दूसरे बुध को भी ऐसा ही हुआ। उसने अपने साथी से कहा—"जब हमारे पास पैसा है तो क्यों न बेफ़िक्री से मौज उड़ायें?"

"ऐसी की तैसी पैसे की," उसके साथी ने कहा, "न यह हमारे साथ आया है न मरने के बाद हमारे साथ जायगा। अपने गाढ़े पसीने की कमाई को हम जैसे चाहे खर्च करें। हमें रोकनेवाला कौन है ?"

इस पर एक और पियक्कड़, जो इनकी बातें सुन रहा था, फ़िलासफ़ी झाड़ता हुआ बोला—"तुम ठीक कहते हो यार ! यह दुनिया दो दिन की है और यहां सब धोखा ही धोखा है। पता नहीं जो आज है वह कल रहे या न रहे। कौन जीता है यहां हज़ार साल तक ? जब आंखें बन्द हो जायेंगी तो यह रुपया किसके काम आयगा ? मेरे न तुम्हारे।"

"किसीके नहीं, न मेरे न तुम्हारे। यह तो उस आदमी का है जो ताड़ी-खाने में बैठता है," चौथे ने कहा और सब खिल्ली मारकर हंस पड़े।

"तुम सब गधे हो ? कैसी शास्त्रियों-जैसी बातें करते हो ? देखो तो यह चीज हलक से नीचे उतरते ही कैसी गरमी भर देती है," दूसरे ने कहा।

"इन बनियों को ठोकर मारनी चाहिए। बदमाश हमें लूट रहे हैं। इन्होंने गाड़ियों का भाड़ा कम कर दिया है," करुप बोला।

अंधेरा होने तक वे इसी तरह की बातें करते रहे और फिर अपनी-अपनी गाड़ियों में बैठकर चलते बने।

कादिर खां को दूसरी किस्त देने की तारीख बिलकुल पास आ गई। पार्वती ने करुप से कहा कि उसके तकाजा करने से पहले ही रुपये दे आओ। इस पर करुप बोला—"मरने दो कमबख्त को। अगर उसने अबके आकर बक-बक की तो मैं उसकी खोपड़ी तोड़ दूंगा।"

शायद दूसरे कामों में लगे रहने की वजह से क़ादिर खां बहुत दिनों तक नहीं आया और करुप भी उस बात को भूल गया।

एक दिन कादिर खां का बेटा इस्माइल आया, लेकिन रुपये मांगने की बजाय उसने करुप से पूछा—"मिर्चों की कुछ बोरियां रामपुर पहुंचा दोगे ?"

"मुझे कुमार कौड का भूसा ले जाना है। एक हफ्ते पहिले से ही उसने मुझसे कह रखा है," करुप बोला।

"यह नही हो सकता । कुमार कौंड के भूसे की ऐसी जल्दी नही, लेकिन अगर हम आज बोरिया न भेज सके तो एक अच्छा सौदा हाथ से निकल जायगा," इस्माइल ने कहा ।

आखिरकार करुप राजी हो गया । जब इस्माइल ने अपने रुपयो का तकाज़ा न करने की कृपा की थी तो वह ही कैसे मना कर सकता था ।

उसी शाम को, जब पार्वती अपने घर में अकेली खाना बना रही थी, इस्माइल खां आया । बाहर ही रुककर उसने पूछा—"करुप अभी लौटा या नही ?"

"अभी नही," पार्वती ने जवाब दिया ।

"ठीक है, वह इतनी जल्दी कैसे आ सकता है, रास्ते मे ताडीखाना जो है," यह कहता हुआ इस्माइल खा अन्दर चला आया ।

"हा, ये ताड़ीखाने इसलिए चलते है कि ग़रीब आदमी बरबाद हो जायं और नरक का दुःख भोगे," पार्वती ने जवाब दिया ।

पार्वती से बिना पूछे ही इस्माइल बैठ गया । पार्वती ने सोचा कि यह करुप के आने की इन्तज़ार कर रहा है, इसलिए उसने कुछ चिन्ता नहीं की और अपने काम में लगी रही ।

इस्माइल कहता रहा—"क्या तुम अपने आदमी की आदतो से तग नही आ गई हो ?"

"यह कैसे हो सकता है, साहब ! अच्छे हो या बुरे, हमें तो अपने आदमियों के साथ निभाव करना ही पडता है," मुंह फेरे-फेरे पार्वती ने कहा ।

"ठीक है, वह तुम्हारा व्याहता है, तुम उसे छोड़ कैसे सकती हो ?" इस्माइल ने कहा ।

कुछ देर बाद उसने दया दिखाते हुए फिर कहा—"यह कैसी बद-नसीबी की बात है कि तुम-जैसी खूबसूरत औरत का एक शराबी से पाला पड़ा है ।"

पार्वती ने कोई उत्तर नही दिया। थोडी देर बाद करुप की इन्तज़ार किये बिना ही इस्माइल चला गया।

दूसरे दिन इस्माइल ने फिर किसी काम के बहाने करुप को बाहर भेज दिया और शाम को वह पार्वती के घर आया। अपने साथ वह थोड़ा-सा खजूर का गुड़ लेता आया और पार्वती को जबरदस्ती देकर बोला कि यह मूप से एक आसामी ने ऐसे ही भेट भेज दी थी।

"तुम्हें देखकर मुझे इतनी खुशी होती है कि क्या बताऊं!" इस्माइल बोला।

पार्वती ने मन-ही-मन मे सोचा कि पता नहीं इन सब बातो का क्या मतलब है और वह डर गई।

"जब मै तुम्हारे पास आता हू तो तुम डर क्यो जाती हो?" इस्माइल ने कहा। "क्या तुम सोचती हो कि मै तुमसे रुपयों का तक़ाज़ा करूंगा? मुझे रुपयों की परवा नही है। बस तुम मुझसे हंस-बोल लिया करो।"

बहुत दिनो तक पार्वती ने अपने को पतन के गड्ढे मे गिरने से बचाया, लेकिन जब-जब वह करुप को ताडी पिये देखती तब-तब उसकी दृढता कम होती जाती और एक दिन उसमे दुर्बलता आ ही गई।

६

कीरमबूर के ताड़ीखाने के बाहर, दीवाल मे बनी हुई छोटी खिड़की के पास, जहांसे ताड़ी मिलती थी, बहुत-से चमारों, कोलियों और दूसरे अछूतों का जमघट लगा हुआ था और वे ऊटपटांग शोर मचा रहे थे। अन्दर भी थूक, धूल और गंदगी के मारे नरक-सा दिखाई देता था। मक्खियां भिनक रही थीं और ताड़ी की बदबू से नाक सड़ी जा रही थी। चारों ओर पियक्कड़ों की टोली की टोली बैठी हुई ऊधम मचा रही थी।

"अगर तूने फिर ऐसी बात मुह से निकाली तो दांत तोड़ डालूंगा," करुप ने कहा।

"दांत तोड डालेगा ! और तू ! तू जो अपनी औरत तक को सीधा नही रख सकता ! खूब, जरा इस दात तोड़नेवाले की सूरत तो देखो," पलनि ने जवाब दिया ।

इस पर करुप ने ताड़ी का कुल्हड उठाकर तड़ाक से पलनि के मुह पर दे मारा। पलनि की नाक मे खून का फव्वारा छूट पड़ा ।

एक ने चिल्लाकर कहा—"उल्लुओ, क्यो ताड़ी का नाश कर रहे हो । अरे, कही धोखेबाज औरतो के लिए ऐसी अच्छी चीज़ बरबाद की जाती है ! तिरिया का क्या विश्वास, वे तो सबकी सब बेवफा होती है ।"

पलनि की नाक मे खून बहता रहा । "अरे पलनि मर गया" एक ने कहा और उसके पास जाकर उसके मुह पर से खून पोछा । पलनि के ज्यादा चोट नही लगी थी। उसने गुस्से में खड़े होकर एक ईंट करुप पर तानकर फेंकी । करुप कतराकर अपने को बचा गया ।

दूकानवाले ने चिल्लाकर कहा—"दूकान के अन्दर लड़ाई मत करो ।"

करुप बाहर भागा । पलनि भी उसके पीछे दौड़ा, लेकिन चौखट पर ठोकर खाकर गिर पडा । करुप गाड़ी मे जा बैठा और बैलो को हांककर जोर-जोर से चिल्लाता और गालियां देता हुआ चला गया ।

आज करुप घर पर रोज से जल्दी पहुच गया । दरवाजा अन्दर से बन्द था ।

करुप ने चिल्लाकर आवाज दी—"अरी दरवाजा बन्द करके अन्दर क्या कर रही है ? मैं बाहर इन्तजार में कब तक खड़ा रहूं ? दरवाज़ा खोल और बैलो को पानी पिला ।"

अन्दर किसीके चलने की आहट सुनाई दी, लेकिन दरवाज़ा नही खुला। करुप आवाजें देता रहा । कुछ देर बाद पार्वती बाहर आई और करुप के सामने खड़ी होकर बोली—"मेरे साथ आकर ज़रा भैंस को तो देखो। इसे न जाने क्या हो गया है, लातें मारती है और धार नहीं निकालने देती ।"

"भैस जाय भाड़ में। मुझे प्यास लगी है; थोड़ा पानी ला," यह कहता हुआ करुप अन्दर चला गया।

इस्माइल भीतर था। करुप को आते देख वह दीवाल के सहारे सहारे भाग निकलने की कोशिश करने लगा, लेकिन करुप की दृष्टि से बच न सका।

"बदमाश कहीं की"! करुप दहाड़ा और पास पड़ी हुई कुदाली उठाकर उसने पार्वती पर फेंकी।

फिर उसने दरांती उठाई और भागते हुए इस्माइल पर पूरी ताकत से तानकर मारी। इस्माइल घायल होकर गिर पड़ा और उसके सिर से खून की धारा बह निकली। इसके बाद करुप पार्वती की ओर झपटा, लेकिन वह भागकर जेठ के घर चली गई। थोडी दूर तक करुप ने उसका पीछा किया, लेकिन पड़ोसियों को अपनी ओर आते देख वापस चला गया। उसी वक्त उसने देखा कि इस्माइल फिर उठ-कर भागने की चेष्टा कर रहा है। वह उसकी ओर पागल की तरह लपका और बोला--"आज तुझे जान से मारकर ही रहूंगा।" लेकिन उस समय तक बहुत-से आदमी इकट्ठे हो गये थे, उन्होंने उसे पकड़कर उसके हाथ से दरांती छीन ली।

७

करुप और पार्वती रामपुर की पुलिस चौकी पर अलग-अलग कोठ-रियों में बन्द कर दिये गये।

बहुत-से सिपाही पार्वती के सींखचो के सामने घूम रहे थे और उसे देख-देखकर मुसकरा रहे थे। वे इस बात की ताक में थे कि किसी तरह पार्वती से बात करने का मौका मिले। लेकिन वह रंज में डूबी हुई थी। उसकी आत्मा को बड़ा कष्ट हो रहा था और उसकी दशा उस जानवर-जैसी हो रही थी जो जंगल की आजादी में पला हो और पकड़कर पहली बार कटघरे में बन्द किया गया हो।

"सारी बातें सच-सच बता देगा तभी हम तुझे छुड़ाने की तरकीब सोच सकेंगे," दारोग़ा ने करुप से कहा ।

"छिपाने की क्या बात है ? मुझे तो कुछ ख़बर ही नहीं । कन्‍नमाडूर से मैं शुक्रवार को लौटा," करुप ने जवाब दिया ।

"इस तरह की गड़बड़ बातों में कोई फ़ायदा नहीं, तेरी औरत ने सब कुछ बता दिया है ।"

"अच्छा ! चुड़ैल ने सब कुछ कह दिया ? उस कमबख्त की वजह से मैं बरबाद हो गया ।"

"हां ठीक है, औरत ही सारी मुसीबत की जड़ होती है । अच्छा, अब सारा किस्सा बयान कर डालो ।"

"अब मुझे क्या बताना रह गया; अभी तो आप कह रहे थे कि मेरी औरत ने सब भेद खोल दिया है ।"

"यह तो ठीक है, लेकिन हमें तो तुमसे कबूलवाना है । अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो सात साल की सख्त सज़ा भुगतनी पड़ेगी; समझे ?"

"भुगतने दो सात साल की सज़ा । मैं कुछ नहीं बताऊंगा ।"

"नरमी से पूछने पर यह गंवार कभी ठीक-ठीक नहीं बतायगा । इसमे तो जबरदस्ती कबूलवाना पड़ेगा," पास खड़े हुए एक सिपाही ने कहा । फिर उसने कुछ ऐसी बातें करने को कहीं जो यहां लिखी नहीं जा सकती ।

"हा, हां, इसकी अच्छी तरह से देखभाल करो," दारोग़ा ने 'देखभाल' शब्द पर एक विशेष ढंग से ज़ोर देते हुए कहा ।

पार्वती से भी पूछताछ हुई ।

"देख औरत, तू बेकसूर मालूम होती है । अगर तू सच-सच बता देगी तो बच जायगी । क्या जुम्मे की शाम को कादिर खां अपने बेटे इस्माइल के साथ तेरे घर गया था ?" जमादार ने पूछा ।

"बाप और बेटा दोनों ? नहीं," पार्वती ने कहा ।

"हूं ! तो इस्माइल अकेला गया था !" जमादार ने कहा और पास खड़े हुए सिपाहियों की तरफ़ आंख मारी ।

"सरकार मुझसे ऐसी बातें न करें। मेरे घर मुसलमान का क्या काम ? एक औरत से ऐसे गंदे सवाल आप कैसे पूछ सकते हैं ? मुझे घर भेज दीजिये, वहां मेरे सास-ससुर हैं। अगर आप उनसे पूछेंगे तो वे सब बता देंगे।"

"ओः, तो तू घर जाना चाहती है ! ऐसी जल्दी क्या है ! देख अगर तू सच बोलेगी तब तो घर जा सकेगी नहीं तो तुझे यहीं रहना पड़ेगा।"

"ओ मेरे भगवान !" पार्वती रोकर बोली।

"सीधे-सीधे पूछने से यह कुछ नहीं बतायगी। बड़ी चालाक औरत है। इस कुतिया ने न जाने कितने नौजवानों को बरबाद किया है, जमादार बोला।

"क्या आपके लड़कियां नहीं हैं ? एक बेगुनाह और ग़रीब औरत पर तरस खाइये और मुझे अपनी बहन समझिये," पार्वती ने गिड़गिड़ाकर कहा।

"अरे लाना तो गरम लोहा ज़रा," जमादार चिल्लाकर बोला।

"हुज़ूर, मेरे आदमी से पूछ लें; वह सब बातें बता देगा। बेकार एक मासूम औरत को क्यों सताते हैं ?"

"तो क्या तू सोचती है कि हमने तेरे आदमी से नहीं पूछा ? हम उससे पूछ चुके हैं, उसने सब कुछ बता दिया है," दारोगा ने कहा।

"क्या सचमुच उसने सब कुछ कह दिया है," पार्वती ने दुःखी होकर पूछा।

"हां, हां, सब कुछ बता दिया है। वह कहता है कि सब कुछ तेरी ही बदमाशी की वजह से हुआ है।"

"ओ मेरे राम !" पार्वती हाथ मल-मलकर रोने लगी और पछाड़ खाकर गिर पड़ी।

"देख औरत, रोने-धोने से काम नहीं चलेगा। इन बातों से तू हमें धोखा नहीं दे सकती। तू बनना तो खूब जानती है ! सच बता, कितनों को तबाह कर चुकी है तू ?"

"ऐसी बाते मत करिये, सरकार ! आप सब तो मेरे भाई के बराबर है। उस आदमी ने मुझसे अपना रुपया मागा था ।"

"अच्छा तो अब आई ठीक रास्ते पर," जमादार ने कहा ।

"मैने आपसे कहा न था, दारोग़ा साहब ?" वह दारोग़ा की ओर मुड़ता हुआ बोला और फिर पार्वती की तरफ देखकर कहने लगा—"ऐ औरत, इधर सुन; अगर तू सच बता देगी तो हम वादा करते है कि तुझे छोड़ देगे और तेरा आदमी भी थोड़ी-सी सजा पाकर छूट जायगा । हम औरत जात को जेल भेजना नही चाहते ।"

"हज़ूर मुझे आज रात घर जाने दीजिये, फिर मै सब कुछ बता दूगी," पार्वती ने कहा ।

"अच्छी बात है, इसे घर जाने दो, ऐसा मालूम होता है कि यह सच्ची बाते बताने को तैयार है," दारोग़ा ने कहा ।

"अगर यह घर चली गई तो फिर सच बात कभी नहीं बतायगी," जमादार ने दारोग़ा को सावधान करते हुए कहा ।

इस पर दारोगा ने सिपाही के कान में कहा—"हमने इसे गिरफ्तार नही किया है, सारी रात हवालात में कैसे रख सकते है ?"

"बहुत अच्छा, तो हम इसे पहरे में घर भेज देते है और कल फिर पहरे में ही बुला लेगे," सिपाही बोला ।

८

करुप के बाप ने अपने बड़े बेटे से एक वकील करने को कहा। खर्च के लिए उन्होंने करुप की गाड़ी बेच दी और उन रुपयों के निबट जाने पर दूसरे गांव मे किसी सम्बधी के पास उसकी भैस गिरवी रखकर कुछ और रुपया उधार ले लिया । पार्वती को उन्होने जी भरकर कोसा । उनकी समझ में वही सब मुसीबतो की जड़ थी ।

करुप के वकील ने मजिस्ट्रेट के सामने गवाही पेशकर यह साबित करने की कोशिश की कि दुर्घटना के समय करुप करुमांडूर में था ।

उसने पूरे तीन घंटे तक जिरह की जिसे सुनकर करुप के भाई-बाप को बड़ी खुशी हुई।

कादिर खा ने भी हलफ उठाकर गवाही दी। उसने बयान में कहा—"मैं अपने बेटे के साथ करुप के घर रुपये का तक़ाजा करने गया था, वहा करुप ने मुझे गालियां दी और जब हमने अपने रुपयो के लिए ज़्यादा जोर दिया तो करुप ने हंसिया निकालकर मुझपर हमला किया, लेकिन मेरा लड़का इस्माइल बीच मे आ गया और चोट उसको लगी। तकदीर से उसकी खोपड़ी बच गई और सिर्फ दाहिना कान ही कटकर रह गया, नही तो वह वही ढेर हो जाता।"

पार्वती की भी गवाही ली गई। वकील के सिखाने के मुताबिक उसने हर बात से इंकार कर दिया और कहा कि मैंने जो बयान पुलिस के सामने दिया था वह मुझसे जबरदस्ती दिलवाया गया था।

मजिस्ट्रेट ने मुकदमा सेशन के सिपुर्द कर दिया।

अब करुप के बैल भी बेच डाले गये और सेशन की अदालत के लिए नया वकील किया गया। मुकदमा खतम होने तक के लिए पार्वती भाई के पास रहने पीहर चली गई।

पार्वती का भाई बहुत ही गरीब था। खाने-पीने तक का गुज़ारा मुश्किल से होता था। उसकी स्त्री नल्लायी पार्वती को अपने साथ आकर रहते देख जल-भुनकर राख हो गई। एक दिन जब पार्वती दरवाज़े के पास खड़ी हुई अपने भाई से रो-रोकर बातें कर रही थी, नल्लायी बाहर आई और चिल्लाकर बोली—"हम ग़ैरे-गैरे को अपने घर मे नही ठहरा सकते; यहां तो अपनी ही रोटी के लाले पड़ रहे हैं।"

फिर बाहर से दरवाजा बन्द कर वह खेत पर चली गई।

"पार्वती, गाय के छप्पर में से गोबर इकट्ठा कर ले और खेत पर ले जा," उसके भाई ने कहा। पार्वती मुफ़्त रोटियां नहीं तोड़ती थी। दिन-रात कड़ी मेहनत कर वह घर के काम में भावज का हाथ बंटाने की कोशिश करती थी, फिर भी भावज का हृदय नहीं पसीजता था।

वह सदा पार्वती का अपमान करती रहती थी और बेचारी पार्वती मब कुछ सब्र के साथ सह लेती थी।

एक दिन सुबह ही सुबह एक सिपाही आया। सेशन की कचहरी मे करुप का मुकदमा पेश होनेवाला था इसलिए उसने पार्वती से गवाही देने चलने के लिए कहा। पार्वती भावज के ताने-तिशनो से इतनी दुःखी हो गई थी कि इस सम्मन तक से उसे कुछ तसल्ली हुई। सिपाही लम्बे कद का बड़ी-बड़ी मूछों वाला एक बूढा मुसलमान था। देखने में वह बड़ा भयानक लगता था, लेकिन उसकी बातों मे बाप की-सी ममता थी।

वे ईरोड की तरफ़, जहा उन्हें ट्रेन पकड़नी थी, पैदल जा रहे थे। सिपाही ने पार्वती से कहा—"बहिन, सारी बाते सच-सच बता देना, मुमकिन है कि इससे साहब को तुमपर रहम आजाय और वह तुम्हारे आदमी को रिहा कर दें।"

"मै सच बात कैसे बता सकती हू, सिपाहीजी ? बड़ी वेइज़्जती होगी।"

"बेइज़्जती की क्या बात है ? आदमी से तो भूल-चूक होती ही रहती है। ऐसा तो शायद ही कोई हो जिसने एक दफा भी इस तरह धोखा न खाया हो। खुदा हम सब पर निगाह रखता है, फिर भी वह कभी-कभी हमे गुनाह करने ही देता है। यह सब उसीकी मर्जी से होता है।"

"तो तुम्हारी राय है कि मुझे सब कुछ बता देना चाहिए ? मै बिरादरी से निकाल दी जाऊगी और मेरा आदमी मुझे अपने घर में नही घुसने देगा। तब मै क्या करूंगी ?"

"अगर तुम सच बोल दोगी तो तुम्हारा आदमी छः महीने की ही सज़ा पाकर छूट जायगा; नही तो छः साल के लिए जायगा। बिलकुल इसी तरह का मुकदमा पहले हो चुका है। अगर इस वक़्त तुम अपने आदमी की मदद करोगी तो वह तुम्हारा एहसान मानेगा और मंदिर मे कुछ भेंट-पूजा चढ़ाकर तुम्हें फिर जाति में मिला लेगा। चाहे जो कुछ हो, सच बोलना हमेशा अच्छा होता है।"

पार्वती चुप हो गई। आत्मा ने कहा कि सच बोल देना चाहिए; लेकिन दूसरे ही क्षण उसके मस्तिष्क में कुछ और विचार उठे जिन्होंने इस सद्भावना को दबा दिया। भय और घबराहट से उसका दिमाग चकराने लगा और वह मन-ही-मन में भगवान् को याद करने लगी।

ईरोड पहुंचकर सिपाही ने उसे रेल के डिब्बे में बैठा दिया। पार्वती के लिए रेल में सफर करने का यह पहला अवसर था। स्टेशन की भीड और ट्रेन की रफ़्तार से वह डर-सी गई। धीरे-धीरे सब बातें उसके विचारों की उलझन में मिल गईं और उसे हर चीज घूमती-सी दिखाई देने लगी।

ट्रेन तेज़ी से चल रही थी। एकाएक एक मुसकराता हुआ छोकरा न मालूम कहांसे आ खड़ा हुआ और गाने लगा। उसकी दोनों आंखें अन्धी थीं। चिथड़ा पहने हुए एक दूसरा लडका भी उसके साथ ही खड़ा होकर गाने लगा।

"बदमाशो, कहां छिपे हुए थे अब तक?" सिपाही बोला। छोकरे बिना उत्तर दिये मुसकराते और गाते रहे। वे बड़े प्रेम से गा रहे थे और उनके गाने में भावों की एक ऐसी सुकुमारता थी जो बड़े-बडे संगीत-विद्यालयों में नहीं बल्कि गलियों में सीखी जाती है। गाना ख़तम हो जाने पर अन्धे लड़के ने अपना हाथ फैलाया और दूसरे ने उसे पकड़कर गाड़ी में चारों तरफ घुमाया। सब लोगों ने उन्हें कुछ न कुछ दिया। पार्वती ने भी अपनी धोती के छोर से एक पैसा खोलकर उसे दे दिया। सारे दिन वह गीत उसके कानों में गूंजता रहा। उसके गूढ़ अर्थ को वह समझ तो न सकी लेकिन कुछ कड़ियां और छोकरे की वेदना भरी आवाज उसे बार-बार याद आती रही।

गाने का अर्थ था—"मां और सगे सम्बन्धियों से छिपकर मैंने क्या-क्या पाप नहीं किये? क्या मैंने मारकर खाया नहीं और खाकर मारा नहीं? फिर भी क्या मैं इच्छा को रोकना सीख सकी? वह इच्छा, जो दिन-पर-दिन अधिकाधिक उस वस्तु को चाहती है जिसके लिए

कभी इच्छा की ही नही जानी चाहिए। क्या जाति और धर्म का विरोध करके मेरे जन मुझे स्वीकार करेंगे ? क्या धर्मवाले मुझे अंगीकार करेंगे ?—मुझे, जिसने ओ मेरी बहिन, निर्लज्जता के साथ धूर्ततापूर्ण जीवन बिताया है !"

६

सेलम पहुंचकर सिपाही पार्वती को एक गरीबों के ढाबे में ले गया और ढाबेवाली से पार्वती को 'आधी खूराक' देने के लिए कहा। 'आधी खूराक' ढाबों का एक विशेष शब्द होता है।

ढाबेवाली ने पार्वती से सेलम आने का कारण पूछा और जब पार्वती ने यह बताया कि मैं एक सेशन के मुकदमे में गवाही देने आई हूं, तो उसके चारों तरफ भीड़ इकट्ठी हो गई। वे सब आदमी लंका में चाय के बगीचों मे काम करने के लिए ले जाये जा रहे थे।

उस दिन अदालत में खून का एक पुराना मुकदमा चल रहा था, इसलिए करुप का मुकदमा पेश नहीं हुआ। दूसरे दिन जब मुकदमे की सुनवाई हुई तो पार्वती गवाही देने के लिए नहीं बुलाई गई। सरकारी वकील ने कहा कि मुझे उसकी आवश्यकता नही है।

लेकिन करुप के वकील ने कहा कि मैं उससे मुजरिम के बारे में गवाही दिलवाना चाहता हूं, इसलिए उसे रोक लिया जाय। शाम को करुप का बड़ा भाई पार्वती को अपने वकील के पास ले गया। वकील ने भी उससे सब बातें सच-सच कह देने के लिए कहा, जैसा कि रास्ते में सिपाही ने कहा था।

पार्वती अपने पति को बचाना तो अवश्य चाहती थी लेकिन अपने अपराध को स्वीकार करने के विचार से कांप उठती थी।

अन्त में उसने कहा—"भगवान् जैसा कहलायगा वैसा कहूंगी।"

"कमबख्त, तू भी भगवान् का नाम ले सकती है ? मारो इसे पुरानी जूतियों से," करुप के बड़े भाई ने डपटकर कहा।

इस पर पार्वती डर के मारे काप उठी और बोली—"अच्छा तो जैसा तुम कहोगे वैसा ही करूंगी। एक औरत कर ही क्या सकती है ?

वकील यही चाहता था। उसने सबको चले जाने के लिए कहा और थोडी देर तक करुप के भाई से अकेले में बातचीत की।

दूसरे दिन पार्वती बहुत काफ़ी देर तक और आदमियो के साथ अदालत के सामने एक वृक्ष के नीचे प्रतीक्षा करती रही। एकाएक किसी ने ज़ोर से उसका नाम लेकर पुकारा। पार्वती चौक पड़ी। तभी एक चपरासी ने आकर हाकिमाना ढग से कहा "इधर आओ," और वह उसे गवाहों के कटघरे में ले गया। वहां उसने जो कुछ भी देखा उससे उसका माथा चकरा गया। कमरे के पच्छिमी कोने मे उसका पति सीखचों के पीछे एक जगली जानवर की तरह खडा हुआ उसकी ओर घूर रहा था। उसके सिर के बाल और दाढी-मूछ बहुत बढ रही थी और वह इतना डरावना दिखाई पड़ता था कि पार्वती उसे पहचान भी मुश्किल से पाई। जब एक गरीब किसान कैदखाने मे बन्द कर दिया जाता है और दो-तीन महीने तक उसे नहाने-धोने और हजामत बनाने नही दिया जाता तो कुछ ही दिनों में वह हत्यारा-सा दिखाई देने लगता है।

"हाय, इस मुसीबत की जड मै ही हूं," पार्वती ने मन-ही-मन मे कहा और उसे भयंकर मानसिक पीडा हुई। अपने सामने के सीखचो को पकड़कर वह बड़ी चेष्टा के साथ सीधी खड़ी रह सकी और जब पेशकार ने चिल्लाकर हलफ उठाने को कहा तो उसके सिर मे चक्कर आ गया।

"मै भगवान् को साक्षी देकर कहती हू कि मै सच कह रही हूं। उस शाम को जब मै खाना बना रही थी . . . . . ."

जज ने सरकारी वकील की तरफ़ देखा और कहा—"मालूम होता है कि इसने सारी बातें अच्छी तरह रट रखी है।" पैरवी के गवाहो के साथ ये हमेशा ऐसा ही व्यवहार करते है।

"कोई बात नही, अभी सब कुछ भूल जायगी," जज ने फिर कहा।

जज के इस व्यंग्य पर इजलास में बैठे हुए लोगों ने खूब कहकहा लगाया। सरकारी वकील की हंसी सबसे तेज थी। दूसरे वकीलों ने भी ज़रा देर बाद उसका साथ दिया। करुप का वकील भी धीरे से मुसकराया।

"जो मैं कहूं उसे दुहराती चलो," पेशकार ने कठोरता के साथ कहा। इससे पार्वती की घबराहट और भी बढ़ गई। उसने सोचा—"तो क्या जो बात वकील और जेठजी ने सिखाई थी वह अब किसी काम नहीं आयेगी? क्या अब वही कहना पड़ेगा जो पेशकार कहेगा?"

हलफ उठाने के बाद जिरह शुरू हुई। कभी-कभी तो पार्वती अपने से पूछे गये सवाल समझ भी नहीं पाती थी। "जब मैं खाना बना रही थी तो इस्माइल आया और मुझसे अनुचित प्रस्ताव करने लगा। मैं मना कर ही रही थी कि अचानक मेरा आदमी आ गया और उसने मुझ पर कुदाली फेंककर मारी। मैं डरकर बाहर भाग गई और फिर क्या हुआ इसकी मुझे बिलकुल याद नहीं, सिवा इसके कि मैंने इस्माइल के सिर से खून की धारा बहते देखी।" यह थी वह कहानी जो वकील ने पार्वती को बयान में बताने के लिए सिखाई थी।

"चुड़ैल," करुप अपने कटघरे में-से चिल्लाया। उसे अभी तक यही उम्मीद थी कि उसके आदमी गवाही दिलाकर यह सिद्ध करा देंगे कि अपराध के समय वह करुमाडूर में था। उसके वकील ने उसके पास जाकर कान में कुछ कहा जिससे उसे कुछ ढाढस-सा बंधा। जिरह के खतम हो जाने पर असेसरों ने राय दी कि गवाही से यह साबित नहीं हो सका कि मुजरिम का इरादा खून करने का था; उसने अधिक उत्तेजित किये जाने के कारण ही इस्माइल को गहरी चोट पहुंचाई थी।

जज ने कार्रवाई अगले दिन के लिए मुलतवी कर दी। दूसरे दिन फैसला सुना दिया गया। जज ने असेसरों की राय ठीक नहीं समझी और कहा कि मुजरिम का खून करने का इरादा साबित हो गया है। उसने कादिर खां और इस्माइल के इस बयान को सच मान लिया कि हम दोनों करुप के यहां अपना रुपया मांगने गये थे, जबकि मुजरिम

। शराब के नशे में हम पर घातक हथियार से हमला किया लेकिन हम भाग्यवश बच गये और बाद में गली में भीड इकट्ठी हो जाने से हमारी जान बच गई । जज ने यह भी कहा कि करुप की औरत का बयान विश्वसनीय नही है क्योकि एक तो वह स्वभावत: अपने पति को बचाना चाहती है और दूसरे उसके पुलिस और मजिस्ट्रेट के सामने दिये हुए बयान एक-दूसरे से नही मिलते। इसलिए उसने करुप को छ: साल सख्त कैद की सजा दी और सरकारी वकील से यह भी कहा कि आप पार्वती पर झूठी गवाही देने के लिए मुकदमा चलाने का बन्दोबस्त करे ।

करुप फैसला सुनकर चिल्ला उठा—"इस चडालिन ने मुझे धोखा दिया है। आप ही बताइये सरकार कि जब अपनी औरत ही धोखा दे जाय तो कोई कैसे चुप बैठ सकता है ।"

"ले जाओ इसको," जज ने कहा और सिपाही उसे लेकर चल दिये। उन्होंने उसे ढाढस बधाने के लिए कहा—"तुम जो कुछ कहना चाहते हो लिखकर हाईकोर्ट मे अपील करो ।"

१०

मुकदमा खतम हो गया। पार्वती के किसी भी रिश्तेदार ने उसकी खोज-खबर नही ली । बडी कठिनाई से बेचारी रामपुर तक पहुची। वही पुराना सिपाही जो उसे सेलम लाया था उसे वापस भी ले गया ।

"तुम्हें शुरू से ही सच बोलना चाहिए था," सिपाही ने कहा। "चूकि तुम पहली अदालत में सच नही बोली थी, इसलिए जज ने तुम्हारी बात का यकीन नही किया। सारी सच्ची बात तो तुमने यहां भी नही कही।"

ये शब्द पार्वती के कानों में पड़े अवश्य लेकिन जैसे उसकी कुछ समझ में नही आया । काफ़ी रात हो जाने पर वे रामपुर पहुचे। मुसलमान सिपाही ने कहा कि आज रात यही मेरे बरामदे मे सो जाओ, कल सवेरे अपने भाई के घर चली जाना ।

उसके कहने से वह पड तो गई लेकिन उसे नींद नही आई। "हाय अब भाभी को मै कैसे मुंह दिखाऊंगी," उसने सोचा। उसकी सारी आशाएं

टूट चुकी थी। भगवान् तक ने उसे भुला दिया था। उसे अब अपने कष्टमय जीवन का अन्त करने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया था। भगवान् को धन्यवाद कि अब भी एक ऐसी युक्ति थी जिससे सारे दुःखों का अन्त हो सकता था। इस युक्ति को पार्वती से कोई नहीं छीन सकता था।

बहुत देर तक जागते रहने के बाद सुबह होते थकावट के कारण पार्वती को नीद आ गई। मुसलमान सिपाही जब सुबह छः बजे बाहर निकला तो उसने पार्वती को गहरी नीद में सोते पाया। "अपने आदमी को जेल मे भिजवाकर कैसे मज़े में सो रही है," उसने सोचा। "इन बेवफ़ा औरतों का यकीन करना कितनी बेवकूफी है!"

पार्वती एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनकर उठ बैठी। वह सपना देख रही थी कि मेरा बच्चा रो रहा है। नीद खुलने पर भी उसे कुछ देर बाद तक यह खयाल नही आया कि मेरे बच्चे को मरे एक ज़माना हो गया है और अब मै एक असहाय औरत हूं, जिसका पति और घर-द्वार सब कुछ छिन चुका है।

जब वह उठकर बैठी तो उसने अपने सामने एक काले-कलूटे लड़के को देखा। उसने दोनों हाथों से अपना मुह ढक रखा था और कभी वह बच्चे के रोने की-सी आवाज़ निकालता था तो कभी मा की-सी। पार्वती के उठकर बैठते ही वह चुप हो गया और पैसा मांगने लगा।

"तेरा घर कहां है?" पार्वती ने पूछा।

"मा मुझे एक पैसा दे दो," लड़के ने चिल्लाकर कहा।

"तेरा बाप कौन है?" पार्वती ने फिर पूछा।

"मै नही जानता," लड़के ने जवाब दिया।

"क्या तेरे मा भी नही है?"

"मा तो है, लेकिन वह मुझे सूअरवाले के यहां छोड़ गई है।"

"तुझे खाना कौन देता है?"

"मैं खुद कमाता हू। जितने पैसे मुझे मिलते हैं मैं सूअरवाले को दे देता हूं और वह मुझे खाना खिला देता है। कभी-कभी वह मुझे

खाना खिला देता है और बाद मे जब मेरे पास पैसे बचते है तो मै उसे दे देता हूं ।"

"ये अजीब तरह की आवाजे बनानी तूने कहांसे सीखी ?"

"इन्हें मैने तंजावूर मे सीखा था । मा मुझे कुछ दे दो, मुझे सूअर-वाले के पास जाना है ।

इतने मे सिपाही बाहर आ गया और उसने लडके को धमकाकर भगा दिया । "ये सब बदमाश होते है । इस तरह दिन में आकर सब भेद ले जाते है और रात को चोरो को लाकर चोरी करा देते है। रात को तुम अच्छी तरह सोई मालूम होती हो ?" सिपाही ने पूछा ।

"भगवान् तुम्हारा भला करेगा । तुमने मेरे साथ बाप-जैसा बर्ताव किया है ।" यह कहकर पार्वती फूट-फूटकर रोने लगी ।

उस आदमी के मन में अब पार्वती के लिए दया नही थी । उसने सोचा कि यह बन रही है । वह बोला—"तुम अब अपने भाई के घर जा सकती हो । अगर अभी चल दोगी तो दोपहर होने से पहले ही वहा पहुच जाओगी ।"

भूखी-प्यासी और बेहद थकी हुई पार्वती दोपहर को अपने भाई के घर पहुची । उसे आशा थी कि उसके भाई का हृदय कुछ पिघल गया होगा । परन्तु उसके आने से पहले ही उसकी खबर गाव मे पहुच चुकी थी । भाई खेत पर चला गया था और भाभी द्वार पर खड़ी थी, पार्वती को आते देखकर बोली—"तू फिर आ गई ! यहा अपना काला मुह मत दिखा । यहा ऐसी औरतो के लिए जगह नही है जो अपने आदमी का सत्यानाश करके मुसलमानो के साथ भाग जाती है। अब तू चाहती है कि मेरे घर में बैठकर मेरे आदमी का खून चूसे ? मेरे बाल-बच्चे है और मुझे उनकी निगरानी करनी है । मै नही चाहती कि तेरा उनका साथ हो । उसी आदमी के पास जा जिसके लिए तूने अपने आदमी को

"भइया, भइया," पार्वती ने रोकर पुकारा । वह समझी कि भाई अन्दर है ।

"क्या तुम मुझसे बोलोगे नही ? क्या तुमने भी मुझे छोड़ दिया ? हे भगवान्, अब तू ही रक्षा कर," पार्वती ने सिसकते हुए कहा और भूखी-प्यासी, थकी-मांदी वह रोती हुई वहांसे चल दी ।

सूरज तप रहा था, परन्तु पार्वती को अब न गरमी सता रही थी, न भूख । उसका गला और उसके होठ प्यास के मारे सूख रहे थे और जिन-जिन देवी-देवताओं के नाम वह जानती थी उन्हें वह बड़ी कठिनाई से याद कर पा रही थी । दूसरे गांव में पहाड़ी पर एक मन्दिर था । वह उसी ओर मुड़ गई ।

पहाड़ी पर थोड़ी ही दूर चढ़ने के बाद उसे लगा कि मं अब एक पग भी आगे नहीं रख सकती । उसे मूर्छा-सी आने लगी और वह एक चट्टान की छाया में बैठ गई ।

कुछ देर बाद वह उठी और फिर पहाड़ी पर चढ़ने लगी । वह मन्दिर तक पहुंच गई, परन्तु भीतर नहीं गई । बाहर खड़े-खड़े ही उसने प्रार्थना की । फिर वह मन्दिर से भी ऊंची एक चट्टान पर पहुंची और उसकी चोटी पर चढने लगी । रास्ता मुश्किल था, लेकिन पार्वती में एक नई शक्ति आ गई थी । चोटी पर पंहुचकर वह उसके पच्छिमी छोर पर गई और वहांसे नीचे की तरफ झांकने लगी । नीचे से लेकर चोटी तक पहाड़ सीधा खडा था । उसे चक्कर आ गया और बह बैठ गई । लेकिन वह फिर उठी और "काली माई, मेरे पापों को क्षमा करके मुझे अपनी गोद में शरण दो" कहती हुई वह नीचे कूद पड़ी ।

अहा, एक ही क्षण में कितना सुख और आनन्द ! पृथ्वी और आकाश घूम उठे। कितना शीतल ! कितना सुखकर ! कितना आनन्दमय ! तब उसे अपने सिर में एक इतनी ज़ोर का धमाका मालूम हुआ जैसा उसने पहले कभी नहीं सुना था और वह सदा के लिए अनन्त शान्ति में लीन हो गई । उसकी आत्मा अपने दुःख के पिजरे को छोड़ कर उड़ गई।

: ४ :

पुनर्जन्म

जब बालक और बंदर मिल जायं तो फिर खेल-तमाशे की क्या कमी ? वेलमपट्टी गांव के सब लड़के इमली की बगिया में इकट्ठे हो गये थे। कभी वे दरख़्तों पर चढ़ते थे, कभी नीचे कूदते थे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर डालों पर बैठे हुए बन्दरों को भगाने की कोशिश करते थे। कभी-कभी बन्दर बाज़ी मार लेते थे। जब उनमें-से सबसे बड़ा बन्दर खड़ा होकर ग़ुस्से से खों-खों करता था तो छोटे-छोटे लड़के सारी छकड़ी भूल जाते थे और कुछ-कुछ डर भी जाते थे। हां, बन्दरों के छोटे-छोटे बच्चे ज़रूर बुरी तरह डरे हुए थे और उन्हें यह तमाशा बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा था। लड़कों से बचने के लिए वे एक डाल से दूसरी डाल पर कूद रहे थे। लेकिन लडकों को इसमें बड़ा मज़ा आ रहा था। उनकी चिल्ल-पों और बन्दरों की किलकिलाहट गांव तक में सुनाई दे रही थी।

एकाएक बगिया के पूर्वी किनारे से एक लड़के के ज़ोर से चीख़ने की आवाज़ सुनाई दी। सबके सब उधर भागे। उन्होंने देखा कि एक बन्दरिया ने मुकुन्द पर हमला कर रखा है और वह उसे नाख़ूनों से खसोट और उसकी गर्दन पर काट रही है और मुकुन्द के बड़े ज़ोरों से ख़ून वह रहा है। मुकुन्द ने बन्दरिया के बच्चे को खदेड़ा था और वह उससे बचकर भागने की कोशिश करते वक्त डाल पर से फिसलकर गिर पड़ा था। मुकुन्द उसे उठाकर भाग खड़ा हुआ। इस पर बन्दरिया उस

पर झपटी और उसे गिराकर बुरी तरह काटने-खसोटने लगी। मुकुन्द घबरा गया और उसकी समझ में नही आया कि क्या करूं। घबराहट में उसने बच्चे को और भी कसकर पकड़ लिया। इससे बन्दरिया और भी चिढ़ गई और मुकुन्द को और भी बुरी तरह से काटने लगी। लड़कों ने चिल्लाकर कहा—"बच्चे को छोड दे, बच्चे को छोड दे," लेकिन मुकुन्द की समझ मे नही आया कि ये क्या कह रहे है। बन्दरिया बहुत बडी थी और क्रोध में भर रही थी, इसलिए किसी लड़के को उसके पास जाने का साहस नही हुआ।

मारि नाम का एक छोटा लड़का दूर खड़ा-खड़ा सब-कुछ देख रहा था। "अरे यह मर जायगा" चिल्लाता हुआ वह दौड़कर मुकुन्द के पास गया और बन्दरिया के बच्चे को छीनकर भाग खड़ा हुआ। बन्दरिया मुकुन्द को छोड़कर मारि के ऊपर झपटी। मारि ने बच्चे को नीचे फेंक दिया और पास ही पड़ी हुई एक छड़ी उठाकर वह क्रोध में भरी बन्दरिया का सामना करने को खड़ा हो गया। बन्दरिया अपने बच्चे को भागते देखकर उसकी ओर दौड़ी। बच्चा मा से चिपट गया और दोनो पास के एक वृक्ष की सबसे ऊची टहनी पर चढकर शान्ति के साथ बैठ गये, मानो कुछ हुआ ही न हो।

मुकुन्द पृथ्वी पर बेहोश पडा था। लड़के यह चिल्लाते हुए कि मुकुन्द मर गया, उसे बन्दरिया ने मार डाला गाव की ओर भागे। लेकिन मारि चिन्ना के साथ वही रह गया। उसने कहा—"चिन्ना जा मा से मांगकर एक बर्तन मे जल्दी से पानी ले आ" और मुकुन्द के पास बैठकर उसका मुह पोछा और उसे आराम पहुंचाया। चिन्ना भागकर मोहल्ले में-से एक मिट्टी के बर्तन में पानी ले आया। मारि ने पानी लेकर मुकुन्द के मुह पर छिड़का। इससे उसे होश तो आ गया लेकिन उसके घावो से खून बहता रहा।

"चिन्ना, इसे एक ओर से तू पकड़ और दूसरी ओर से मैं पकडता हूं; से इसके घर ले चलना चाहिए," मारि ने कहा और दोनो ने

मिलकर उसे उठा लिया। मारि और चिन्ना थे तो अभी छोटे, लेकिन गरीब होने के कारण मेहनत के काम से घबराते नहीं थे।

२

मुकुन्द की मा विधवा थी और ईश्वर से डरती थी। उसने कभी हिम्मत नहीं हारी और बड़े अच्छे ढंग से अपने बेटे का लालन-पालन किया। उसने अपने पति के देनदारों से सारा कर्ज़ा वसूल किया और चार एकड़ सूखी ज़मीन, जो वह छोड़कर मरा था, एक किसान को लगान पर उठा दी। उससे जो कुछ भी आमदनी होती उससे वह अपनी गृहस्थी का काम चलाती थी। मुकुन्द को उसने गांव के छोटे-से स्कूल में दाख़िल करा दिया था और घर पर वह उसे रामायण, महाभारत और भागवत की कहानियां सुनाया करती थी। इस तरह बाहर से वह साहसी तो दिखाई देती थी लेकिन अन्दर से उसके जीवन में थका-वट आगई थी। फिर भी परमेश्वर में विश्वास रखने और परम्परा के अनुसार जीवन बिताते रहने से उसके दिन कटते रहे।

स्नान और दैनिक पूजा-पाठ के बाद वह चौके में खाना बना रही थी कि मारि और चिन्ना "माजी, माजी" चिल्लाते हुए अन्दर आये और ख़ून से लथपथ मुकुन्द को उन्होंने उसके सामने लिटा दिया। "मेरे बच्चे", कहकर घबराई हुई मा उसकी तरफ़ झपटी और उसका सिर पकड़कर चीख़ उठी—"अरे शैतानो, तुमने मेरे बच्चे को क्या कर दिया?" उस समय उसका व्यवहार ठीक वैसा ही था जैसा बगिया की उस बन्दरिया का जिसने समझा था कि उसका बच्चा खतरे में है। बन्दरिया हो या सीता, मा का हृदय एक-सा ही होता है।

मारि ने सारा किस्सा कह सुनाया। सुनकर सीता का हृदय कृत-ज्ञता से भर उठा। उसने उन बच्चों की ओर, जो मुकुन्द को घर लाये थे, प्यार से मुसकराकर देखा और पूछा—"तुम कौन हो, बच्चो?"

"हम अछूत के लड़के हैं, माजी," मारि ने कहा।

सुनते ही सीता का चेहरा उतर गया और वह चिल्लाकर बोली—"अरे तुम अछूत के लड़के हो ! दुष्ट कहीं के ! मेरे घर में घुस आये ! अरे राम, अब मै क्या करूं ? अरे, तुम तो मेरी रसोई के पास आ गये, कमीनो !" वह सब कुछ भूल गई और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए उसने एक चैला उठाकर बड़े ज़ोर से चिन्ना पर फेंका। मारि बीच में आ गया और लकड़ी उसकी टांग मे लगी। चोट खाकर वह जमीन पर गिर पडा। चिन्ना चिल्लाता हुआ गली में भाग गया।

"मेरे घर मे अछूत घुस आया," सीता ने चिल्लाते हुए कहा। "हाय मेरा तो जीवन नष्ट हो गया और उसे इतने पर भी सब्र न आया और अब वह सारे गांव मे मेरा नाम लेता फिर रहा है।"

मारि, जो गिर गया था, उठकर बैठा और अपनी घायल टांग को धीरे-धीरे सहलाते हुए बोला—"मा जी, मैंने तो तुम्हारे बेटे को बन्दरिया से बचाया और तुमने उसका बदला मेरी टांग तोडकर चुकाया।" ग़रीबों के बच्चे बातें करने मे बड़े चतुर होते है।

"भाड में पडे तू और तेरी बन्दरिया," सीता ने चिल्लाकर कहा। "इस पाप से मेरा कैसे छुटकारा होगा ? अछूतों की तो परछाई से पाप लगता है और ये तो मेरे घर में पूजा की जगह चले आये ! हे भगवान्, मेरे ऊपर दया करो, मेरी रक्षा करो।

मारि अब भी वही खड़ा-खड़ा अपनी टांग सहला रहा था। "चंडाल कहीं का, भाग यहा से," मुकुन्द की मा ने कहा और ग़ुस्से मे भरकर उस पर दूसरी लकड़ी फेंककर मारी। इससे उसे पहले से भी अधिक चोट आई। दर्द सह न सकने के कारण वह बिलबिलाता हुआ बाहर भाग गया।

गली में भीड़ इकट्ठी हो गई थी। कोई पूछ रहा था "अरे क्या बात है" और कोई उसका जवाब दे रहा था। बड़ा हो-हल्ला मचा हुआ था। अछूतो के पुरवे से मारि और चिन्ना की मा भी आकर गली के मोड़ पर खडी हो गई थी और शोर मचा रही थी।

३

इस घटना को दो साल बीत गये। मुकुन्द अब बड़ा हो गया था और कमलापुर के हाईस्कूल मे पढता था। उसे रोज दो मील जाना और दो मील आना पडता था लेकिन चूकि उसके साथ दो लडके और जाते-आते थे इसलिए उसे चलना अखरता नही था। बन्दरवाली दुर्घटना सब भूल चुके थे, सिर्फ मुकुन्द के माथे पर का बडा निशान उसकी यादगार-सा रह गया था।

लेकिन मारि की मा कुप्पायी के हृदय मे शान्ति नही थी। "हम लोग ब्राह्मण के घर मे कैसे पैर रख सकते है? यह पाप जरूर हमे खाकर रहेगा। तुम दूसरे लडको के साथ खेलने गये क्यो? भगवान् हमे माफ नही करेगा। इसीलिए तो आजकल हमे इतनी मुसीबत उठानी पड रही है। अबके तो पानी भी नही पडा है और हम सब भूखों मर रहे हे। यह सब उस ब्राह्मणी के श्राप का फल है।" इसी तरह वह अक्सर अपने लड़के के मत्थे दोष मढा करती और अपनी सारी कठिनाइयों का कारण उसी दुर्घटना को समझती। गांव के मन्दिर मे जाकर वह देवी के सामने हाथ जोडकर कहती—"देवी मैया, मेरे बच्चे का कसूर माफ करो, वह नासमझ था।" उसने पोगल के लगातार तीन त्योहारो पर मुर्गा चढाया। लेकिन उसके इतनी श्रद्धा के साथ विनय करने और बलि चढाने पर भी मारिअम्मा (देवी) प्रसन्न होती दिखाई नही दी। मुसीबते एक के बाद दूसरी आती ही गई। पहले उसका पति केवल पैठ के दिन ही ताडीखाने जाया करता था, लेकिन अब वह रोज जाने लगा। नशे मे चूर होकर वह घर लौटता और डपटकर खाना मागता। कुप्पायी जब कहती "खाना कहांसे आये, सारे पैसे तो तुमने ताड़ी मे बहा दिये," तो वह उसकी लात-घूसो से मरम्मत करता। बेचारी सारे दिन जगल मे मेहनत कर कुछ लकड़ियां बटोरती और उन्हें बेचकर दो आने पैसे लेकर घर आती, लेकिन उसका आदमी लड-झगड़कर पैसे छीन लेता और ताड़ीखाने चला जाता। इस तरह जब

जीवन का भार असह्य हो उठता तो कुप्पायी अपने लड़कों को दोष देती और कहती--"यह सब ब्राह्मणी के श्राप का फल है।" इसी तरह जब उसका पति नशे में घर आता और उसे पीटता तो वह चुपचाप मार सह लेती और कहती--"रोओ मत, बच्चो! हम इस मनहूस घर और गांव को छोड़कर कहीं चले जायेंगे। मरे यह आदमी इसी ताडीखाने में।"

उस साल एक बूंद भी पानी नही पडा। सारे खेत सूख गये और मजदूरों की कही मांग नही रह गई। जब खुद छोटे किसानों की हालत खराब थी तो मजदूरी पर काम करनेवालो की दशा का दयनीय होना स्वभाविक ही था। अछूतों और चमारो की हालत तो बयान मे बाहर थी।

इसीलिए जब एजेन्ट लंका के लिए कुलियो की भरती करने आया तो सबने उसका ऐसा स्वागत किया मानो कोई देवता उन्हें दुःख से छुडाने आया हो। इस पर गाव के बडे किसानों ने कहा--"एजेन्ट गरीबों को धोखा दे रहा है और उनकी नासमझी से फायदा उठाकर उन्हें बहकाकर ले जा रहा है। अफसोस कि कोई इस अन्याय को रोकनेवाला नही।" लेकिन अछूतों और चमारों ने सोचा कि जितना कष्ट हम यहां उठा रहे है उससे तो कही भी रहेंगे कम ही उठाना पड़ेगा। वे गांव छोड़कर एजेन्ट के साथ लंका चले गये। कुप्पायी ने भी सोचा कि कष्ट से छुटकारा पाने का बस यही एक उपाय रह गया है और अपना नाम उन लोगों में लिखवा दिया जो अपने बच्चो के साथ जाने को तैयार थे। उसके पति ने पहले तो जाने को मना किया और कुप्यापी ने तय किया कि इसका जहां जी करे वहां जाय, लेकिन बाद में वह बोला—"मै भी तुम्हारे साथ चलूगा; यहां मुझे खाना कौन देगा?" उसने कसम खाकर यह भी कहा कि अब मैं ताड़ी या ठर्रा नही छूऊंगा और वह साथ ले चलने के लिए गिड़गिड़ाया। अन्त में वे सब चले गये।

४

तीन वर्ष और बीत गये। स्कूल मे मुकुन्द बडी मेहनत के साथ पढ़ता था। अन्तिम परीक्षा में वह प्रथम श्रेणी मे पास हुआ। स्कूल मे नतीजा सुनते ही मुकुन्द को फौरन घर जाकर मा को खबर सुनाने की उत्सुकता हुई, लेकिन उसके स्कूल के साथियों ने उसे अपने साथ मन्दिरवाली पहाडी पर चलने के लिए आग्रह करते हुए कहा--"चलो, पहाडी पर चले, वहां थोडी देर मेला देखकर आयेगे।"

"पहाड़ी से तो लौटने मे देर हो जायगी और मा इंतजार मे बैठी रहेंगी," मुकुन्द ने जबाब दिया।

"बेवकूफी की बाते मत करो, तुम लडकी थोड़े ही हो। अरे, देर हो जायगी तो मै तुम्हे तुम्हारे घर छोड आऊगा; चिन्ता क्यों करते हो? क्लास मे अव्वल आने का घमड हो गया है क्या? तुम्हें हमारे साथ चलना ही पड़ेगा," एक दबंग-से बडे लड़के ने हठ करते हुए कहा। "हा, हा चलना ही पड़ेगा," चारों ओर से लडको ने घेरकर कहा। मुकुन्द को सब पसन्द करते थे।

मुकुन्द को उनका कहना मानना ही पडा। बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। भीड़ की भीड़ मेले की ओर जा रही थी। लड़को को बड़ा मजा आया। वे मन्दिर में चक्कर काटते फिरे और बाजार में जी भरकर घूमे। उनमे से एक लड़का लाड़-प्यार से पला हुआ एक अमीर का बेटा था। उसके पिता ने उसे अपनी इच्छा के अनुसार खर्च करने के लिए पांच रुपये दिये थे। वे एक मिठाई की दूकान पर गये। वहां उन्होंने बहुत-सी मिठाई खरीदी और सबने मिल-जुलकर खाया। फिर वे सारे दिन धूप मे घूमते फिरे और शाम को घर लौटने के लिए नीचे उतरे। अभी वे आधी दूर भी नही गये थे कि मुकुन्द ने कहा--'रामकिशन, मुझे बड़े जोर की प्यास लगी है।"

"यहां पानी कहां, घर पहुचने तक इन्तजार करनी पड़ेगी," दूसरे लड़कों ने जवाब दिया।

"मूर्खो, तुम्हे इतना भी नही पता कि यहा हनुमान-कुण्ड है ?" अगुआ लड़के ने कहा। वह उन्हे एक पगडण्डी के रास्ते ले गया और एक बडी चट्टान के पीछे जाकर, जिसपर हनुमानजी की मूर्ति खुदी हुई थी, उसने एक कुण्ड दिखलाया। मुकुन्द ने नीचे उतरकर खूब छककर पानी पिया और फिर "कितना मीठा पानी है !" कहता हुआ वह ऊपर आया। प्यासे मनुष्य को गदा पानी भी मीठा लगता है।

कमलापुर लौटते-लौटते बहुत अधेरा हो गया और जिस समय मुकुन्द ने घर पहुचकर द्वार पर धक्का देते हुए मा को पुकारा उस समय बहुत रात हो चुकी थी।

"मुकुन्दा बेटे, तुम्हे इतनी देर कैसे हो गई ? मै तो बहुत घबरा रही थी। तुमने तो कहा था कि नतीजा सुनते ही लौट आऊगा," मा ने कहा।

"हम सब मन्दिरवाली पहाडी पर चले गये थे, मा ! मैंने तो जाने को मना किया था लेकिन लड़के माने नही। हमने मेला देखा, बडा शानदार था।"

"खैर, अच्छा है कि तुम राजी-खुशी आ गये। पास हुए या नही ?"

"मै अपने क्लास में अव्वल आया हूं।"

"यह तो बडी खुशी की खबर है बेटे ! मुझे तुमपर बडा अभिमान है।" यह कहकर सीता ने मुकुन्द को हृदय से लगा लिया और उसकी आखो से आंसू बरस पड़े। उसके इस रुदन मे उस नारी के हृदय की करुणा भरी हुई थी, जिससे अपने पति को खोकर पुत्र को बड़े स्नेह और सावधानी से पाला था।

५

अभी चार दिन भी नही बीते थे हृदय को हर्ष और अभिमान से भर देनेवाले इस समाचार को सुने। लेकिन कैसा ससार है यह ! एकाएक मुकुन्द का घर उजाड़ हो गया। जिस रात को वह पहाड़ी से लौटा उसके पेट में बड़े जोरों का दर्द उठा और उसे दस्त आने लगे। किसी

की समझ में नही आया कि इसे हैजा हो गया है। सबको यह खयाल हुआ कि मेले की दूकान से खरीदी हुई मिठाई खाने से अपच हो गया है।

मुकुन्द को बडा सख्त दर्द था। जब किसी गरीब देहाती के घर मे किसीको हैजा या छूत की कोई दूसरी बीमारी हो जाती है तो उस घर मे एक भी ऐसा आदमी नही मिलता जिसे उसे रोकने या फैलने न देने का उपाय मालूम हो और अगर किसीको मालूम भी होता है तो न पास पैसा होता है न साधन। सिद्धान्त की बाते बतानेवालो की कमी नही होती और किताबे भी बहुत-सी मिल जाती है। लेकिन इस तरह की कही या लिखी बातों का हमारे दरिद्र गावो मे अनुकरण नही हो सकता।

मुकुन्द बच गया जैसे किसीने कोई कमाल कर दिखाया हो। लेकिन बेटे की छूत मा को लग गई। दो दिन तक वह अपनी बीमारी छिपाये-छिपाये मुकुन्द की देखभाल करती रही, लेकिन जब बदन बिल्कुल न चला तो पड गई। "पता नही, मेरा लड़का अब भी खतरे से बाहर हुआ या नही। मै तो अब मर रही हू, उसकी देखभाल कौन करेगा?" वह बड़े दु:ख के साथ बोली और उठकर बैठ गई। लेकिन वह बैठी न रह सकी और गिरकर बेहोश हो गई। उसके बाद उसे होश नही आया। हाथ-पैरों मे कुछ अकड़न-सी हुई और फिर प्राण-पखेरू उड गये।

६

पन्द्रह वर्ष बीत गये। अब सारी चीजें बदल गई थीं। वेलमपाली में ब्राह्मणो के सारे घर खडहर बन गये थे। केवल मन्दिर का पुरोहित कृष्णभट्ट अपने घर में रह गया था। दूसरे लोग नौकरी की तलाश मे गाव छोड़कर शहर चले गये थे। अछूतों के मोहल्ले में भी बिलकुल सुनसान हो गया था। मजदूरी करने के लिए कुछ लोग कंडी, कुछ पेनैग, कुछ शेरवराय पहाड़ी, कुछ बंग्लूर और कुछ दूसरी जगह चले गये थे। हां, किसानो के मोहल्ले में अभी उतनी सुनसान नही थी। अपने खेतों

और ढोर-डंगरों को न छोड़ सकने के कारण अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी वे वहीं रह गये थे।

मारि और चिन्ना अपनी मा के साथ लंका के चाय के बाग में काम कर रहे थे। उनके बाप ने वहा पहुंचते ही ताड़ीखाने मे जाना शुरु कर दिया था। वह अपना काम ठीक-ठीक नही करता था। इसलिए उसके मालिको ने उसे काहिल शराबी समझकर थोड़े ही दिनो मे नौकरी से अलग कर दिया। उसने चाय के एक दूसरे बाग में काम किया, लेकिन वहा भी उसकी यही दशा हुई। इसके बाद वह जगह-जगह मारा-मारा फिरता, भीख मागता और ताडी पीता रहा। थोडे दिनो बाद वह लापता हो गया और किसीको पता न चला कि उसका क्या हुआ।

मारि और चिन्ना बागो मे काम करते थे और हाथ रोककर खर्च करते थे। मारि अब पच्चीस साल का हो गया था। जिस बाग मे वह काम करता उसीके कुलियो के क्वार्टरों मे एक लडकी थी। उसका वही जन्म हुआ था और वही वह पली थी। एक दिन मारि की मा ने कहा—"मारि, तुझे अपने गांव मे इससे अच्छी लड़की नही मिलेगी, तू इसी से ब्याह कर ले।" मारि ने उसका कहना मान लिया।

ब्याह से कुछ दिनो बाद मारि ने गांव वापस जाकर बसने का विचार किया। वह मा से बोला—"मा, यहा रहते हमे पन्द्रह साल हो चुके है। बाबू अब तक वापस नही आये। उनकी इन्तजार करने से कोई फायदा नही। अब हमारे गाव लौट चलने में क्या रुकावट है? ठेकेदार के पास हमारे करीब दो सौ रुपये है। चलो इन्हें लेकर हम वेलमपट्टी चलें और एक जोड़ी बैल और गाडी खरीदकर इज्जत के साथ जिन्दगी बितावें। यह जगह तो मुझे बिलकुल अच्छी नही लगती। यहां हम गुलामो की तरह रहते है और हमसे जानवरों की तरह व्यवहार किया जाता है। यहां कोई देवी-देवता नही मानता और किसीको अपनी औरत पर जोर नही। हम यहा और क्यों ठहरे?"

"हां, बेटा, मै भी यही चाहती हू कि वेलमपट्टी वापस चली जाऊ और वही तेरे बाप की झोपड़ी मे मेरी मिट्टी सकरे," कुप्पायी ने कहा ।

सबके सब वेलमपट्टी लौट आये । मारि और चिन्ना अछूतों के मेले मे जाकर एक जोड़ी बैल खरीद लाये । इसके बाद वे सेलम गये और वहासे गाडी भी खरीद लाये । मारि अब आनन्द के साथ जीवन बिताने लगा । किसानो को उससे ईर्ष्या होने लगी और वे आपस मे कहने लगे—"इस कडी के चमार को देखो, गाडी और बैल खरीदकर कैसे मजे मे है ।"

लेकिन खुशी के ये दिन ज्यादा नही ठहरे । भाग्य ने पलटा खाया । एकाएक बैल लंगडा हो गया । कारण कुछ समझ में नही आया और बहुत दौड़धूप करने पर भी वह अच्छा न हो सका । मारि ने कौन्डलपट्टी के एक डाक्टर को पाच रुपये दिये । पहले उसने बैल के पैर में दवाएं लगाईं, फिर झाड़-फूक की और आखिर मे लोहे से दागा भी, लेकिन कुछ फायदा नही हुआ और बैल मर गया । मारि ने एक किसान के पास अपनी गाडी गिरवी रखकर चालीस रुपये उधार लिये । उनमें अपने बचाये हुए कुछ और रुपये जोडकर उसने दूसरा बैल खरीद लिया और कुछ दिन तक उसका काम चलता रहा ।

एकाएक आसपास के गांवो में मवेशियो की एक छूत की बीमारी फैली और सैकड़ो मवेशी मर गये । मारि के नये बैल को भी बीमारी हुई और वह एक ही दिन मे मर गया ।

दोनों भाई एक किसान के पास रोजाना मजदूरी पर काम करने लगे । उनका मालिक उनसे कसकर काम लेता था और मजदूरी बहुत कम देता था । इतने से वे खुद अपना पेट नही भर पाते थे, इसलिए बूढ़ी और कमजोर मा को पालना कठिन होने लगा । इसके अलावा, चिन्ना मारि से झगड़ा भी करने लगा । इन्ही दिनों पेनैग से एक एजेन्ट कुलियों की भरती करने आया । चिन्ना अपने बड़े भाई से कुछ कहे बिना ही उसके साथ चला गया । नेगापट पहुंचकर उसने किसीसे

मारि को एक पत्र लिखवाया--"भइया, तुमसे बिना कहे चले आकर मैंने बडा पाप किया है। यह काम मैंने अपने को भूख से बचाने के लिए किया है। भूख सही नही जाती थी, इसलिए मैंने सोचा कि चलू बाहर चलकर कुछ कमा लाऊं। मैं तुमसे माफी की भीख मांगता हूं और यहीसे अम्मा और बडे भाई के चरण छूता हू और प्रणाम करता हू।" किसीको विश्वास नही हुआ कि ये सब बातें चिन्ना ने लिखी होगी। असल मे यह उस आदमी के लिखने की खूबी थी जिससे चिन्ना ने चिट्ठी लिखवाई थी। फिर भी यह एक बडी बात थी कि चिन्ना ने दो आने पैसे खर्च किये और किसीसे कह-सुनकर अपने भाईको आदर का पत्र लिखवाया। एक गरीब अनपढ आदमी इससे ज्यादा और क्या कर सकता है?

बुढ़िया कुप्पायी दिन-रात रोती रहती और आप ही आप बड-बडाया करती--"अरे, यह सब इनके ब्राह्मणी की रसोई के पास जाने का फल है। अभी वह श्राप मिटा नही है। मारिआयी, तुम्हारा क्रोध कब शान्त होगा? हमारे ये दु:ख के दिन कब टलेंगे? हमारे पास फूटी कौडी भी नही है। अगर मेरे पास पैसा होता तो अगले त्योहार पर मैं तुम्हे मुर्गा चढाती। हे वेलमपट्टी की देवी माता, मुझे मौत दे दो तो मैं अपने कष्टो से छूट जाऊं। बस मेरे बेटे को उम्र लगाओ और उसे अपना आशीर्वाद दो। उसे और उसकी बहू को सुखी रखो।"

मारि की स्त्री पूवायी थी तो पन्द्रह साल की, लेकिन बड़ी फुर्तीली और मेहनती थी। वह जगल में बेधड़क चली जाती और लकड़िया बटोर-कर घर ले आती। वह एक मिनट भी बेकार नही बैठती। जब घर का काम निबट जाता और वह खाली होती तो घास काटने चली जाती या कही हाथ-पैर जोड़कर कुछ मजदूरी कर लेती और जो पैसे मिलते घर ले आती। वह जहा- कही भी घास या लकड़ी बेचती उसे औरों से अधिक पैसे मिलते। इस तरह वह हर हफ्ते कम-से-कम दो या तीन दिन एक-एक दुअन्नी कमा लेती और उसे लाकर मुसकराते हुए अपने पति को दे देती।

उस साल एक बूद भी बारिश नही हुइ। वैसे तो पिछले चार वर्ष मे पानी कम गिरा था, लेकिन उस साल जैसा सूखा पड़ा वैसा पहले कभी नही पड़ा था। सारे कुए सूख गये। कही हरे घास की एक पत्ती भी दिखाई नही देती थी। पीने तक को पानी मिलना मुश्किल होगया था। इसलिए बहुत-से और आदमी भी उस खडहर गाव को छोडकर चले गये ।

मारि ने भी सोचा कि कही और चलकर पेट पाला जाय, लेकिन उसकी मा ने कहा—"हम यही मर मिट जायेंगे । कही भी रहें बात तो एक ही है; जो भगवान् और जगह है वही हमारी यहा भी रक्षा करेगा।" बूढ़ी मा की इच्छा का विरोध करना उचित न समझ मारि चुप हो गया ।

अछूतों के मोहल्ले में अब सिर्फ पांच घर आबाद थे । बाकी लोग अपना-अपना घर छोड़कर पहले ही कही चले गये थे । जिस तालाब से अछूत पीने को पानी लेते थे वह कभी का सूख गया था । उसमे मिली हुई जमीन कुट्टि कौड की थी । उसमे एक कुआं था जिसमे अब भी थोडा पानी था। कुट्टि कौड अपनी फसल के कुछ हिस्से को इसी कुएं से पानी दे देकर सूखने से बचा सका था। जब वह अपने खेतो मे पानी दे लेता और बैलो को खोलकर नहला लेता तो खेत की ओर बहती हुई नली में से अछूतों को पानी लेने देता । उन्हे कुए में अपना बर्तन डालने की छूट नहीं थी, क्योंकि ऐसा करने से कुआ अपवित्र हो जाता; इसलिए वे बेचारे नाली से ही पानी लेते थे । दूसरे किसान तो उन-पर इतनी भी दया नहीं दिखाते थे। सूखे के कारण पानी वेलम-पट्टी में एक अनमोल वस्तु बन गया था; इसलिए इसमें ताज्जुब ही क्या कि किसान एक बूंद भी पानी अपने खेतों से बाहर नही जाने देना चाहते थे। लेकिन कुट्टि कौंड दयालु था; उसने यह सोचकर कि बेचारे अछूत पानी बिना तडप रहे है उन्हें अपनी नाली मे पानी लेने की छूट दे दी ।

औरतें वहा सुबह से ही प्रतीक्षा में खड़ी हो जाती और इस बात पर झगड़ती कि पहले अपना बर्तन मैं भरूंगी। नाली गहरी नहीं थी, इसलिए उसमें खुदे हुए गड़्ढों में बहुत ही कम पानी ठहरता था। कभी-कभी तो उनके झगड़ने से सारा पानी गदला हो जाता था और तब वे एक-दूसरी की शिकायत करती हुई किसान से कहती थी—"इसे देखिये सरकार, इसने मिट्टी घचोलकर सारा पानी गदला कर दिया।" किसान, जो खड़े-खड़े यह दुःखद दृश्य देखा करते, कहते—"ये गधे अछूत होते ही ऐसे है।" तब औरतें अपना-अपना घड़ा गदले पानी से ही भरकर चली जाती। थोड़ी देर बाद जब बर्तनों में मिट्टी नीचे बैठ जाती तो पानी साफ हो जाता और वे उसे पीने के काम में लाती।

७

कुट्टि कौंड रोज की तरह अपने खेत के छप्पर में अपने बेटो के साथ सो रहा था। खेत में कोई फसल रखाने को नही थी; मगर चार बैल और चार-पांच बकरियां थीं जो बहुत दिनों से कम चारा मिलने के कारण हड्डियो का ढाचा भर रह गई थी। रस्सी और चमड़े का डोल भी था। अकाल के दिनों में तो जो हाथ लग जाता है लोग वही चुरा लेते है। इसलिए रात के समय खेत के छप्पर में कोई न कोई सोता अवश्य था।

पूर्णिमा की रात थी। रीते खेत चांदनी मे सफेद दूध-जैसे चमक रहे थे। अकाल की क्रूर वास्तविकता दिन के समय दिखाई पड़ती थी। रात मे तो प्रत्येक वस्तु थकी और सोती रहती थी। अकाल तक सोता जान पड़ता था। इस भूतल पर मनुष्य को जो विपदाएं भुगतनी पड़ती है उन्हे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि नींद में थोड़ी देर के लिए भी सारी बातो को भूल सकना मनुष्य के लिए एक वरदान है।

एकाएक एक कुत्ते के भूकने ने आधी रात की निस्तब्धता भंग कर दी। दूसरे कुत्तों ने भी भूंकना शुरू किया। "कौन है? चोर!

चोर !" कुट्टि कौड का छोटा लडका चिल्लाया और उठकर बैठ गया। उसे ऐसा दिखाई दिया जैसे कोई आदमी चमड़े का डोल लिये चुपके-चुपके पीले फूलोंवाले दरख्त की छाया मे कुएं के किनारे-किनारे बचकर निकलना चाह रहा है।

"भइया उठो, उठो, चोर हमारा चमडे का डोल लिये भागा जा रहा है।" शेन्गोड उठ बैठा और आखे मलकर अपने चाचा और पडोस के दूसरे आदमियों को पुकारता हुआ चोर की तरफ लपका।

उस समय तक कुत्ते जोर-जोर से भूकने लगे थे और बडा शोर मच रहा था। चारों तरफ से लोग चिल्ला रहे थे—"खेत मे चोर है; पकड़ो, पकड़ो उसे !" आसपास के छप्परो मे से उठकर लोग उधर की ओर भागे और आखिरकार चोर पकड लिया गया। वह एक औरत थी उसके हाथ में अपनी एक रस्सी और अपना ही एक मिट्टी का बर्तन था। उसने चोरी केवल पानी की की थी। उसने अपना बर्तन कुएं में डालकर पानी खीच लिया था। 'एक अछूत औरत ने हमारे कुए में अपना बर्तन डाल दिया," लोग चारो ओर से चिल्लाये और फिर 'मारो इसे," "ठोकरें लगाओ," "मार डालो," "बर्तन फोड दो" की आवाजें आने लगी। उसका बर्तन फोड़ दिया गया और उसे इतना पीटा गया और इतनी ठोकरें लगाई गई कि वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पडी।

"अरे, मर गई। अब मत मारो इसे," राकिया कौड ने कहा।

"गडहा खोदकर कुनिया को यही दबा दो," दूसरा बोला।

"और क्या ! हम एक बला से बच जायेगे," तीसरे ने कहा।

जब गड़हा खोदने और दबाने की बाते कही जाने लगी तो लोग कुछ शान्त हुए। कोई किसीको कब तक पीट सकता है ?" कभी तो उसका अन्त होता ही है !

"देखो तो, यह है कौन ? कोई पहचानता है क्या ?" एक बूढे आदमी ने पूछा।

"यह तो कडी मारि की औरत है। अरे, अरे ! यह तो बड़ी अच्छी औरत थी, इसने ऐसा काम क्यो किया !" कुट्टि कौड के बडे लड़के ने कहा।

"कल मैने इसे पानी लिये बिना ही भगा दिया था, इसीलिए इसने ऐसा किया है," छोटा भाई बोला।

"इस अकाल में भला कौन जाति और धर्म की परवा करता है ! आजकल तो सारी बाते गडबड और बेढगी हो गई है, भले बुरे तक की कोई पहचान नही रह गई," एक लम्बे-से किसान ने जमीन पर पडी हुई औरत की ओर देखते हुए कहा।

"अरे, यह मरी नही है; मक्कारी साधे पड़ी है। इसे ठोकर लगाओ, फिर देखो कैसी उठकर घर भागती है," एक दूसरे आदमी ने कहा और पूवायी को दो ठोकरे जमाई भी। औरो ने भी ऐसा ही किया। लेकिन वह थोड़ी-सी हिलकर ही रह गई, न उठी और न बोली।

"भाइयो, चलो इस कुतिया को उठा ले चले और अछूतो के पुरवे में गाड़ आये" राकिया कौड ने कहा। वह कुछ-कुछ अनुभवी था, सेशन की अदालत मे एक मुकदमा देख चुका था और जानता था कि हत्या करने पर क्या-क्या परेशानिया उठानी पडती है।

उसकी सलाह को मानकर तीन-चार आदमी पूवायी को उठाकर अछूतो के मोहल्ले की ओर ले चले।

८

अगर असहाय अनाथो की सारी बाते सच-सच लिखी जायं तो उनसे सबको लाभ हो। हम चाहे अनाथ हों या न हों, उनके अनुभवों से बहुत-सी बातें सीख सकते है और उनसे लाभ ही उठा सकते है। मुकुन्द के अनुभव भी ऐसे ही थे। जबसे उसकी मा ने उसे इस दुनिया मे बिलकुल असहाय छोड़ा अगर तबसे अबतक की उसके इधर-उधर भटकने और जीवन से लड़ने की कथा लिखी जाय तो पूरी महाभारत

तैयार हो जाय। उसने अपने अनुभव लिखे नही और उन्हे सुन-सुनाकर लिखने में कोई मजा नही।

अनाथ को चाहे और कोई लाभ हो या न हो, उन्हें अक्सर दूर-दूर तक सफर करने का लाभ अवश्य होता है। भूगोल का ज्ञान वे अपने निजी अनुभव से प्राप्त करते है। मुकुन्द सारे भारत में मारा-मारा फिरा, उसने बडे-बड़े कष्ट उठाये और अन्त मे किसी-न-किसी तरह अपने लिए जीवन-निर्वाह का एक अच्छा रास्ता निकाल ही लिया। उसने डॉक्टरी की परीक्षा पास की और एक-दो जगह डॉक्टर रहने के बाद वह अपने ही गाव के अस्पताल मे आ गया।

कमलापुर के अस्पताल मे डॉक्टर मुकुन्द हिसाब जाच रहे थे और सालाना लेखा तैयार करने के लिए अपने सामने की मेज पर पडी हुई माल-बही देख रहे थे। उसी समय चार आदमी एक बान की खाट लिये हुए आये और उसे जमीन पर रखकर अपनी आदत के मुताबिक गला फाडकर चिल्लाये—"मालिक!"

डॉक्टर मुकुन्द ने कम्पाउण्डर से कहा—"अछूत मालूम होते है। मै समझता हूं कि कोई खून का मामला है, जाकर देखो तो।"

गांव के स्कूल के हेडमास्टर उनके पास बैठे थे। वह रोज सवेरे घूमने निकलते, अस्पताल के डॉक्टर से आध घटे गप्प लडाते और फिर चले जाते।

"यहां तो हर हफ्ते एक न एक खून होता ही रहता है और मुझे मुर्दे की चीर-फाड़ कर परीक्षा करनी पडती है। यह बड़ी बुरी जगह मालूम होती है। ऐसी हालत मैने किसी भी दूसरे अस्पताल में नही देखी," मुकुन्द ने कहा।

"यहां सब अनपढ आदमी रहते है। इस जिले के लोग जरा-जरा-सी बात पर लड़ने लगते है। उनमें जब कभी कहा-सुनी होती है तो बढ़ते-बढ़ते अक्सर मार-पीट और खून तक की नौबत आ जाती है। शिक्षा के फैलने से ये बातें ठीक हो जायंगी," हेडमास्टर ने कहा।

इतने में कम्पाउण्डर ने लौटकर कहा—"मुर्दा नही है, साहब ! एक लड़की है जिसे लोगों ने बुरी तरह पीटा है और उसे ही खाट पर लादकर लाये है ।"

"उसकी क्या उम्र है ?" हेडमास्टर ने पूछा ।

मुकुन्द ने इस सवाल पर ध्यान न देते हुए कहा—"उसे अन्दर लाने को कहो और मेज पर लिटाओ ।"

"यह कोई प्रेम का मामला मालूम होता है," हेडमास्टर बोले और जाने के लिए उठकर खडे हो गये ।

"बहुत मुमकिन है, चलिये देखे," मुकुन्द ने कहा । उठकर वह मेज के पास चले गये और जो आदमी उस औरत को लाये थे उन्होंने उसे धीरे-से खाट पर से उठाकर मेज पर लिटा दिया ।

मुकुन्द ने उसके घावो को देखकर कहा—"लोगों ने इसे बहुत बुरी तरह पीटा है ।" ध्यानपूर्वक परीक्षा करने के बाद पता चला कि उसकी बाहों की दो हड्डिया टूट गई है और बाकी चोटें साधारण और ऊपरी है ।

उसे लानेवाले लोगों मे एक मारि भी था । उसने पूछा—"यह बच जायगी न, मालिक ?"

"क्या तुम्हारी कोई रिश्तेदार है ?"

"मेरी औरत है, सरकार ! बच जायगी न ?" उसकी आंखो में आसू भर रहे थे।

"हां, हां, फिक्र न करो, अच्छी हो जायगी । लेकिन इसे यहां एक महीना रखना पडेगा ।"

यह सुनकर मारि रोने लगा—"हाय, मैं खाने को कहांसे लाऊंगा ?"

"बेवकूफ कही के ! हम खाना भी देंगे और इसकी देखभाल भी करेंगे," मुकुन्द ने कहा ।

इस पर एक दूसरे आदमी ने कहा—"तुम्हें नही पता मारि, यह हमारे पुराने मालिक के लड़के है वही मालिक जो नीम के पेड़वाले मकान में रहते थे । यह जरूर हमारी रक्षा करेंगे और इसे अच्छा कर देंगे ।"

तीसरा बोला—"अरे यह इसे तो रोटी देंगे और चंगा कर ही देंगे, साथ ही साथ तेरा भी पेट पालेंगे। रोता क्यों है ?"

"हमारे मालिक हैं, हमारी रक्षा करेंगे," सबने मिलकर कहा।

"हां, हां," मुकुन्द ने घायल औरत के टूटे हुए हाथों की परीक्षा जारी रखते हुए कहा ।

"अच्छा, मैं तो चला डॉक्टर !" हेडमास्टर ने नमस्ते करते हुए कहा ।

"अच्छा, नमस्कार" मुकुन्द ने हेडमास्टर से कहा और मारि की ओर घूमते हुए पूछा—"किस बात पर झगड़ा हुआ था ? इसे इतनी चोट कैसे आई ? मुझे बताओ तो, भाई !"

जो कुछ हुआ था उन्होंने कह सुनाया, लेकिन सबके एक साथ बोलने के कारण मुकुन्द सारी बातें ठीक से समझ न सका ।

६

"मुत्तु पिल्लै, क्या तुमने यहां कुछ फूल रखे हैं ? डॉक्टर मुकुन्द ने पूछा ।

"नही साहब, फूल कहां से आते, सारे पौदे तो मुरझा गये," कम्पाउण्डर बोला ।

"अजीब बात है," मुकुन्द ने मन ही मन में कहा, "जब मैं इस औरत के पास जाता हूं तो मुझे चमेली के फूलों की महक आती है, बिलकुल वैसे ही फूलों की महक जिन्हें इकट्ठा करने का मा को इतना शौक था।" इस तरह मरी हुई मा का ध्यान करते हुए मुकुन्द ने पूवायी के घावों पर धीरे-धीरे दवा लगाई। फिर उन्होंने टूटी हुई हड्डियों पर तख्तियां बैठाई और पट्टी बांधी ।

"अब कैसा जी है ?" उन्होने पूवायी से पूछा ।

"अब तो दर्द कुछ कम है, मालिक ! भगवान् आपको बढ़ती दे और हमेशा खुश रखे," पूवायी ने आह भरते हुए कहा ।

इन शब्दो के मुख से निकलते समय उसकी दृष्टि और मुसकराहट मे उस मा का-सा भाव था जो अपने बच्चेको प्रेमपूर्वक खेलाते समय वात्सल्य-सुख का अमृत पिया करती है । मुकुन्द को अपनी मा की और भी अधिक याद आने लगी ।

"पता नही क्यो, जब मैं इस औरत के पास जाता हूं तो मुझे अपनी मा की याद आये बिना नही रहती," मन मे यह सोचते हुए डॉक्टर मुकुन्द हाथ धोने चले गये। वह जहां भी जाते उन्हे ऐसा लगता जैसे चमेली की सुगन्ध बस रही है। पति के मरने के बाद उनकी मा फूल पहन तो सकती नही थीं, लेकिन वह प्रति दिन कही-न-कही से फूल लाकर देवी को अवश्य चढ़ाती थी । उन फूलो की सुगन्ध से सारा घर भर जाता था। वही सुगन्ध अब मुकुन्द को एक बार फिर आई।

यह अक्सर होता है कि कभी एकाएक और अनायास ही बचपन की सुनी हुई किसी गीत की धुन या किसी फूल की सुगंध याद आ जाती है और उसके साथ-ही-साथ उस समय की किसी घटना का भी स्मरण हो आता है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है जैसे हमने इस गीत की धुन कभी सुनी है या इस फूल की सुगध कभी सूघी है, लेकिन यह नही याद आता कि कब और कैसे ? कुछ लोग इसे पिछले जन्म की याद बताते है। उस दिन मुकुन्द के मस्तिष्क में भी उन आनन्दमय दिनों की याद नदी की तरह उमड़ आई, जो उन्होंने वेलमपट्टी में अपनी मा के साथ बिताये थे ।

"कितने आश्चर्य की बात है ! यह सुगंध तो मेरे दिमाग मे से निकलती ही नही। कहते है कि मरे हुए आदमी फिर से जन्म लेते है। शायद मेरी मा ने इस स्त्री के रूप में फिर से जन्म लिया है। कौन कह सकता है कि यह बात सत्य नही हो सकती ?" यह सोचकर डॉक्टर मुकुन्द एक बार फिर पूवायी की खाट के पास गये । पूवायी ने आखें खोलकर उनकी ओर देखा। उसकी दृष्टि ने उन्हें फिर अपनी मा की याद दिला दी और उन्हें ऐसा मालूम हुआ जैसे चमेली की महक का एक झोका-सा आ गया हो ।

१०

मुकुन्द बिस्तर पर पड़ते ही सो जाया करते थे। यह युक्ति उन्होंने एक योगी से उत्तर मे सीखी थी जहा वह कभी घूमते-घामते पहुच गये थे। लेटने के बाद करीब-करीब सभी लोग इधर-उधर की बाते सोचते और जागते रहते है। लेकिन मुकुन्द ने अपने को ऐसा साध लिया था कि वह इस तरह के विचारो को हटाकर अपने चित्त को वश में कर लेते थे और लेटते ही सो जाते थे। लेकिन आज वह तरकीब काम न दे सकी। उन्होने कोशिश बहुत की, लेकिन नीद न आई। थोडी देर तक बिस्तर पर करवटे बदलते रहने के बाद वह उठकर बैठ गये और लैम्प जलाकर एक किताब पढने लगे। वह भगवद्-गीता थी जो उन्हे एक मित्र ने दी थी। उनकी आखे दूसरे अध्याय के २२वे श्लोक पर ठहर गई। उन्हे अपनी मा की याद आई और वह सोचने लगे--"यह तो ठीक है, लेकिन पहला शरीर त्यागने के बाद जीवात्मा किस तरह नये शरीर मे प्रवेश करेगी ? क्या वह जिस शरीर मे चाहे उसीमे प्रवेश कर सकती है ? नही, यह तो सम्भव नही; यह तो पिछले जन्म मे किये गए अच्छे-बुरे कर्मो पर निर्भर है। हम अक्सर किसी मनुष्य या पशु को कष्ट मे देखते है। हो सकता है कि उस शरीर मे हमारी मा, बाप, भाई या किसी मित्र की आत्मा हो जो हमें दु:ख के सागर मे छोडकर चल बसा है। इसलिए, हमे चाहिए कि हम प्रत्येक दु:खी मनुष्य और पशु के प्रति दया का भाव रखे और उसे सहारा या आराम देने की चेष्टा करें। हम अक्सर लोगों को सुखी और समृद्धिशाली देखकर उनसे ईर्ष्या करते है। कितनी मूर्खता की बात है यह ! कौन जाने कि हमारे किसी प्यारे ने, जिसकी अकाल मृत्यु हुई हो, उस शरीर मे फिर से जन्म लिया हो और अपने पिछले कर्मो के फलस्वरूप वह अब अधिकार और ऐश्वर्य का भोग कर रहा हो ! कैसी मूढ़ता है ईर्ष्या करना !"

मुकुन्द इस श्लोक को पहले भी कई बार पढ़ चुके थे। हम जो कविता या गीत पढ चुके होते है उसकी पंक्तियां कभी-कभी अचानक शीशे की तरह साफ हो जाती है और उनमें हमें एक ऐसा अर्थ दिखाई दे जाता है जो पहले कभी नही दिखाई दिया था। गीता की इन पंक्तियो मे भी उस दिन मुकुन्द को कुछ नई और ताजी बात जान पड़ी।

मुकुन्द ने सोचा—"शरीर बीमारी या आयु के कारण नष्ट हो जाता है, परन्तु आत्मा की न कोई आयु है न उसे कोई बीमारी होती है, इसलिए वह कभी मरती नही। मेरी मा का शरीर तो नष्ट हो चुका है, परन्तु उसकी आत्मा ने निश्चय ही किसी दूसरे शरीर मे जन्म ले लिया होगा।" इसी भाति वह सोचते और पढते रहे।

११

"मुकुन्द, मेरे बेटे! उठो, आकर खाना खा लो," मा ने रसोई मे से पुकारा। निस्संदेह, यह उसीकी आवाज है। लेकिन कितने आश्चर्य की बात है! मै तो बराबर यह सोचता रहा हू कि मा मर चुकी। अरे, यह तो उसीकी आवाज है, यह तो वही है! मेरा जगह-जगह भटकते फिरना और कष्ट उठाना केवल सपना था। मेरी मा मरी नही है, वह तो जिदा है। अब स्कूल जाने का समय है। अब मै कभी गंदा पानी नही छूऊंगा और अगर मुझे हैजा हो ही गया तो मै मा को अपने पास नही आने दूगा। मै उसे छूत नही लगने दूगा। ओह, कैसे हर्ष की बात है यह! मेरी मा जिन्दा और भली-चंगी है! मा, मेरे पास आओ।

"वह हाथ मे घड़ा लिये कही जल्दी-जल्दी जा रही है और ऐसा मालूम होता है कि मुझे अपने पीछे-पीछे आने का संकेत कर रही है। ठहरो मा, ठहरो! तुम दौड़ क्यो रही हो? अरे, वह तो अछूतो के मोहल्ले में घुस रही है। अछूतों ने उसे घेर लिया है। वे उसे पीट रहे है और कह रहे है—"तू यहां क्यो आई? एक ब्राह्मणी का यहां क्या काम? वे उस पर जंगली जानवरों की तरह टूटे पड़ रहे हैं; लकड़ी

से मार-मारकर उसकी हड्डियां तोड़ रहे है। वे उसे खाट पर डालकर अस्पताल ले आये हैं। हाय, बेचारी मा ! उसे तो हैजा हो गया है और उसके शरीर में असह्य पीड़ा है। उसके हाथ-पैर ऐंठे जा रहे हैं और पेट में बडे जोर का दर्द है। अरे, लोग तो उसे लिये जा रहे हैं और कह रहे है "मर गई।" अफसोस, मै उठकर उन्हें रोक भी नही सकता ! क्या वह मर गई ? क्या वह चली गई ? अब मै क्या करूं ?"

सपने से चौककर मुकुन्द जाग गये। वह कुरसी पर बैठे-बैठे ही सो गये थे और भगवद्गीता उनके हाथों से छूटकर पृथ्वी पर गिर गई थी। नींद टूटने पर उन्हें ध्यान आया कि मै इसी कमलापुर के अस्पताल मे हूं और शेष सब कुछ सपना था। वह कुरसी से उठकर बिस्तर पर आ लेटे और जल्दी ही गहरी नींद मे सो गये।

१२

मुकुन्द पूवायी के घावों की मरहमपट्टी बडे प्रेम और सावधानी के साथ करते थे। घावों के भरने और हड्डियों के जुड़ने मे एक महीने से भी अधिक लग गया।

एक दिन उन्होंने मारि से कहा—"भाई, मै तुमसे एक बात कहना चाहता हूं, मानोगे ?"

"कहिये, मालिक !"

"जब मैं छोटा था तब तुमने मुझे बंदरिया के हाथों से मरने से बचाया था और बदले में मेरी मा ने तुम्हें पीटा था और घर से बाहर निकाल दिया था। ठीक है न ?"

"इन बातों को एक जमाना बीत गया। मालिक, आपने मेरी औरत की जान बचाकर मेरे जीवन मे प्रकाश भर दिया है।"

"मारि, तुम जानते हो कि मरे हुए आदमी अपने पिछले जन्म के अच्छे या बुरे कर्मो का फल भोगने के लिए फिर से जन्म लेते हैं।"

"हां, मालिक, कहते तो ऐसा ही है। भगवान् सबको देखता है और किसीको दण्ड दिये बिना नहीं छोड़ता। उससे बडा कोई नहीं।"

"मेरी मा ने तुम्हारे साथ बडी बुराई की थी। मुझे विश्वास है कि उसने फिर से जन्म लिया है और वह अपने पापो के कारण कष्ट उठा रही है। मै उसके लिए प्रायश्चित्त करना चाहता हू," मुकुन्द ने कहा।

"मै आपकी बाते समझ नही पाया, मालिक।"

"तुम लोग आजकल जबरदस्त अकाल के चगुल मे हो और बडी तकलीफें उटा रहे हो। तुम अपनी औरत के साथ मेरे घर मे आकर रहो। मेरे कोई सम्बन्धी नही है। तुम और पूवायी मेरे घर में मेरे भाई-बहिन की तरह रह सकते हो।"

मारि सचमुच कुछ नही समझ सका और बोला—"यह कैसे हो सकता है? यह बिलकुल नामुमकिन है, साहब।"

मुकुन्द ने समझाया—"मारि, तुम लोगो को ऐसा दुःखी जीवन बिताने देना पाप है। मैं इस बात के लिए भी प्रायश्चित्त करना चाहता हूं। तुम मना मत करो।"

"ओह, मालिक!" आश्चर्य से भरे हुए अछूत ने यंत्र की भाति कहा।

"मैंने तुमसे कहा था कि मृत्यु के बाद फिर जन्म होता है। मै नही जानता क्यो, लेकिन जब से मैंने तुम्हारी औरत को देखा है मुझे ऐसा लगता है कि वह मेरी मा है।"

"मालिक, आप क्या कह रहे है, मेरी बिलकुल समझ में नही आ रहा है।"

"कोई बात नही, भाई। तुम्हारी समझ मे नही आता न सही। मै जो कह रहा हू उसे मना मत करो। तुम्हें मेरे साथ रहना पडेगा।"

"मेरी मा नही मानेगी।"

"उसे मै राजी कर लूगा।"

"अगर वह मान जाय तो ठीक है।"

मुकुन्द ने कह-सुनकर कुप्पायी को राजी कर लिया। उस दिन से वह वहांके लोगों की नजरों में अछूत बन गये, परन्तु उनके हृदय को शान्ति मिल गई।

: ५ :

स्पर्धा

किसी समय सबेश की कॉफी का सारे देश मे नाम था। अगरेज तक उसे पसद करते थे; फिर हम लोगों का तो कहना ही क्या! मद्रासी समाज के ऊंचे घराने की स्त्रिया कहती थी कि बीज चाहे कितने ही अच्छे क्यो न हो और उन्हें चाहे कितनी ही सावधानी से क्यो न भूना जाय, घर पर तैयार की हुई कॉफी सबेश की टीनबंद कॉफी की बराबरी नही कर सकती।

सबेश ने काफी का कारबार सन् १९२५ मे आरम्भ किया। दो वर्ष तक उसके जीवन मे शायद ही ऐसी कोई घड़ी आई हो जो सुख और चैन से कटी हो। लेकिन सन् १९२८ मे सुब्बु कुट्टि उसके यहां क्लर्क होकर आया और तबसे सबेश का भाग्य-सूर्य दिन पर दिन ऊचा उठता गया। छः महीने के भीतर ही भीतर उसका व्यापार तिगुना हो गया और बाद मे भी इसी तरह तेजी से बढता रहा। स्वय सबेश को इस पर आश्चर्य होता था। वह समझता था कि सुब्बु कुट्टि भाग्यवान् है और इसलिए उसके साथ बड़े स्नेह का बरताव करता था। उसके बिना कहे ही वह उसे हर तरह की सहायता देता था। उसने उसकी बहिन का ब्याह एक अच्छे और धनी परिवार में करा दिया था और सारा खर्चा भी अपने पास से किया था। वह सुब्बु कुट्टि को अपना क्लर्क ही नही बल्कि साझीदार भी मानता था।

सुब्बु कुट्टि की मा ने उसे कॉफी पीसने का एक ऐसा गुप्त ढंग सिखा

दिया था कि उससे कॉफी मे एक विशेष मुगन्ध आ जाती थी। जब सुब्बु कुट्टि सबेश की कम्पनी में क्लर्क हुआ तो एक दिन सबेश को उसके घर बनी हुई कॉफी का एक प्याला पीने का मौका पड़ा। "इतनी अच्छी कॉफी मैंने कभी नही पी," उसने कहा और सुब्बु कुट्टि की मा से ढेर-सारे सवाल पूछ डाले। "क्या इसके पीसने का कोई खास तरीका है? या, इसके बीज मे कोई विशेषता है? या, इसे साफ करने की कोई खूबी है?" आदि, आदि। सुब्बु कुट्टि की मा ने कुछ और न बताकर सिर्फ इतना कहा—"इसका रहस्य सुब्ब कुट्टि से पूछिये।"

इस पर सबेश बोला—"कुछ भी सही, क्या यह बात हमारी कम्पनी मे कॉफी पीसते समय नही की जा सकती?"

"हा, हा, क्यो नही?" सुब्बु कुट्टि की मा ने उत्तर दिया।

उसके बाद जब बीज पीसे जाते तो सबेश सुब्बु कुट्टि को कारखाने भेज देता। वहां वह जो कुछ करता सबसे छिपाकर करता, यहां तक कि सबेश भी भेद न जान पाया। उसे सिर्फ इतना ही पता था कि सुब्बु कुट्टि अपने घर से टीन मे कोई चीज लाता है और पीसते समय बीजों में मिला देता है। यह बात निजी तौर पर पहले ही तय हो-ली थी कि इस रहस्य के बारे में सबेश उससे कुछ पूछेगा नही।

कारबार खूब बढ़ा और बडा लाभ हुआ। सबेश मद्रास के व्यापारी राजकुमारों में गिना जाने लगा। वह बहुत-से व्यापार-मण्डलों और क्लबों का मेम्बर भी चुन लिया गया।

दो-चार बार सबेश ने सुब्बु कुट्टि से भेद जानने की चेष्टा की, लेकिन उसकी मा ने उससे शपथ ले ली थी कि वह किसीको, यहां तक कि सबेश को भी, अपना भेद नही बतायेगा। सबेश ने भी बाद मे जिद नही की।

सन् १९३६ में सबेश को चौबीस हजार रुपये की बचत हुई। सुब्बु कुट्टि को ढाई सौ रुपये तनख्वाह मिलती थी। वह हर रोज सबेश की मोटर में घर जाया करता था। इससे उसके वे मित्र, जो पहले

बड़ा स्नेह दिखाते थे, अब ईर्ष्या करने लगे। उन्हें अब उसमे ऐसी बुराइयां दिखाई देने लगी जैसी पहले कभी नही दिखाई दी थी और वे उसकी सबेश से शत्रुता कराने की चेष्टा करने लगे। लेकिन वे सफल नही हो सके; उलटा उन दोनो का एक-दूसरे के प्रति विश्वास और स्नेह बढता गया।

इसी प्रकार दो वर्ष बीत गये। एक दिन सबेश लकड़ी के एक व्यापारी से बाते कर रहा था।

"तुम्हारा कारबार अच्छा चल रहा है; लेकिन सुना है कि तुम्हारा मैनेजर सुब्बु कुट्टि ऐयर कॉफी का अपना अलग काम शुरू करने जा रहा है," लकड़ी के व्यापारी ने कहा।

"ऐसी तो कोई बात नही है। तुमसे किसने कहा ?" सबेश ने पूछा।

"मुझे पता है, इसके बारे में वह खुद कुछ आदमियो से बाते कर रहा था," लकड़ी का व्यापारी जयराम नाडार बोला।

"मुझे इस बात का यकीन है कि तुम्हे गलत खबर मिली है। अगर ऐसी कोई बात होती तो वह मुझे जरूर बताता।"

"मै तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि यह कोरी अफवाह नही है। तुम खुद सब कुछ सुन लोगे।"

कुछ ही दिनो बाद एक दूसरे मित्र ने सबेश से कहा—"सुनते है कि सुब्बु कुट्टि विश्वनाथ साहूकार से कॉफी पीसनेवाली मशीनों की बाबत पूछताछ कर रहा है।" इससे सबेश की शंका पक्की हो गई। किन्तु उसने सोचा—"व्यापार की उन्नति और मेरी अपनी मर्यादा और प्रतिष्ठा सब कुछ सुब्बु कुट्टि के हाथ में है। कॉफी के चूर्ण का भेद भी वही जानता है। इस विषय में मैं कर ही क्या सकता हूं ?" उसी समय से उसके मन में सुब्बु कुट्टि के प्रति घृणा और क्रोध का भाव उत्पन्न हो गया और वह भाव दिन पर दिन बढ़ता गया। उसे ऐसा मालूम होने लगा कि मेरे सब नौकर-चाकर सुब्बु कुट्टि को ही अपना मालिक समझते हैं और

मेरा ठीक से अदब नही करते। इस तरह मालिक को अपने क्लर्क से ईर्ष्या होने लगी।

"देखो, सुब्बु कुट्टि! अगर कारीगरो को कुछ कहना हुआ करे तो उन्हें मुझसे कहना चाहिए तुमसे नही। ऐसे मामलो मे मै तुम्हारी सिफारिशे नही मान सकता।" यह बात सबेश ने सुब्बु कुट्टि से उस समय कही, जब वह उसके पास एक मजदूर की शिकायत के बारे में बातचीत करने आया।

इस तरह की कई बाते कई बार हुई।

एक दिन सुब्बु कुट्टि ने सबेश से कहा—"मै एक महीने की छुट्टी लेने को सोच रहा हूं। अप्पुस्वामी ऐयर ने मुझे अपने साथ तिरुवारूर मे रहने के लिए बुलाया है। मेहरबानी करके छुट्टी दे दीजिये।"

"छुट्टी नही मिल सकती," सबेश ने कहा।

सुब्बु कुट्टि की समझ मे न आया कि जो व्यक्ति मुझपर अब तक इतना दयालु रहा है वह अकारण ही मुझसे इतनी कठोरता और शुष्कता का व्यवहार कैसे करने लगा। यह सोचकर कि यह किसी बुरे ग्रह के कारण हो रहा है वह अपना काम तो पहले की ही भांति अच्छी तरह करता रहा, लेकिन अब उसके हृदय मे शान्ति नही थी। धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य गिरने लगा, दवाओ से कोई लाभ न हुआ और डॉक्टरों ने उसे दो महीने तक आराम करने की सलाह दी। लेकिन सबेश ने साफ-साफ कह दिया कि जबतक कॉफी का पाउडर बनाने का भेद नही बता दिया जायगा तब तक छुट्टी नही मिलेगी।

"नौकरी छोड़ दो, बेटा। अबतक हमारे दिन अच्छे थे। जब वे दिन फिर वापस आयेंगे तब हम अपना एक छोटा-सा व्यापार अलग चला लेगे। भगवान् जो चाहता है वही होता है।" सुब्बु कुट्टि की मा ने अपने बेटे से कहा और उसे सबेश से भेद न खोलने की सलाह दी। सबेश ने सुब्बु कुट्टि का इस्तीफा मंजूर कर लिया और उसे नौकरी से हटा दिया।

इस घटनाचक्र के कारण कुछ समय तक सबेश के कारबार को हानि नही पहुंची। टीन पर नटराज की सुन्दर मूर्ति, सब तरह की कॉफी के प्राकृतिक गुण और सबेश की पुरानी ख्याति के कारण व्यापार चलता रहा। लेकिन फिर समय ने पलटा खाया। किसीने कहा—"आज की कॉफी उतनी अच्छी नही है।"

"ऐसा मालूम होता है कि छन्ना खराब था या कॉफी का टीन खुला रह गया था, इसीलिए उसकी सुगन्ध उड़ गई है," घर के लोगों ने कहा।

"सुब्बु यह काम पुराने मालिक के विरुद्ध प्रचार करने के लिए कर रहा है। एक क्लर्क के हटा दिये जाने से कॉफी मे खराबी नही आ सकती," सबेश के मित्र बोले।

लेकिन दूसरे ग्राहक यह कहकर कि घर की बनी कॉफी का मुकाबला कोई नही कर सकता घर पर भूनने के लिए कॉफी के बीज खरीदने लगे। सक्षेप यह है कि सुब्बु कुट्टि के हटाये जाने के पाच-छ महीने के भीतर-ही-भीतर सबेश का कारबार घटने लगा।

सुब्बु कुट्टि के मित्र विश्वनाथ साहूकार ने उससे अपने साथ साझे मे काम करने को कहा। "सारा रुपया मै लगाऊगा और मुनाफे का आधा तुम ले लेना," वह बोला। पहले तो सुब्बु कुट्टि दो एक महीने तक इस प्रतीक्षा मे रहा कि शायद सबेश मुझे फिर बुला ले, लेकिन बाद में उसने विश्वनाथ की योजना मान ली और काम शुरू कर दिया।

सुब्बु कुट्टि में अब फिर से उत्साह आ गया। उसके सिर पर सबेश को मजा चखाने का भूत सवार हुआ। उसने अपनी तैयार की हुई कॉफी का नाम नटेश रखा, जो सबेश से मिलता-जुलता था। जो वस्तु सबेश की कॉफी मे छिपाकर मिलाई जाती थी उसकी मात्रा डेढ़ गुनी कर दी गई। लेबिल पर छपे हुए नटराज के चित्र में टागों का ढग उलट दिया गया। नई कॉफी बाजार में आई। मेहनती एजेन्ट नियुक्त किये गये और बिक्री एकदम बढ़ने लगी। विश्वनाथ ने खब

रुपया खर्च करके इश्तहारबाज़ी की। उसने सुब्बु कुट्टि की उमंग को खूब बढ़ावा दिया और सबेश के प्रति उसके क्रोध को हर प्रकार के उपायों से जाग्रत रखा।

सबेश ने हाईकोर्ट मे मुकदमा दायर कर दिया कि सुब्बु कुट्टि ने अपनी कॉफी के टीन का आकार, नाम और लेबिल मेरी कॉफी के टीन से मिलता-जुलता रखा है, जिससे ग्राहकों को धोखा हो जाता है और मेरे व्यापार मे घाटा हो रहा है। मुक़दमा एक साल तक चलता रहा और अन्त मे सबेश की जीत हुई।

जिस दिन अदालत मे फैसला सुनाया गया सबेश को तेज बुखार था। फैसला सुनकर वह हर्ष से फूला न समाया और खाट से उठकर, शोफर के न होने के कारण, स्वय मोटर ले अपने वकील के घर जा पहुंचा। उसने हुक्म दिया कि सुब्बु कुट्टि के कारखाने के माल को जब्त करने और बेचने का इंतजाम फौरन किया जाय। चिदम्बर के बड़े मन्दिर मे उसने विशेष रूप से प्रसाद चढाने का भी प्रबंध किया।

सुब्बु कुट्टि की मा के दुःख का पारावार न रहा, उसे ऐसा लगा मानो प्रलय हो रहा है। "भगवान्, क्या तुम सबेश को दण्ड नही दोगे ? उसने मेरे बेटे के साथ जो अन्याय किया है उसका फल क्या उसे नही मिलेगा ?" इस प्रकार उसने अपने देवता से प्रार्थना की और मानो उसकी प्रार्थना के उत्तर में फैसले के आठवें दिन डॉक्टरो की आशाओ के विपरीत सबेश हृदय की गति बन्द हो जाने के कारण इस संसार से चल बसा।

सबेश की मृत्यु के बाद हाईकोर्ट की डिग्री बेकार हो गई। विश्वनाथ के वकीलों ने उसे कानून समझाते हुए सलाह दी कि तुम्हारी कम्पनी अब बिना किसी रुकावट के अपनी कॉफी बेच सकती है। उन्होंने यह भी कहा कि यदि नटराज के चित्र के बदले काले नाग पर नाचते हुए कृष्ण की तस्वीर बना दी जाय तो किसी भी आपत्ति की सम्भावना नही रह जायगी।

सबेश का भूत हवा मे विरोध कर रहा था—"हाय, हाय, मेरे अनुकूल डिग्री मिल जाने का कुछ भी लाभ नही हुआ।" घृणा और बुरी नीयत का हठ ऐसा ही होता है।

"दुःख करने से कोई लाभ नही," एक साधु की आत्मा ने कहा और यह गीत गाया :—

उसने अपनी स्त्री से कहा—"मै बढ़िया भोजन चाहता हू।"
स्त्री ने परोसा और उसने बड़े स्वाद से खाया।
अपनी प्रेमिका के सग वह सोने चला गया।
'मेरी बाई ओर कुछ दर्द है,' उसने कहा।
यह बात कहकर वह खाट पर लेट गया।
परन्तु वह वहा सदा के लिए लेटा रहा, क्योकि वह मर गया था, मर गया था।"

वकील की सलाह ने विश्वनाथ और कुट्टि मे फिर से स्फूर्ति भर दी। उन्हे लगा मानो उन्होने फिर से ससार पर विजय प्राप्त कर ली है, परन्तु दुर्भाग्यवश कॉफी के चूर्ण का भेद खुल चुका था।

सारे नगर में चर्चा होने लगी—"इस कॉफी के चूर्ण मे रीठे का मेल होता है।" किसी-किसी ने कहा—"कॉफी के टीन में एक चौथाई हिस्सा रीठे का चूरा होता है।" और तब सबेश नटेश दोनो की कॉफियो से लोगो को अरुचि हो गई। जो लोग इन दोनो मे से एक भी कॉफी पीते थे उन्हें अपने स्वास्थ्य मे गड़बड़ी मालूम होने लगी। किसीको कब्ज हो गया, किसीको दस्त आने लगे और किसी-किसीको तो उसे पीने के बाद उलटी तक होने लगी। फल यह हुआ कि सभी बड़े आदमी अपनी कॉफी आप भूनने लगे। मुख्यु कुट्टि सचमुच अपनी कॉफी मे रीठे का चूर्ण एक टीन में एक चाय के चम्मच के हिसाब से मिलाया करता था। वे ही लोग, जिन्हे पहले उसकी कॉफी को पीने मे मजा आता था, अब उसे असह्य रूप से बुरा समझने लगे।

: ६ :

भविष्यवाणी

श्री स्वामीनाथ ऐयर टोन्डामन्डल हाईस्कूल में बारह साल हेडमास्टर थे। उनका और उनकी पत्नी अखिला का दाम्पत्य-जीवन बड़ा सुखपूर्ण था। लेकिन अखिला को एक रंज था। उसके कोई बच्चा नहीं हुआ था।

"तो क्या बात है, अखिला! स्कूल में दो सौ लड़के हैं। वे सब भी तो मेरे ही बच्चे हैं," हेडमास्टर कहते।

"तुम्हारे लिए कोई बात न हो। तुम उन्हें अपने बच्चे समझ सकते हो, लेकिन मैं तो घर में सारे दिन अकेली पड़ी रहती हूं। एक स्त्री के लिए बिना अपने बच्चे के जीवन बिताना बड़ा मुश्किल होता है," उनकी पत्नी उत्तर देती।

समय के साथ-साथ अपनी पत्नी की पुत्र-लालसा को बढ़ते देखकर स्वामीनाथ ऐयर ने तीर्थयात्रा करने का निश्चय किया। उन्होंने दो महीने की छुट्टी ले ली और दक्षिण में पलनि और रामेश्वर-जैसे पवित्र स्थानों की यात्रा करते हुए वह मैसूर पहुंचे। वहां उन्होंने पवित्र मन से एक-दो अश्वत्थ (पीपल) वृक्षों की परिक्रमा की, जो बांझ स्त्रियों को पुत्र का सौभाग्य प्रदान करने के लिए प्रसिद्ध थे। इसके बाद वह घर लौट आये और, जैसी कि अखिला की जन्मपत्री बनानेवाले एक तेलगू ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की थी, वह समयानुसार गर्भवती हो गई।

"ज्योतिष गलत नही हो सकती," स्वामीनाथ ऐयर ने हर्ष से फूल-कर कहा। अखिला ने कहा कि यह अश्वत्थ वृक्षो की भक्तिपूर्वक पूजा करने का फल है । जो कुछ भी हो, उन्होने निश्चय किया कि बच्चा होने के बाद हम एक बार फिर पलनि चलेगे । उन्होने अपना समय यह अनुमान करने मे भी लगाया कि वह शुभ अवसर कब आयगा।

स्वामीनाथ ऐयर के कुछ मित्रो ने उन्हे सलाह दी कि चूकि शादी के बहुत साल बाद गर्भ रहा है इसलिए आपकी पत्नी की विशेष रूप से देखभाल होनी चाहिये । उन्होने उन्हे अपनी पत्नी को ऐगमोर जच्चा-अस्पताल मे भरती कराने की भी सलाह दी । अखिला की मा बहुत पहले मर चुकी थी और औरतो मे सिर्फ उनकी बुआ बची थी। उम्मीद थी कि वह अखिला की देखभाल करने के लिए आ जायगी। लेकिन किसी कारण से वह न आ सकी। तब यही तय हुआ कि घर पर बच्चा कराने के बजाय अखिला को अस्पताल मे भरती करा दिया जाय।

प्रसव मे कोई कष्ट नही हुआ। स्वामीनाथ की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । उन्होने अस्पताल के डॉक्टर और नर्सो को बड़े-बडे उपहार देने का विचार किया।

बच्चा रात को नौ बजे हुआ था। नियमानुसार नर्स उसे फौरन नहला कर दूसरे दफ्तर मे तोलने के लिए ले गई । उस दिन लगभग एक ही समय तीन बच्चे पैदा हुए थे। नर्स इतने उत्साह और उतावली मे थी मानो वे ही उन बच्चो की मा हो।

अस्पताल के नियमानुसार जो कुछ हुआ करता है वही इन तीनो बच्चो के साथ भी हुआ और इस डर मे कि वे मिल न जाये उनके कूल्हो पर नम्बर के कार्ड बांध दिये गये।

इन तीनों बच्चों मे से एक का रग सावला था, लेकिन दो गोरे थे और उनका रग और वजन करीब-करीब एक-सा था ।

अखिला के बच्चे को जो नर्स लाई थी वह उसे दूसरी नर्सो को सौपकर चली गई। वैसे तो प्रत्येक बच्चे के आते ही उस पर उनके नम्बर

का कार्ड लगा दिया जाता था, लेकिन उस वक्त नर्से गप्प लड़ा रही थी इसलिए वे कार्ड लगाना भूल गई और बाद मे उनकी समझ मे न आया कि अखिला का बच्चा कौन-सा है। सावले बच्चे का तो कोई सवाल था ही नही, दूसरे दोनो बच्चो पर उन्होने अपनी समझ के अनुसार कार्ड बांध दिये। अखिला का बच्चा कुछ ज्यादा गोरा था। आठवे वार्ड मे जो मुसलमान औरत थी उसका रग सावला था इसलिये उन्होने सोचा कि सावला बच्चा उसीका होगा। जो बच्चा कुछ ज्यादा गोरा था उसे उन्होने अखिला के पास जाकर लिटा दिया। इससे कुछ गड़-बड़ी नही हुई।

"तुम्हारा बच्चा बड़ा सुन्दर है," एक फ्रांसीसी नर्स ने कहा। "इसका वजन सात पौड है। क्या तुम्हारा पहला ही बच्चा है ?"

"जी हा," स्वामीनाथ ने जवाब दिया। बच्चे की मा खाट पर थकी हुई पड़ी थी। उसके भीतर की खुशी उसकी मुसकराहट मे फूट-कर निकल पडी। उसके आनन्द का कोई ठिकाना नही था। अब उसे पुत्रवती कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया था और उसके जीवन का एक उद्देश्य भी बन गया था।

"क्या बच्चा तन्दुरुस्त और हट्टाकट्टा है ?" पिता ने पूछा। पिता सदा व्यावहारिक और वैज्ञानिक प्रकृति के होते है।

"आज के जन्मे हुए तीनो बच्चो मे यह सबसे अच्छा है," नर्स ने अंगरेजी मे कहा, जिसका अर्थ स्वामीनाथ ने अखिला को तमिल मे समझा दिया।

इसी बीच वह नर्स, जो पहले-पहल बच्चे को ले गई थी, वार्ड मे आई। उसने बच्चे को उठा लिया और कुछ देर तक वह उसे खेलाती रही; फिर दोनों नर्से बाहर चली गई।

"इस बच्चे की ठूडी के पास एक तिल था, वह इतनी जल्दी कैसे गायब हो गया ?" पहली नर्स ने पूछा।

"क्या तिलवाला बच्चा इस औरत का था ? हमने तो उस पर मुसलमान बच्चे का नम्बर बांधकर वार्ड नम्बर आठ में भेज दिया," दूसरी नर्स ने जवाब दिया ।

"या भगवान् ! अब हमें इस बारे में चुप रहना चाहिए," पहली नर्स बोली ।

"नही, यह बहुत बुरी बात है; अगर तुम्हे यकीन है तो हमे अब मे भी बच्चे बदलकर अपनी गलती सुधार लेनी चाहिये," दूसरी नर्स ने आपत्ति करते हुए कहा ।

"तुम तो पागल हो गई हो," पहली नर्स बोली । "अब ऐसा करने से गड़बड़ी होगी और हमें अपनी नौकरियों से हाथ धोना पडेगा । माओ के दिल में शुबहा तो फिर भी बना ही रहेगा । दोनों दुःखी होंगी । अब तो चुप रहने मे ही भलाई है ।"

बारह दिन बाद अब्दुल तैयबजी की पत्नी आर अखिला अपने अपने घर क्रमशः एन्डर्सन स्ट्रीट और तिरुवल्लिकेण वापस चली गई । दोनों घरों में दोनों बच्चों का खूब लाड़-प्यार से लालन-पालन हुआ । सेठ तैयबजी के घर धन और आराम बहुत था और स्वामीनाथ के घर प्यार और संतोष अनंत । दोनों बच्चों की देखरेख में किसीने कोई कसर नही की ।

जब स्वामीनाथ का बच्चा एक साल का था तो उसकी मौसी आई । "बच्चे की आंखें तो हमारे भाई मुत्तु स्वामी जैसी है, सिर्फ इसकी नाक स्वामीनाथ के घरवालों से मिलती-जुलती है," उसने बच्चे को देखकर कहा । इससे स्वामीनाथ को बड़ा संतोष हुआ और मा को दुहरी खुशी हुई ।

सेठ तैयबजी के घर में भी ऐसा ही हुआ ।

× × ×

सेठ तैयबजी को मरे २२ वर्ष हो गये है । अब उनका बेटा सुलेमान, जो जन्म से ही बड़ा चतुर था, अपने पिता की बडी तिजारत को खूब होशियारी के साथ चला रहा है ।

स्वामीनाथ ऐयर का लड़का अश्वत्थ नारायण बेहद कोशिश करने पर भी स्कूल लीविंग परीक्षा से आगे नही बढ़ सका। वह बम्बई अपने मित्रो के यहा गया और वहा ठहरकर उसने इधर-उधर सिफारिशे कराने और नौकरी ढूढ़ने की चेष्टा की, लेकिन अंत मे वह असफल होकर लौट आया। इन सब बातो का स्वामीनाथ पर गहरा असर पड़ा। ज्योतिषी ने जो कागज उन्हें लिखकर दिया था उसमे लिखा था——"तुम्हारा बेटा बहुत बड़ा सौदागर होगा। वह भाग्यशाली होगा, लेकिन अपने माता-पिता के किसी काम न आ सकेगा।"

"इसकी तो कोई बात नही कि वह हमारे किसी काम आयगा या नही। वह खुश रहे, यही काफी है। लेकिन उसे तो कही सफलता मिलती ही नही। ज्योतिष एक ढकोसला है," स्वामीनाथ ने बिगड़ते हुए कहा।

"यह तुम कैसे कह सकते हो कि ज्योतिष झूठी है? क्या बच्चे का जन्म ठीक भविष्य-वाणी के ही अनुसार नही हुआ? विधाता का लिखा कोई नही मेट सकता। कौन जाने, अभी क्या होगा और क्या नही। उसे किसी चेट्टियार (बनिये) के यहां काम सीखने को भेज दो। मुमकिन है कि वह तिजारत में होशियार निकले," अखिला ने कहा।

: ७ :

पश्चात्ताप

अशोक वाटिका में कितनी ही रातें जागते बिता देने के बाद एक रात अनजाने ही दु:खी सीता को गहरी नींद आ गई।

वहाके अपने दु:खपूर्ण कारावास में उन्हें अक्सर लक्ष्मण की याद आती थी। राम का ध्यान करते समय भी उन्हें ऐसा लगता था मानो लक्ष्मण उनके सामने खड़े-खड़े आंसूभरे नेत्रों से मौन भाषा में कह रहे हैं—"बहिन, तुमने मुझसे ऐसी बातें कैसे कहीं?" यह विचार सीता के लिए असह्य था। इससे उन्हें अपने कारावास से भी अधिक कष्ट होता था।

"हाय, मैंने उनके निर्दोष हृदय को न कहने योग्य बातें कहकर चोट पहुंचाई। मेरा पाप तो उस रावण से भी बढ़कर है जो मुझे यहां उठा लाया है।" ऐसी बातें वह बार-बार सोचती और अपनी नासमझी के लिए अपने आपको कोसती।

ऐसे ही विचारों से थककर सीता सोगई। स्वप्न में लक्ष्मण सामने खड़े दिखाई दिये। उन्हें वहां देखकर वह आनन्द से नाच उठी और हर्ष के आंसू बहाती हुई बोली—"तो तुम आ ही गये, भइया! क्या अबतक के मेरे सारे कष्ट स्वप्न थे?"

"हां, मैं सचमुच आ गया हूं, बहिन! अब भय और शोक की कोई बात नहीं। मुझे कभी आपको अकेले नहीं छोड़ना चाहिए था। क्या इसके लिए आप मुझे क्षमा कर देंगी?" लक्ष्मण ने पूछा।

फिर वह हसते हुए बोले—"ओह, आपने भी कैसा हठ किया और उसके कारण हम कितने भयानक संकट में पड़ गये !"

लक्ष्मण की हंसी में सवेरे की ओस पर पडनेवाली सूर्य की किरणों-जैसी चमक थी। दु.ख, आसू और आनन्द से मिली हुई उस हंसी की सुन्दरता का शब्दों द्वारा कैसे वर्णन किया जाय !

"सचमुच मेरा सिर फिर गया था। लेकिन क्या तुम्हारा मुझे इस तरह अकेले छोड जाना ठीक था ? मैंने तुमसे चाहे कितनी ही कड़वी बातें क्यों न कही हों, तुमने अपने बड़े भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा कैसे तोडी ? मुझे तो क्रोध आ गया था और मैंने तुमसे ऐसी बाते कह दी थी जो मुझे नही कहनी चाहिए थी। लेकिन तुम्हे तो उसके कारण अपने भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा नही तोडनी चाहिए थी," सीता ने कहा।

"कैसी प्रतिज्ञा ? क्या तुमने राम से कोई प्रतिज्ञा की थी ? मैंने तो इसके विषय मे कुछ नही सुना," नारद मुनि बोले, जो वहा न मालूम कैसे आ पहुचे थे। वह ऐसा ही करते थे और सपनो में ऐसा ही होता भी है।

"क्या लक्ष्मण ने प्रतिज्ञा नही की थी ?" सीता बोली। "आप-जैसे पूजनीय पुरुष को ऐसी बाते नही कहनी चाहिए।" स्पष्टत: जगत-जननी सीता को नारद से कोई भय नही था।

नारद ने उत्तर दिया—"तुम्हारी प्रार्थना पर राम लक्ष्मण से यह कहकर कि जहा खड़े हो वही रहना शीघ्रता से हिरन के पीछे भाग गये। उस समय वह लक्ष्मण की बात सुनने के लिए रुके नही। लक्ष्मण ने अपने मुह से कोई प्रतिज्ञा नही की।"

यह सुनकर लक्ष्मण हसे और बोले—"मुझे इस प्रकार के वाद-विवाद अच्छे नही लगते। सम्भव है ऋषियों मे ऐसी वाचालता निषिद्ध न हो। मै एक सिपाही हूं। जब राम ने कहा 'यहा रहो' और मैं कुटिया के द्वार पर खड़ा हो गया तो वह मेरी ओर से प्रतिज्ञा ही हुई।"

"जाने से पहले मेरे पति मुझे अपने इस भाई को सौंप गये थे," सीता ने कहा ।

"अरे, जब तुम दोनों ही एक दूसरे की हां-में-हां मिलाने लगे तो मुझे क्या पड़ी है ? है तो यह तुम्हारा ही आपस का झगड़ा," नारद बोले ।

"यदि मैंने कोई बात कह दी थी तो उससे तुम्हारा बिगड़ ही क्या सकता था ?" सीता ने कहा । "हमने अपना नगर, अपना महल, केवल वचन निभाने के लिए ही तो छोड़ा था ! हमने भरत और प्रजा की प्रार्थनाएं इसी कारण तो नहीं मानीं कि हम समझते हैं कि एक बार वचन दे देने पर उसे, चाहे कुछ भी हो जाय, निभाना अवश्य चाहिए !"

"अपनी कही हुई असहनीय बातें याद दिलाकर मेरा हृदय मत दुखाइये," लक्ष्मण ने कहा ।

"चाहे सारा संसार तुम्हें लांछित क्यों न करता, तब भी क्या तुम्हारे लिए मुझे इस भांति अकेले छोड़कर चला जाना उचित था ?" सीता ने पूछा ।

"मैं मानता हूं कि आपका कहना यथार्थ है । जब मैं आपको छोड़कर आधी दूर चला गया तो मेरे मन में भी ऐसे ही विचार उठे—'भाभी की गालियों से मेरा क्या बिगड़ेगा ? मुझे तो केवल अपने भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा निभानी चाहिए,' मैंने मन-ही-मन में सोचा और घूमकर दस डग पीछे लौटा ।"

तभी साधु के वेष में छिपा हुआ रावण, जो सीता का दिया हुआ फल खा रहा था, एकाएक भय से कांप उठा । यह उस समय की बात है जब लक्ष्मण वापस मुड़े थे । रावण को बुरे शकुन होने लगे और उसका बायां हाथ और बाईं आंख फड़कने लगी । उसने फल को पत्ते पर रख दिया और द्वार की ओर देखा । उसे भय हुआ कि कहीं लक्ष्मण न आ जायं और मुझे भागना पड़े ।

"डरो मत," नारद ने राक्षस से कहा ।

झगड़ा करानेवाले यह ऋषि न मालूम कहासे और कैसे टपक पड़े और झट बीच में बोल उठे ।

यह कहानी आश्चर्यजनक, अशुद्ध और असम्बद्ध-सी मालूम होती है। कहा अशोक वाटिका और कहा पंचवटी ! किन्तु विस्मय की कोई बात नही। यह स्वप्न था और वह भी एक दुखी नारी का । ऐसे स्वप्नो में न कोई नियम होता है, न कारण ।

"मै कुटिया की ओर दस डग बढा," लक्ष्मण ने कहा, "परन्तु तभी आपकी लाल-लाल आखे और चढी हुई भौहे मेरे नेत्रो के सामने घूम गई। ऐसा लगा मानो आपने कहा 'दुष्ट ! तू फिर आ गया' और मेरी ओर फुफकार मारकर काली की तरह झपटी। बस मै वापस चला गया और मुझे अपने भाई के सामने की हुई प्रतिज्ञा की सुध नही रही । केवल मेरा अभिमान और आपके शब्द मेरा मस्तिष्क विचलित बनाते रहे । 'होने दो जो कुछ भी होना है, मै अपना मान नही खोऊंगा,' मैंने दात पीसते हुए कहा और चल दिया जिधर हिरन के रोने का शब्द सुनाई दिया था ।"

"यदि तुम उस समय आ जाते तो मै बच जाती," सीता ने रोकर कहा।

"जो हो गया, सो हो गया। उठिये, अब चलें। पिछले दुःख को क्यों याद करती है ? अब तो मै यहां हूं," लक्ष्मण बोले ।

"भइया, मैने बड़ा अन्याय किया है। क्या ऐसा कोई भी प्रायश्चित्त नही, जो मै इस पाप के लिए कर सकू ?" सीता ने पूछा ।

"उठिये, खड़ी होइये," लक्ष्मण ने कहा और सीता को हिलाकर जगा दिया ।

सीता उठकर बैठ गई। वहा न लक्ष्मण थे, न नारद; केवल राक्षसियां उन्हें घेरे खड़ी थी। उनमें-से एक ने कहा—"उठो, उठो, अब तक क्यों सो रही हो ? महाराजा रावण आ रहे है । तुरही की आवाज नही सुनाई दे रही है ? और देखो, जैसा राजा कहे वैसा करना,

बेकार ज़िद न करना। राम-लक्ष्मण तो समुद्र-पार है, वे यहा किसी तरह भी नही पहुंच सकते। अब तुम रावण की स्त्री हो, उन्हें कृतज्ञता के साथ स्वीकार कर लो। सुख और सौभाग्य को ठुकराकर व्यर्थ ही विरोध में जीवन क्यों नष्ट करती हो ?"

सीता ने ठंडी सास ली और वृक्षों और झाड़ियों ने भी उनका साथ दिया।

इसके दूसरे दिन सागर लाघकर हनुमान सचमुच लका जा पहुचे। सीता का सपना हनुमान के पहुचने की पूर्व सूचना मात्र था। जो कुछ होनेवाला था वही उन्हें सपने मे दिखाई दिया था। चूकि वह हनुमान को नही जानती थी, इसलिए हनुमान के बदले लक्ष्मण दिखाई दिये थे।

इसके बाद अशोक वाटिका मे क्या हुआ, इसे कौन नही जानता ? जब सीता को पता लग गया कि हनुमान कौन है तो उन्होंने पहले लक्ष्मण के ही कुशल-क्षेम की बात पूछी और अपने पति राम के विषय में बाद में बातचीत की।

लक्ष्मण को अपमानित करने का दुःख उनके हृदय मे काटे की तरह चुभता रहता था। जो दुःख किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा बटाया नही जा सकता वह सबसे अधिक कष्टदायक होता है।

यदि हम सीता के कष्ट और दुःख का स्मरण करें तो कुछ हद तक अपने कष्टों को भूल सकते है। कहा जाता है कि हनुमान अमर है, वह सदा हमारे पास हमारी सहायता करने को तत्पर रहते है। कष्ट आने पर हमें 'राम राम' कहकर उसका डटकर सामना करना चाहिए। हनुमान अवश्य हमारी रक्षा को आयेगे।

: ८ :

मा

रॉयप हमारे यहा अखबार बेचने का काम करता था। था तो वह ईसाई का लडका, लेकिन उसे इस बात की आदत थी कि रात के समय वह किसी विनायक की मूर्ति के सामने जाकर दण्डवत करता और फिर उसके पीछे लेटकर सो जाता। वह कभी यह मानने को तैयार नही होता कि सोने के लिए इससे भी कोई अच्छी जगह हो सकती है।

अगर कोई उससे पूछता कि तू ऐसी जगह क्यो सोया करता है तो वह केवल मुसकरा देता और ज्यादा पूछने पर कहता—"इससे मेरे मन को शान्ति मिलती है।"

"तेरा बाप ईसाई था या तू ही ईसाई हो गया है?" कुछ लोग उससे पूछते। इसका वह गर्व के साथ उत्तर देता—"मै ही ईसाई हो गया हूं," और फिर अखबार बेचने चल देता।

कन्दस्वामी ऐयर कृष्णगिरि तालुका के पजपट्टी गाव के एकाउन्टेंट थे। एक दिन उनकी पत्नी शैतान-कुन्ड से नहाकर ऊपर आते समय फिसलकर पानी मे गिर पडी। डूबते वक्त तक वह लगातार यही चिल्लाती रही—"हाय, मेरे बच्चे का क्या होगा? उस समय वेकट-राय केवल छ: महीने का था। कुछ साल बाद कन्दस्वामी ऐयर ने दूसरा ब्याह कर लिया। कुछ दिनों तक तो सब कुछ ठीक ढंग से चलता रहा, लेकिन बाद में बालक वेकटराय को यह महसूस होने लगा कि मेरे पिता और सौतेली मा दोनों ही मुझे नही चाहते। धीरे-धीरे उन्हें उससे अका-

रण ही घृणा भी हो गई। सौतेली मा उसे यह कहकर पीटती कि यह जानबूझकर मेरा कहना नही मानता और जब वह रोता हुआ पिता के पास पहुंचता तो वह भी उसे पीटने। यह बात अभागे बच्चे की समझ मे न आती। अगर कोई कुत्ते को पीटता या उसपर पत्थर फेककर मारता और वह दर्द मे चीखता हुआ भागता तो उसे देखकर वेंकटराय के हृदय मे भ्रातृत्व की भावना जाग उठती और वह देर तक उस बेचारे जानवर को खडा-खडा देखता रहता। अब वह सात साल का था और स्कूल जाने लगा था। लेकिन पढाई मे उसका मन नही लगता था। उसके मास्टरो ने पहले उसे डाटा-धमकाया और फिर थोडा मार-पीटा भी, लेकिन अन्त मे उसे गधा समझकर छोड़ दिया।

एक दिन उसके स्कूल का एक मित्र शौरिमत्तु उसे अपने घर ले गया। उसकी मा द्वार पर खडी प्रतीक्षा कर रही थी। उसके पहुचते ही उसने उसे छाती से लगाकर प्यार किया और फिर हाथ पकड़कर भीतर ले गई।

"तुम्हारे साथ कौन आया है?" उसकी मा ने पूछा।

"वह मेरी क्लास मे पढता है और गाव के एकाउन्टेट का लड़का है। म उसे अपने साथ खेलने के लिए बुला लाया हू। क्या उसे कुछ खाने को दे सकती हो?"

शौरिमुत्तु के घर की हर चीज वेंकटराय को बडी अच्छी लगी। वह उसके साथ दो-तीन दिन तक उसके घर गया।

"मेरी मा मुझसे इतनी मुहब्बत क्यो नही करती जितनी शौरि की मा उससे करती है?" उसने अपने मन में सोचा। एक दिन उसने शौरि को अलग ले जाकर पूछा—"मा कैसे बनाई जाती है? तुम्हे अपनी मा कैसे मिली?"

शौरिमुत्तु इसका जवाब नही दे सका। उसकी समझ मे नही आया कि बच्चों को अपनी माताएं कैसे मिलती है। आखिरकार उसने कहा—"हमें मा भगवान् देता है। पता नहीं क्यो उसने तुम्हें अच्छी मा नहीं दी। शायद वह तुमसे नाराज है।"

अपनी मा के आने पर उसने कहा—"मा, पता नही क्यो वेंकटराय की मा उसे हमेशा मारा करती है। क्या उसे तुम-जैसी अच्छी मा नही मिल सकती ?"

मेरी ने मुसकराकर कहा—"अगर तुम अच्छे होगे तो तुम्हारी मा तुम्हे नही पीटेगी।" यह कहते हुए उसने शौरि के मुह को थपथपाया और उसका सिर चूम लिया।

"मुझे मेरी मा कब मिली ? तुम शौरि की मा कब बनी ?" वेंकटराय ने पूछा।

मेरी लडके के भोलेपन पर दया दिखाते हुए मुसकराई और बोली—"क्या यह बात तुम्हे किसीने नही बताई ? जब तुम नन्हे-से थे तभी तुम्हारी मा शैतान-कुन्ड मे गिर कर डुब गई। उसके बाद तुम्हारे बाप ने दूसरा ब्याह किया। ब्याह के वक्त मै वहा थी और मुझे पान-सुपारी मिली थी। जो तुम्हे पीटती है वह तुम्हारी अपनी मा नही है, वह तो बेचारी मर गई।"

"तो मेरी मा अब कहा है ?" वेंकटराय ने आखे फाड़कर पूछा।

"बेटे, अगर तुम भगवान् से प्रार्थना करोगे तो तुम्हारी मा मिल जायगी।"

"भगवान् कहा है ? मै उसकी प्रार्थना कहां करू ?"

"उधर देखो," शौरि की मा ने दीवाल पर लटकती हुई वर्जिन मेरी की तस्वीर दिखाते हुए कहा। वेंकटराय बहुत देर तक खड़ा-खडा तस्वीर देखता रहा। इससे उसमें एक नया जीवन आ गया। वह घर को चल दिया। रास्ते मे एक गिरजा पडता था। एक खिड़की में से उसने भीतर झाककर देखा। वहां भी उसे दीवाल पर एक बडी तस्वीर दिखाई दी। वह उसे टकटकी बांधकर देखता रहा। धीरे-धीरे ऐसा मालूम हुआ मानो तस्वीर मे जान आ गई और वह दीवाल से उतर आई। वह एक स्त्री थी, प्रेम की साक्षात् मूर्त्ति। वह आई और वेंकटराय के पास खड़ी हो गई। उसे लगा मानो उसकी प्रार्थना

सुनकर सचमुच उसकी मा उसके पास आ गई। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा।

"मेरे बच्चे, मेरे प्यारे वेंकटराय," उसने उसे कहते हुए सुना। कितनी प्यारी आवाज थी! उसे अपने मुंह पर उसके हाथ का स्पर्श अनुभव हुआ और उसे रोमांच हो आया। आखिर उसे अपनी मा मिल ही गई। उसने उसे छाती से लगाकर प्यार किया और कहा—"मेरे पीछे-पीछे आओ।" वह आगे-आगे चलने लगी और चलते-चलते वे दूर निकल गये। बीच-बीच में वह रुकती और वेंकटराय को उठाकर प्यार कर लेती।

"मेरे बच्चे, तूने इतने दिन तक दु:ख उठाये! तूने मुझे पहले क्यों नही बुला लिया?" उस स्त्री ने कहा।

"मुझे पता नहीं था, मा!" वेंकटराय बोला और रोने लगा।

"रो मत," मा ने कहा और अपनी साडी के छोर से वेंकटराय के आंसू पोंछ डाले।

वे चलते रहे और अन्त में एक ईसाई पादरी के मकान पर पहुचे। वेंकटराय फाटक पर खड़ा हो गया। "यह बहुत अच्छी जगह है, आओ, यही बाग़ में बैठें। घर जाने पर तो मा मारेगी," वह बोला और अन्दर जाने की चेष्टा करने लगा।

"वहा मत जाओ," उसकी मा ने उसे सावधान करते हुए कहा।

"क्यों? वहा जाने से क्या होगा?" वेंकटराय ने पूछा।

"कोई आ जायगा और फिर मैं नही ठहर सकूंगी, मुझे चला जाना पड़ेगा," मा ने कहा।

"मुझे बहुत प्यास लगी है। चलो, बाग के कुए से पानी पीकर लौट आयेंगे," यह कह वेंकटराय मा का हाथ पकड़कर भीतर चला गया।

"लड़के, तुम कौन हो?" पादरी ने मुह से सिगार निकाल हाथ में पकड़ते हुए बच्चे के पास आकर पूछा। मा अदृश्य हो गई।

"मा, मा," कहकर वेकटराय चीख पड़ा। वह बाग मे इधर-उधर दरख्तो के बीच भागा-भागा फिरा और चिल्लाता रहा—"मा, तुम कहा चली गई ? लौट आओ, लौट आओ।"

पादरी उसे शान्त कर अपने घर ले गया और थोड़ा पानी पिलाने के बाद बोला—"बच्चे तुम कौन हो ?" उस समय वेकटराय को बड़ा तेज बुखार था।"

"बच्चे, तुम्हें सिर्फ ईशू बचायगा। खुदा का वही एक लाजवाब बेटा है। देखो यह उसकी तस्वीर है। वह तुम्हारी रक्षा करेगा। और इधर देखो, यह उसकी मा मेरी की तस्वीर है, जिसने उसे पृथ्वी पर जन्म दिया था। वही तुम पर दया करके तुम्हे यहा लाई थी।"

"नही, नही, वह 'मेरी' नही, मेरी मा थी। मै उसे ढूढ निकालूगा। मै उसके बिना नही जी सकता।" तेज बुखार मे इस तरह बक-बक करता हुआ वेकटराय भाग खड़ा हुआ। अधेरा हो चुका था। पादरी ने उसका पीछा नही किया।

इधर-उधर टक्करे खाता हुआ वह बैलगाड़ियो के अड्डे के पास विनायक के एक छोटे-से मन्दिर में पहुंचा। पैंठ का दिन न होने के कारण वहां कोई भी आदमी नही था। मूर्त्ति के सामने किसी का जलाया हुआ एक छोटा-सा दीप टिमटिमा रहा था। वेकटराय जाकर मूर्ति के सामने गिर पड़ा और पड़ा-पड़ा "मा, मा" बड़बड़ाता रहा। जल्दी ही उसे गहरी नीद आ गई। बीच रात मे एकाएक वह उठ बैठा। उसकी मा उसके पास बैठी थी।

"मा !" वेकटराय चिल्लाया और उसके गले से लिपट गया। "तुम फिर तो मुझे छोड़कर नही जाओगी," उसने रोकर पूछा।

"नही, अब नही जाऊंगी," मा ने वादा किया और उसका मुह थपथपाते हुए उसे प्यार किया।

"अगर तुम रोज यहां आकर सोया करोगे तो मै भी जरूर आया करूंगी। दिन मे मै तुम्हारे पास नही आ सकती," वह बोली और पौ फटने से पहले ही अदृश्य हो गई।

उस दिन से वेंकटराय सदा उसी मन्दिर में सोने जाया करता। उसके चेहरे पर एक नई ज्योति आ गई थी और वह सारे दिन मनमाने गीत गाता हुआ इधर-उधर फिरा करता था। गाववाले समझते थे कि लडका पागल हो गया है और उसपर तरस खाते थे। लेकिन सच बात यह थी कि वेंकटराय आनन्द के सागर में तैर रहा था। रात को वह हाथ जोडकर मूर्त्ति की तीन बार परिक्रमा करता और प्रार्थना करने के बाद उसके पीछे सो जाता। उसकी मा हर रात को बिना नागा उसके पास आती। बहुत दिनो तक यही क्रम चलता रहा।

"बेचारा पागल लडका! कितनी छोटी उम्र में यह बीमारी लग गई इसे!" कुएं पर औरतें कहती।

"यह सब बहानेबाजी है," कदम्बामी की पत्नी कहती।

"सच है या झूठ, यह तो भगवान् ही जाने," कदम्बामी कहते और अपने मन को समझाने की कोशिश करते। उनमें उन्हें क्रोध आने लगा और गाव के हसमुख बच्चों को देखकर ईर्ष्या होने लगी।

एक दिन शाम को जब वेंकटराय रोज की तरह मन्दिर में सोने गया तो वहा विनायक की मूर्त्ति नही थी। मन्दिर धराशायी हो पत्थरो और खम्भों का ढेर बना पडा था। किसीने उसे फिर से बनवाने के लिए गिरवा दिया था। काम शुरू हो गया था और मूर्त्ति दूसरे स्थान पर रख दी गई थी।

बेचारा लड़का उन पत्थरों के बीच बैठा-बैठा सारी रात जागता रहा, परन्तु उसकी मा नही आई। उसका सपना टूट गया और ससार एक बार फिर उसके लिए प्रेम से रिक्त हो गया।

वेंकटराय ने गिरजा के पास जाकर पुरानी खिडकी में-से झाककर देखा। दीवाल पर उसे मेरी की तस्वीर दिखाई दी। वह उसकी मा-जैसी लगती थी, लेकिन इस बार उतरकर उसके पास नही आई; एक तस्वीर की तरह दीवाल पर ही टगी रही।

कितने ही दिनों तक वेंकटराय टूटे हुए मन्दिर और गिरजा के इधर-उधर इस तरह चक्कर लगाता रहा जैसे किसी खोई हुई चीज को

ढूढ रहा हो। एक दिन वह पादरी के पास जाकर बोला—"पिता, मैं ईसाई बनना चाहता हूं।"

पादरी ने उसे बुलाकर बड़ी दयालुता के साथ बातचीत की। बाद में उसने कंदस्वामी ऐयर से कहा—"मा मेरी की मेहरबानी से तुम्हारे लड़के का पागलपन दूर हो गया है। वह ईसाई बनना चाहता है। हमें उसकी इच्छा के विरुद्ध नही चलना चाहिए।"

"ऐसा नही हो सकता, हम ब्राह्मण है," कदस्वामी ने उत्तर दिया और फिर पादरी ने इस बात पर ज्यादा जोर नही दिया।

"जाने दो उसे। इसके सिवा और चारा ही क्या है? झूठ हो या सच, भगवान् करे उसका पागलपन दूर हो जाय और वह कही खुश रहे," ऐयर की पत्नी ने कहा।

"राम, राम! ऐसी बातें न कहो," कदस्वामी ऐयर ने जवाब दिया।

लेकिन एक दिन वेंकटराय गाव से ग़ायब हो गया और ऐसा गायब हुआ कि किसीको पता नही चला कि कहां गया।

मद्रास जाकर वेंकटराय ने एक बड़े पादरी से बपतिस्मा ले लिया और अपना नाम बदलकर रॉयप रख लिया। एक अखबार के मालिक ने उसे अखबार बेचने पर रख लिया। उसके मा-बाप को इसका कुछ पता नही चला।

ईसाई हो जाने पर भी रॉयप विनायक की कोई मूर्त्ति देखता तो हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता। उसकी राते सदा विनायक की किसी मूर्त्ति के पास ही बीततीं। अब भी ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अपनी मा के लौट आने की प्रतीक्षा कर रहा है। अखबार बेचनेवाले लडके उसे बहुत चाहते हैं।

× × ×

"यह तो अजीब कहानी है! भला इसका कोई आदर्श भी है! ज़रा समझाइये तो," सम्पादक ने पूछा।

कोई आदर्श नहीं है। यह तो मैंने सिर्फ अपने चित्त की शांति के लिए लिखी है," लेखक ने मुसकराकर उत्तर दिया।

"आप तो बिलकुल रॉयप-जैसे हंसते हैं। क्या यह कहानी विधुरों को दूसरा ब्याह करने से रोकने के लिए लिखी गई है ?"

"नहीं, नहीं; ब्याह करना तो हमेशा अच्छा होता है।"

"तो क्या यह विनायक की पूजा का समर्थन करने को लिखी गई है ?

"पूजा सबकी अच्छी होती है। आप इस कहानी का यह उद्देश्य मान सकते हैं।"

"तो शायद यह सौतेली माताओं के लिए चेतावनी है ?"

"क्या सौतेली माएं भी आपका अखबार पढ़ती हैं ? तब तो यह अच्छी बात है।"

"आजकल की सौतेली माएं बच्चों की देखभाल सगी माओं से भी ज्यादा अच्छी तरह करती हैं।"

"हो सकता है। जमाना बदल गया है। लेकिन सौतेली माएं हर तरह की होती हैं, यह तो आप जानते ही हैं। एक सास जिसे अपनी छोटी-सी बहू की देखभाल करनी पड़ती है, एक तरह की सौतेली मा होती है। इसी तरह वह स्त्री भी जो अपने यहां किसी छोटी लड़की को नौकर रखती है, सौतेली मा ही होती है। किसी पिल्ले को पालनेवाला आदमी भी सौतेली मा का ही काम करता है। सारांश यह कि जिस किसी भी स्त्री या पुरुष पर विकास पाते हुए मस्तिष्क और शरीर की देखभाल करने की जिम्मेदारी होती है वही उसके लिए सौतेली मा हो जाता है। स्वाभाविक प्यार तो सिर्फ मा का होता है। लेकिन वह एक आदर्श है, जिस तक दूसरे प्रेमों को पहुंचाने की चेष्टा करनी चाहिए। दूसरों को चाहिए कि वे भी मा की ही तरह चौकसी, समझदारी और पवित्रता के साथ व्यवहार और प्रेम करने का प्रयत्न करें। दूध बढ़ते हुए बच्चे के शरीर को पोषण देता है, लेकिन मस्तिष्क की बढ़ती के लिए प्यार के दूध की आवश्यकता है। इसके बिना बच्चे की आत्मा मुरझा जाती है।"

"बस, रहने दीजिये। किसीने आपसे लेक्चर पिलाने के लिए नहीं कहा था। आपने मेरे सिर मे दर्द कर दिया। हमसे जितना भी होता है हम अपने अखबार बेचनेवाले लड़कों की चिन्ता रखते है। वे सुस्त और शैतान होते हैं, फिर भी हम इन बातो पर ध्यान नहीं देते।"

"यह सुनकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। रॉयप की अच्छी तरह देख-भाल किया कीजिये और अगर कभी आपको उसके व्यवहार मे विचित्रता दिखाई दे तो उस पर क्रोध न करके उसे विनायक के मन्दिर मे भेज दिया कीजिये।"

: ९ :

शान्ति

वह चौदह साल की थी। "लक्ष्मी, मै चार घडे पानी खीच चुकी, चार घड़े और खीचकर हमाम भर दे। मै चौके मे जा रही हू," सास ने कहा।

बहू ने घड़ा कुएं मे डाला और हाथ बढाकर रस्सी नीची कर दी, ताकि घडा भर जाय। जब वह उसे ऊपर खीचने लगी तो उसका बायां हाथ दुःखने लगा, यहातक कि वह घड़े को मुश्किल से खीच पाई। वह हाय-तोबा करना नही चाहती थी, इसलिए पैर से रस्सी दबाकर दाहिने हाथ से पानी खीचने लगी। इस तरह चार या पाच घड़े पानी खीचकर उसने हमाम भर दिया।

लक्ष्मी की सास का घराना ग़रीब और पुराने ढंग का था। जवान होते ही बहू का गौना कर लिया गया और वह अपने पति के साथ रहने के लिए बुला ली गई। सास बहू पाकर बड़ी खुश हुई। जब किसी पर हुक्म चलाने को मिल जाता है तो किसे खुशी नही होती!

सास जो काम बताती उसे लक्ष्मी मेहनत और प्रसन्नता से करती, लेकिन पानी खींचना उसे वश से बाहर की बात मालूम होती। दो दिन तक उसने बड़ी मुश्किल से काम चलाया। तीसरे दिन रात को उसने झिझकते हुए अपने पति से कहा--"मुझे तुमसे कुछ कहना है; नाराज तो न होगे?"

"कहो, क्या बात है?" नटेश ने दयालुता के साथ पूछा।

"तुम नाराज़ होगे," लक्ष्मी ने फिर कहा ।

"डरो नही, मै वादा करता हू कि नाराज नही हूगा, बताओ, क्या बात है ?" नटेश ने आश्वासन देते हुए कहा ।

"मुझसे कुएं से पानी नही खीचा जाता, मेरे हाथ मे दर्द होने लगता है। अगर मै मा से कहूंगी तो डर लगता है कि कही वह ग़लत न समझ बैठे," यह कहकर लक्ष्मी ने अपने पति की ओर इस तरह देखा जैसे उससे कोई बड़ा अपराध हो गया हो ।

पहले तो नटेश को क्रोध-सा आया। उसने सोचा कि शायद सास-बहू के प्रचलित झगड़े का आरम्भ हो रहा है । लेकिन जब उसकी छोटी-सी पत्नी ने उसे अपनी कठिनाई बतलाई तो उसकी समझ मे आ गया और उसे विश्वास हो गया कि यह ज़बरदस्ती लड़ने के लिए ऐसा नही कर रही है, बल्कि इसके हाथ मे कुछ खराबी है ।

उस रात तक नटेश बहुत देर तक सो नहीं सका । सुबह वह एक नये इरादे के साथ उठा । उठने के बाद वह अक्सर थोड़ी-सी कसरत किया करता था। उसने सोचा कि अगर इसके बजाय मै पानी खींचकर हमाम भर दिया करूं तो कसरत की कसरत हो जायगी और मेरी स्त्री की परेशानी भी दूर हो जायगी । उसने उसकी बांह के बारे में किसी डॉक्टर से सलाह लेने का इरादा भी किया ।

× × ×

"नटेश, पानी तू क्यों भर रहा है ? यह तो तेरी बहू का काम है। क्या तू मुझे इस बात की सजा दे रहा है कि मैने उससे घर के लिए थोड़ा-सा पानी भरने को कह दिया है ?" नटेश की मा ने क्रोध म भरकर पूछा ।

"नही मा, यह बात नही है । यह काम मै उसकी खातिर नही, बल्कि इसलिए कर रहा हूं कि इससे मेरी तन्दुरुस्ती को फ़ायदा पहुंचेगा । तुम दोनों घर का काम किया करो; मैं कसरत के खयाल से रोज़ सवेरे पानी भर दिया करूंगा," नटेश ने कहा । उसने सोचा कि

अगर मैं अपनी स्त्री के हाथ की बात मा से कह दूंगा तो वह चिडचिड़ाने लगेगी। इसलिए उसने सच्ची बात नही बताई।

लेकिन उसकी मा बराबर भुनभुनाती रही। उसने सोचा कि यह करतूत बदतमीज़ बहू की है। वह लक्ष्मी को बुरा समझने लगी।

नटेश की मा का नाम पार्वती था। उसकी बड़ी लड़की सीता विधवा हो जाने के बाद से उसीके पास रहती थी। वह दिन-भर आलसियों की तरह पड़ी रहती और दूसरों मे ऐब निकाला करती।

"नटेश का तन्दुरुस्ती और कसरत का बहाना बिल्कुल झूठा है, यह सब बहू की शरारत है। नटेश की तन्दुरुस्ती अबतक तो बिल्कुल अच्छी थी; अब क्या हो गया?" सीता ने कहा।

"ज़रा सोचो तो भला, मर्द घर के लिए पानी खींचना हुआ कैसा लगेगा! कितनी शर्म की बात है!" मा बोली।

"रानीजी को आराम करने दो। हमाम भरने के लिए पानी मैं खींच दिया करूंगी," सीता ने कहा।

इस तरह की बकझक चलती रही। नटेश के गृहस्थ-जीवन का नया बाग़ कांटेदार झाड़ियों से भर गया और वहा प्रेम को पनपने को जगह ही नही रही। लक्ष्मी की आत्मा बड़ी दुःखी थी।

उस दिन लक्ष्मी सोकर जल्दी उठी और उसने चुपके से कुए के पास जाकर पहले दिन की तरह अपने पैर मे रस्सी दबाकर किसी तरह हमाम भरने के लिए काफ़ी पानी खींच लिया। इसके बाद वह फिर खाट पर जाकर सो गई। जब और दिन की तरह नटेश उठकर पानी खींचने गया तो उसने देखा कि हमाम भरा जा चुका है। उसने समझा कि मा ने भर दिया होगा और वह चुपचाप अपने काम में लग गया।

यही बात दूसरे दिन भी हुई। "क्या किया जाय इसके लिए? मा नही चाहती कि मैं पानी खींचकर अपनेको तकलीफ पहुंचाऊं," नटेश ने मन-ही-मन में सोचा और किसीसे कुछ कहा नहीं। उस रात लक्ष्मी को बुखार चढ आया और उसका हाथ बुरी तरह सूज गया। तब नटेश

की समझ में आया कि बात क्या है। वह बडा परेशान हुआ और खाट पर पडा-पड़ा जागता रहा। कुछ देर बाद उसे नीद आ गई।

"इसके हाथ मे तो कोई जन्म की खराबी है; किन खोटे कर्मो से हम इस पाप को अपने घर उठा लाये ?" नटेश की निर्दय मा ने दूसरे दिन कहना शुरू किया। नटेश यह सहन नही कर सका। वह मा से झगड़ पड़ा और सख्त दर्द मे पडी हुई बीमार पत्नी पर भी बात-बात पर बिगडने लगा। इसी तरह दो दिन बीत गये। तब उसने अपने ससुर को लिखा कि आकर अपनी लडकी को ले जाओ। ससुर आ गया।

"तुम्हारी लडकी के हाथ मे कोई जन्म की खराबी है। तुमने हमे यह बात क्यो नही बताई थी ?" पार्वती ने पूछा।

"नही, यह जन्म की खराबी नही है। कभी-कभी इसका हाथ सूज जाया करता था, बस इतनी-सी ही बात है। अब मै इसे घर ले जाऊगा और बिलकुल अच्छी हो जाने पर यहा लाऊगा," लक्ष्मी के बाप ने अपने को शान्त रखते हुए कहा। वह अपनी लडकी को बुखार चढे मे ही घर ले गया।

"इतने रिश्ते आ रहे थे कि पूछो मत ! क्या हमने उन सबको इसीलिए नामजूर किया था कि हमारे लडके को एक अपाहज लड़की और एक हजार रुपया मिल जाय ? क्या हमारे सिर पर से कर्जा उतारने का कोई उपाय नही था ? हमारा भाग तो देखो।"

मा-बेटी रोज इसी तरह बाते किया करती। नटेश को ससुर का एक पत्र मिला, जिसमे लिखा था कि लक्ष्मी के हाथ की सूजन उतर गई है और बुखार भी कम है, लेकिन अभी वह खाट मे उठ नही सकती।

एक महीने बाद दूसरा पत्र आया जिसमे लक्ष्मी के पिता ने सूचना दी कि बीमारी ने पलटा खाया है और लक्ष्मी को फिर से बुखार चढ़ आया है।

"यह बीमारी अच्छी नही हो सकती; यह पिछले कर्मो का फल है," पार्वती ने कहा।

"शायद ऐसा ही हो। हमे अपने पापों का दण्ड भोगना ही चाहिए," नटेश बोला।

"तुम दूसरा ब्याह कर लो, मै यह बात ज्यादा दिन नही सह सकती," मा ने कहा।

"बकवास मत करो," नटेश बोला और अपने दफ्तर चला गया। वह तालुका के दफ्तर मे क्लर्क था।

इसी तरह एक वर्ष बीत गया। एक दिन पार्वती का छोटा भाई अपनी बारह साल की लडकी मीनाक्षी को लेकर नटेश के घर आया।

"देखो, कितनी अच्छी है यह लडकी! तुम्हारे ब्याह के वक्त यह बहुत ही छोटी थी, नही तो हम जरूर इससे तुम्हारा ब्याह कर देते। अब हम इसके लिए वर की तलाश मे क्यो टक्करे खाते फिरें ? यह हमारी बच्ची है, हमारे ही घर मे आ जाय," पार्वती ने कहा।

शुरू-शुरू मे ऐसी बातो से नटेश को घृणा मालूम हुई। लेकिन किसी बात के पीछे पडे रहने पर वह पूरी होकर ही रहती है। दूसरे साल चैत्र के महीने मे तिरुपति देवता के सामने नटेश का दूसरा ब्याह हो गया।

२

लगभग छ महीने बाद मीनाक्षी अपने पति के घर पहुंची। पार्वती उस पर बड़ी दयालु थी और मीनाक्षी स्वय बड़ी फुर्तीली और अच्छी लड़की थी। अवस्था में छोटी होने पर भी वह घर का सारा कामकाज कर लेती थी। लेकिन इन सब बातो के होते हुए भी नटेश के हृदय में शान्ति नही थी। कोई बात उसे सताती रहती थी।

"तुम मुझसे प्रेम क्यो नही करते ?" मीनाक्षी ने पूछा।

"तुम ऐसा क्यो सोचती हो कि मैं तुमसे प्रेम नही करता ? मै तुम्हे डांटता या पीटता तो नही ?" नटेश ने कहा।

"तुम मेरे सवाल का जवाब नही दे रहे हो। असल बात तो यह है कि तुम्हारा मन कृष्णपुर में रहता है," मीनाक्षी बोली।

कृष्णपुर उस गाव का नाम था जहा लक्ष्मी बीमार पड़ी हुई थी। नटेश के दूसरे ब्याह के थोड़े दिन बाद ही लक्ष्मी का बुखार कम हो गया और उसके हाथ की सूजन भी उतर गई। जल्दी ही वह बिलकुल चंगी हो गई।

"देखो उसकी मक्कारी ! मैंने सुना है कि अब वह अपनी मा के घर का सारा पानी भर लेती है और यहां उसे चार घड़े खींचने भी भारी थे" पार्वती ने चिल्लाकर कहा ।

"और अब वह मक्कार यहां आने की सोच रही है। ऐसा मालूम होता है कि मेरे ग़रीब लड़के को दो-दो लुगाइयों का बोझ सम्हालना पड़ेगा। यह नामुमकिन है," उसने फिर कहा।

"यह तो कुछ भी नही है, मा ! तुमने उसके चालचलन के बारे में भी कुछ सुना है ?" सीता ने पूछा।

"अरे, रहने भी दे उस बेशर्मी के जिक्र को," मा ने कहा।

"मैं तो यही चाहती हूं कि ये बातें नटेश के कानो तक न पहुंचने पाये, लेकिन दुनिया का मुह कौन पकड सकता है ?" सीता बोली।

परन्तु कृष्णपुर के लोगो मे ऐसी कोई चर्चा नही थी। वे सब लक्ष्मी पर तरस खाते थे और कहते थे—"यह अन्याय तो देखो ! थोड़े दिन बीमार रहने की वजह मे ही बेचारी को छोड़ दिया !"

"ऐसा लगता है कि इसके पति ने दूसरा ब्याह कर लिया है। कैसा खुल्लमखुल्ला अन्याय है यह ! हीरा-जैसी लड़की की जिदगी ख़राब कर दी," कोई-कोई कहता।

"उन्हें अदालत के सामने ले चलकर खडा करना चाहिए, जिससे कुछ सबक़ तो मिले," दूसरे कहते।

इसी प्रकार कुछ दिन बीत गये। पहले तो लक्ष्मी को अपना मुह दिखाते भी लज्जा आती थी और वह घर में बंद रहती थी। लेकिन इस तरह वह कितने दिन रह सकती थी ? वह नदी किनारे हनुमान जी के मन्दिर में जाने लगी। नदी में नहाकर वह मूर्त्ति के सामने एक फल चढ़ाती और प्रार्थना करती—"हे पिता, तुमने एक बार सीता को कष्ट से उबारा था। तो फिर मेरी ओर कृपा-दृष्टि क्यों नहीं करते ?" इसी प्रकार वह प्रति दिन देवता के सामने प्रार्थना करती।

ऐसे ही दो वर्ष और बीत गये। "मैंने ज़रूर पिछले जन्म में कोई बड़ा पाप किया होगा," लक्ष्मी अपने मन को समझाने के लिए कहती और ईश्वर के प्रति उसका विश्वास कम नहीं होता।

धीरे-धीरे कृष्णपुर में भी कुछ लोग ऐसी ही बातें उड़ाने लगे जैसी लक्ष्मी की सास और ननद को सुहाती थी।

"उन्होंने इसे ऐसे ही थोड़े ही निकाल दिया होगा? कोई न कोई खराबी होगी जरूर," उन्होंने कहना शुरू किया। फिर तो एक की दस बात होने लगी। एक दिन उसकी बड़ी भावज बोली—"कोई लड़की अपने पति से इतने दिन तक कैसे अलग रह सकती है! इससे तो यही अच्छा कि वह जीभ खींचकर मर जाय।" ये बातें उसने ज़ोर से कहीं जिससे कि लक्ष्मी भी सुन ले और उसे ऐसी बातें कहने से रोकनेवाला था ही कौन? लक्ष्मी की मा को मरे बहुत दिन हो चुके थे और उसका बाप बीमार पड़ा-पड़ा मरने की तैयारी कर रहा था। पैर में जहर फैल जाने से वह तीन महीने से खाट पर पड़ा था। उन तीन महीनों में बीमार बाप की सेवा करते रहने से लक्ष्मी अपना दुःख बहुत-कुछ भूली रही।

एक दिन उसके पिता ने अपने लड़के को बुलाकर कहा—"बेटा, मैं अब नहीं बचूंगा, लेकिन मरने से पहले मैं तुमसे एक बात कहना चाहता हूं। तुम जाकर नटेश के हाथ-पैर जोड़ो और लक्ष्मी को वहां छोड़ आओ। वहां उसके साथ जो कुछ भी हो, भगवान् मालिक। मेरे मरने के बाद वह यहां नहीं रह सकती।" यह कहकर वह जोर-ज़ोर से रोने लगा और बेहोश हो गया। तीन दिन तक इसी दशा में रहने के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

३

लक्ष्मी के भाई ने पिता की इच्छा पूरी करने के लिए कई प्रकार से चेष्टा की, लेकिन सब विफल।

"उस बदनाम को मैं अपने घर में कदम नहीं रखने दूंगी," पार्वती ने साफ़-साफ़ कह दिया और उसकी बेटी ने हां-में हां मिलाई। नटेश की

इच्छा तो थी, लेकिन उसे इतना साहस नही हुआ कि लक्ष्मी को फिर से अपने पास रख ले। उसने उसके भाई को यह कहकर वापस भेज दिया कि अब मैं लक्ष्मी को नही रख सकता।

लक्ष्मी रोज की तरह हनुमान-मन्दिर मे पूजा कर पास ही बैठी रो रही थी।

तुम रो क्यों रही हो ?" वहा खड़े हुए एक ग्वाले के लड़के ने पूछा। लक्ष्मी उसे प्रति दिन हनुमानजी पर चढाया हुआ केला दिया करती थी, इसलिए दोनो मे मित्रता हो गई थी।

लडके की बात का जवाब न देकर लक्ष्मी रोती ही रही।

"रोओ मत मा, भगवान् तुम्हारी मदद करेगे," उसने कहा।

"भगवान् को मुझपर दया नही आती भइया ! मै इसीलिए तो रो रही हू कि मै मरना चाहती हू और मौत नही आती," लक्ष्मी ने कहा।

"मेरी बडी बहिन भी इसी तरह रोया करती थी और एक दिन उसने कुए मे डूबकर जान दे दी। उसका आदमी उसे बहुत बुरी तरह पीटा करता था। उससे यह बरदाश्त नही हो सका। उसका आदमी शराबी था और उसने उसको इस दशा तक पहुचा दिया।"

"अगर मेरा आदमी मुझे पीटता तो मै सह लेती। चाहे वह कितना ही पीटता, मै परवा न करती।"

"तो फिर क्यों रोती हो ?"

"अगर मै तुम्हे बताऊ तो तुम समझ नही पाओगे। तुम्हारी बहिन मरकर सुखी हो गई, भइया। मैने भी मरने की ठान ली है, लेकिन मुझे डर लगता है। क्या तुम मेरे साथ तालाब तक चले चलोगे ?"

"ताकि तुम पानी मे गिर पड़ो ? नही, मै तुम्हारे साथ नही चलूगा।"

"नही चलोगे ? अच्छा, मै अकेली चली जाऊगी।"

लक्ष्मी हनुमानजी के सामने साष्टाग लेट गई और बहुत देर तक चुपचाप पड़ी रही। फिर वह उठी और तेजी से बड़े कुण्ड की ओर चल दी।

"मत जाओ, मत जाओ, मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूं। सब ठीक हो जायगा। अगर तुम पानी में डूब मरोगी तो भूत बन जाओगी, ऐसा काम मत करो।" ग्वाले का लड़का यह कहता हुआ उसके पीछे-पीछे दौड़ा।

नदी की तली में एक गहरा गढ़ा था। उसीको बड़ा कुण्ड कहते थे। नदी ऊपर तक भरी हुई थी और दोपहर का वक्त था। आसपास कोई आता-जाता नहीं दिखाई देता था। कुछ चरवाहे नदी के दूसरे किनारे पर दूर अपने ढोर चरा रहे थे। उन्होंने न कुछ देखा, न सुना। जैसे ही लक्ष्मी पानी में कूदी ग्वाले का लड़का डरकर भाग गया।

४

"कहते हैं कि वह नदी में डूबकर मर गई। बड़ा अच्छा हुआ।"

"अब गांववाले हमें नाम नहीं धरेंगे, हम बदनामी से बच गये।"

"मैंने सुना है कि जो आदमी बेमौत मरते हैं वे भूत बन जाते हैं।"

"हां, हां, भूत तो बनेगी ही वह। बनने दो, वह इसी लायक थी।"

ये बातें पार्वती, सीता और मीनाक्षी कर रही थीं। मीनाक्षी को सात मास का गर्भ था।

दो महीने बाद मीनाक्षी को बिना किसी विशेष कष्ट के प्रसव हुआ और एक लड़की पैदा हुई। नटेश के घर में वह बड़ी खुशी का दिन था। हम मृत्यु को बड़े दुर्भाग्य की बात समझते हैं, लेकिन वह बहुत-से रंजों और दुःखों का अन्त कर देती है। उसके बिना जीवन एक अमर नरक बन जाय। लक्ष्मी के डूबने के समाचार से कितनों को खुशी हुई। नटेश तक को तसल्ली और शान्ति मिली।

बच्चे के जन्म के दस दिन बाद से मीनाक्षी को हलका-हलका बुखार रहने लगा। "कोई बात नहीं है, ठीक हो जायगी," एक बूढ़ी औरत ने कहा जो उसे देखने आई थी।

दूसरे दिन मीनाक्षी बकझक करने लगी मानो उसे सरसाम हो गया हो। "चुप रहो," सास ने डपटकर कहा।

मीनाक्षी ने उसे घूरकर देखा। "हूं, मैं जरूर चुप रहूंगी," वह चिल्लाकर बोली। "तुमने मुझे घर से बाहर निकाल दिया था, अब मैं तुम्हें नहीं छोड़ूंगी।" कुछ रुककर वह फिर चिल्लाई—"मेरे बच्चा पैदा हुआ है न! यह किसका बच्चा है? उठ, भाग, जा नदी में गिरकर मर जा।"

मारे क्रोध के मीनाक्षी की आंखें घूमने लगीं और उसका शरीर लकड़ी की तरह ऐंठ गया। थोड़ी देर तक वह इसी दशा में रही फिर बिछौने से उछलकर भागने लगी।

"हे भगवान! यह तो उसका भूत है," सीता भय से चिल्लाई।

"हे ईश्वर! हे माता! मैं तुम्हें जो कुछ कहोगे दूंगी। हे मारि-अम्मा हमारी रक्षा करो," पार्वती घबराकर बोली।

पार्वती ने चुपके से मन्दिर के पुजारी को बुला भेजा और मुर्गे की बलि चढ़ाने का प्रबन्ध किया।

ज्योतिषी सीताराम ऐयर ने मंत्र पढ़े और बीमार को पान में रखकर पवित्र भस्म दी। मीनाक्षी ने उसे लेकर बिछौने पर रख लिया और कुछ शान्त हो गई। भस्म का प्रभाव देखकर सबको प्रसन्नता हुई।

"इसे अपने मुंह में रख लो," नटेश ने कहा।

"हां, रखती हूं," यह कहकर मीनाक्षी ने भस्म अपनी हथेली पर उंडेल ली और फिर एकाएक उसे फूंक मारकर उड़ा दिया। इसके बाद वह ठठाकर हंस पड़ी।

"अब मैं तुझे नहीं छोड़ूंगी। कहां है वह औरत? उसे मैं भुगतूंगी। भस्म देकर मुझसे धोखा करना चाहती है?" वह चिल्लाई और पागलों की तरह हंसी।

"अरी चुड़ैल! यह तो वही सापन है जो डूबकर मरी है। झाड़ू तो ला," पार्वती ने कहा।

सीता झाड़ू उठा लाई और पार्वती ने उसे लेकर मीनाक्षी के सिर पर मारना शुरू किया।

"मुझे मत मारो, मुझे मत मारो, मै जाती हू," मीनाक्षी चिल्लाई।

"भाग यहां से, निकल यहां से," यह कहकर पार्वती उसे फिर मारने लगी।

"बस, बहुत हो चुका। ठहरो," नटेश चिल्लाकर बोला। वह बेचारा इस करुण दृश्य को देखकर पागल-सा हो गया था।

"तू नही समझता इन बातो को, नटेश! दूर खड़ा रह," पार्वती ने चिल्लाकर कहा।

इस तरह वे लोग चुड़ैल के पीछे पाच दिन तक पड़े रहे, लेकिन कोई लाभ नही हुआ। बेचारी बहू का पागलपन बढ़ता गया।

"यह प्रसव का पागलपन है," एक ने कहा।

"नही, किसी के श्राप का फल है," दूसरे ने कहा।

"मुझे पक्का यकीन है कि यह लक्ष्मी का भूत है," मीना बोली।

"मुर्गे की बलि काफी नही है, देवी बड़ी बलि चाहती है। बकरा चढ़ाना होगा," पुजारी ने अकेले मे पार्वती से कहा और पार्वती ने नटेश से छिपकर इसका भी इन्तज़ाम कर दिया। लेकिन सब बेकार।

चार महीने बीत गये और तब, जैसा कि सीतारामैयर ज्योतिषी ने भविष्य-वाणी की थी, मीनाक्षी को आराम हो गया और वह बिलकुल चंगी हो गई। सारी बाते सपने-सी लगने लगीं, लेकिन उनका नतीजा यह हुआ कि हर एक के मन मे, यहां तक कि पार्वती के मन में भी, लक्ष्मी के प्रति भय और आदर का एक नया भाव उत्पन्न हो गया। उन्होने अब उसके बारे में बातचीत करनी बद कर दी।

मीनाक्षी एक बार फिर बड़े स्नेह और चतुराई के साथ काम करने लगी। उसे बस धुधली-सी याद भर रह गई कि बीमारी के दिनो मे मैने मूर्खतापूर्ण व्यवहार किया था। घर के सब आदमियो की भी जान में जान आई; वे उस घटना के बारे में चुप रहे और चतुराई के साथ अपना काम करते रहे।

एक वर्ष बाद मीनाक्षी फिर गर्भवती हुई। पार्वती ने छिप-छिपकर और प्रकट रूप से भी देवताओं की मानताएं मानी, उनकी पूजा की और बलि चढ़ाई। जब बच्चा होने का समय आया तो नटेश ने पास के कस्बे पाग्लूर के मिशन-अस्पताल से एक नर्स बुला ली। इस बारे में किसी ने कुछ कहा-सुना नही। पिछली बार गांव की दाई ने बच्चा कराया था और मीनाक्षी बीमार हो गई थी। इसलिए हर एक की यही राय हुई कि इस बार एक होशियार नर्स को बुलाना ठीक रहेगा।

मीनाक्षी का दूसरा प्रसव भी आसानी के साथ हुआ और इस बार लड़का जन्मा। बच्चा होने के समय अस्पताल की नर्स उसके पास रही और बाद में भी एक महीने तक रोज उसे देखने आती रही। उसने इस बात का ध्यान रखा कि मा को कोई दिमागी गड़बड़ी न हो और बच्चे को समय पर दूध मिलता रहे। नटेश को डर था कि कही पिछले प्रसव-वाली बीमारी फिर न हो जाय। सब बातो के ठीक रहने से उसे बडी खुशी हुई और वह नर्स को दस रुपये देने लगा। लेकिन नर्स ने यह कहकर कि मुझे रुपयो की जरूरत नही है, रुपये लौटा दिये।

"मुझे दुःख है कि मै आपको इतने थोड़े रुपये दे रहा हूं। इससे ज्यादा मै दे नही सकता। मेहरबानी करके इन्हे ले लीजिये और नाराज़ न होइये।"

"नही, नही; मै मेहनताना नही चाहती। मैने यह काम रुपये की वजह से हाथ में नही लिया है। मै तो मोहब्बत की वजह से चली आई हूं।" ऐसा कहकर नर्स ने मीनाक्षी के बच्चे को उठा लिया और कुछ देर तक वह उसे खेलाती रही।

फिर मीनाक्षी से नमस्ते कर उसने सब से विदा ली। जिस समय वह बाते कर रही थी, न जाने क्यो नटेश को अपनी पहली पत्नी की याद आ गई। लेकिन यह सोचकर कि मुझे ऐसी बातों का ध्यान नही करना चाहिए उसने अपने आपको शान्त किया।

५

"जब तुम घर मे थी तो क्या तुम्हे किसी ने पहचाना नही, शान्ति देवी ?" पाम्लूर अस्पताल के पादरी ने पूछा। शान्ति देवी लक्ष्मी का नया नाम था।

"अस्पताल के कपडो ने मुझे पहचाने जाने से बचा लिया। औरतो ने तो मुझे बिल्कुल ही नही पहचाना। जिस लडकी के बच्चा हुआ था वह तो मुझे जानती ही नही और उसके पति ने भी शिष्टता के कारण मेरी तरफ ध्यान से नही देखा। आखिरी दिन उसे कुछ शक हुआ था, लेकिन मैने साडी का पल्ला अच्छी तरह मुह पर खीच लिया और इस तरह मै पहचाने जाने से बच गई।"

"बहुत खूब ! तो क्या तुम्हारे मन मे शान्ति है ?"

"हा, मेरा मन सचमुच शान्त है। बीमारो की सेवा करने से मुझे खुशी होती है। अगर आप मुझे नदी से बाहर नही निकालते तो मै भूत बन जाती, जैसा कि ग्वाले के लडके ने कहा था।"

पादरी हसा। "भूत-प्रेत कुछ नही होता। ये सब बेवकूफी की बाते है। तुम खुश तो हो ?" उसने पूछा।

"मै खुश तो नही हू, लेकिन मेरे चित्त मे शान्ति है। मेरे लिए यही काफी है। भगवान् और आप मेरी रक्षा के लिए कम नही है।"

"क्या तुम अपने पति के पास जाने को राजी हो ? मै उसे सब बाते बताकर मामला तय करा सकता हू" पादरी ने कहा।

"नही पिता, वह भोली लडकी खुश है, मै वहा क्यो जाऊ ?"

"अगर तुम अपने पति के पास जाना नही चाहती, तो फिर बपतिस्मा लेकर हम लोगो मे मिलकर क्यो नही यहा रहती ?" बूढे पादरी ने पूछा।

"हनुमान जी नाराज होगे" लक्ष्मी बोली और हस पड़ी।

६

अगली दीवाली पर शान्ति देवी अपने थैले में एक पाकिट पटाखो का एक डिब्बा मिठाइयो का और कुछ फूल रखकर मीनाक्षी के

गांव गई । मीनाक्षी की नन्ही लड़की घर के सामने गली मे खेलती हुई मिल गई ।

"कमला, मै तेरे लिए पटाखे लाई हू," शान्ति देवी ने कहा । लड़की ने पहचान लिया कि यह वही भौमी है जो छोटे भइया के होने मे मा की देखभाल करने आई थी । उसने पटाखे और मिठाइया ले ली और अपने बालो मे फूल लगवाने के लिए वह लक्ष्मी की ओर पीठ करके खड़ी हो गई । लक्ष्मी ने उसके बालो मे फूल खोसकर उसे प्यार किया ।

"यह नर्स तो बड़ी भली मालूम होती है," मीनाक्षी ने अपनी सास से कहा ।

नटेश के घर आते ही पार्वती ने उससे कहा—"अस्पतालवाली नर्स आई थी । वह कमला को मिठाई और पटाखे दे गई और बिना किसी से मिले ही चली गई ।"

: १० :

देवयानी

रामनाथ अपनी पत्नी सीतालक्ष्मी के साथ कार में बैठकर चीना बाजार गये। खरीदारी खतम करने के बाद दोनों ने पास के एक होटल में चाय पी और फिर वे कार में आ बैठे।

"चलो, समुद्र-किनारे चलें," रामनाथ ने कहा।

"हां चलिये, लेकिन ड्राइवर से कह दीजिये कि कार ऐसी जगह रोके जहां भीड़-भक्कड़ न हो। मुझे भीड़ अच्छी नहीं लगती। देखिये, फेरीवाला खिलौने बेच रहा है, बच्चों के लिए दो-चार खरीद लीजिये।"

सीतालक्ष्मी की बात पूरी भी नहीं हो पाई थी कि खिलौनेवाला उसका मतलब भांपकर कार के पास आ गया। खिलौने पसन्दकर वे कार में ही बैठे-बैठे मोल-भाव कर रहे थे कि कार के दूसरे दरवाजे की ओर एक युवती भिखारिन गोदी में एक छोटा-सा बच्चा लिये आई और बच्चे को आगे कर बोली—"बाबूजी, इस नन्हे बच्चे पर दया करो।"

"ये सब जापानी खिलौने हैं न ?" रामनाथ ने खिलौनेवाले से पूछा।

"जी हां, भला हमारे देश में ऐसी चीजें बन सकती हैं ?" खिलौने-वाले ने उत्तर दिया।

भिखारिन ने फिर गिड़गिड़ाना शुरू किया।

"हम खिलौने खरीद रहे हैं और यह बला आकर हमारे पीछे पड़ गई। भीख मांगने का रोग दिन-पर-दिन बढ़ता जा रहा है," सीतालक्ष्मी बोली।

"बाबूजी, मैं भूखी हूं। बच्चे पर दया करो, भगवान् तुम्हारा भला करेगा।"

"जाती है या बुलाऊं पुलिस को ?" मीतालक्ष्मी ने धमकाया।

"बच्चा दूध के लिए रो रहा है, मा जी ! एक इकन्नी दे दो, तुम्हारे लिए कोई बड़ी बात नही है।"

रामनाथ ने खरीदे हुए खिलौने कार के अन्दर रख लिये और शोफर से समुद्र-किनारे चलने को कहा।

शोफर ने भिखारिन से एक तरफ हटने के लिए कहकर कार चला दी।

भिखारिन दरवाजा पकडे थोडी दूर तक साथ-साथ दौडने की कोशिश करती रही और चिल्लाती रही—"बाबूजी, बाबू साहब।"

"हट, हट, नही तो दब जायगी," रामनाथ ने चिल्लाकर कहा। उस समय उन्हे भिखारिन को गौर से देखने का मौका मिला और ऐसा लगा मानो इसे कही देखा है।

जब कार तेज़ी से चल दी तो वह बोले—"बेचारी लड़की ! यह तो हमारे गाव की दिखाई देती है।"

"कही से भी आई हो, हमे क्या ? जरा इस खिलौने को दिखाना, यह तो नई तरह का मालूम होता है। यह तो हवाई जहाज है ! क्या चाबी लगाने पर चलेगा ?" मीतालक्ष्मी ने पूछा और वह एक-एक खिलौना उठाकर देखने लगी।

२

सेलम ज़िले के पोन्नम्मापेट नाम के कस्बे मे पेरिमन्न मुदलियरनी में जुलाहे का एक ग़रीब परिवार रहता था। वैयापुरी तीस वर्ष का था और उसकी क्वारी बहिन देवयानी बीस वर्ष की। उनकी मा का नाम पलनि था। वे करघे पर कपड़ा बुनकर अपनी जीविका चलाते थे और यही उनका खानदानी पेशा था। वे तीनो आदमी सारे दिन मेहनत करके हफ़्ते में कुल मिलाकर चार रुपये कमा पाते थे।

धीरे-धीरे करघे का काम ठढा पड़ता गया और साथ-ही-साथ मजदूरी भी कम होती गई। कुछ दिनों बाद बहुतों को इतनी भी मजदूरी मिलनी

बंद हो गई। सेलम में वैयापुरी के अलावा बहुत-से और लोगो के कर भी बंद हो गये। देवयानी को दो ब्राह्मण अफसरों के घर मकान के सामने के हिस्से को झाड़ने-बुहारने और पानी-गोबर से लीपने का काम मिल गया। उसे और भी छोटे-छोटे काम करने पडते थे और इनके लिए तीन रुपया महीना मिलता था। उसकी मा एक दूसरे घर मे यही झाडने-बुहारने का काम करके एक रुपया महीना पाती थी। वैयापुरी कपड़े के व्यापारियो के पास काम की तलाश मे चक्कर काटता फिरा, लेकिन उसे कोई काम नही मिल सका। निराश होकर वह बिना अपनी मा से कहे-सुने बंग्लूर चला गया। कुछ दूसरे जुलाहे भी वहा की बड़ी मिलों मे काम मिलने की आशा से उसके साथ-साथ गये।

कुछ दिनों तक मारे-मारे फिरने के बाद वैयापुरी ने लिखा कि मुझे एक मिल में नौकरी मिल गई है। वह कुछ लिखना-पढ़ना जानता था क्योंकि जब वह छोटा था तो उसके बाप ने उसे पोन्नम्मापेट के म्युनिसिपल स्कूल में भरती कर दिया था। उन दिनों जुलाहों की दशा इतनी दयनीय नही थी।

"बहुत-से लोगों की जेब भरने के बाद मुझे एक मिल मे जगह मिल गई है। रोज़ आठ आने मिलते है और एक महीने में छब्बीस दिन काम होता है। इसलिए मुझे एक महीने में तेरह रुपये मिला करेगे। खाने-पीने का खर्च निकालकर और कुछ कर्ज चुकाने के बाद मै दो रुपये बचाकर हर महीने तुम्हारे पास भेजा करूंगा। बाकी के लिए भगवान् मालिक है," वैयापुरी ने अपने पत्र में लिखा, जिसे एक पड़ोसी के लड़के ने पढकर उसकी मा और बहिन को समझाया। बूढी मा और देवयानी बड़ी प्रसन्न हुई।

दस दिन बाद दूसरा पत्र आया। उसमें लिखा था—"मा को मेरा प्रणाम! भगवान् की दया से मै यहा पर कुशलपूर्वक हूं। उम्मीद है तुम और देवयानी भी अच्छी तरह होंगी। मिल का काम मुझे बिलकुल अच्छा नहीं लगता। जब मुझे याद आता है कि अपने घर में करघे पर काम कर

मे कैसे सुख से दिन बिताया करता था तो मुझे रोना आ जाता है। मुझे ऐसा लगता है कि मै यहा पागल हो जाऊंगा। मेरा सिर चकरा रहा है और मुझे यहां इतना दुख और रज है कि क्या कहूं। मुझे ताज्जुब होता है कि मै सेलम से क्यो चला आया। पड़ोस मे रहनेवाले लडके से लिखवाकर चिट्ठी भेजने की कोशिश करना। पता यह है––सेलम पोन्नम्मापेट वैयापुरी, कुली लाइन, मल्लेश्वर।"

३

जिन दो घरो मे देवयानी झाड़ने और पानी छिड़कने का काम करती थी उनमे-से एक घर एक सरकारी पेन्शनर का था। उसकी पत्नी बड़ी नेक और दयालु थी। देवयानी से काम तो वह कसकर लेती थी, लेकिन और बातो मे उसके प्रति दया दिखलाती थी। उसने देवयानी को एक पुरानी साड़ी दे दी थी और घर मे खाने के बाद जो दाल-चावल बचता था वह भी उसे मिल जाता था। कुछ दिन इसी तरह बीत गये, लेकिन शायद भगवान् से उसका इतना सुख भी नही देखा गया। घर का रसोइया जो उसे बचा हुआ खाना दिया करता था, उससे प्रेम जताने लगा। एक दिन उसने उससे बहुत बुरी तरह छेड़खानी की।

देवयानी की आखों मे खून उतर आया, लेकिन शर्म के मारे उसने किसी से कुछ कहा नही। "किसी से कहना मत, मै हर महीने तुझे दो रुपये दिया करूंगा," बदमाश ने कहा।

अपना रज रोककर देवयानी घर गई और मा से बोली––"अम्मा, मै उस नीम के पेड़वाले मकान में अब काम नही करूंगी।"

जब मा ने इसका कारण पूछा तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया। उसने सारी बातें बता दी, जिस पर उसकी बूढ़ी मा यह कहती हुई उठी––"मै घर की मालकिन से अभी जाकर सब बातें कहती हूं।"

"जाने दो अम्मा! क्या फ़ायदा इससे? मुझे वहां अब काम तो करना नही है," देवयानी ने उससे कहा।

मा-बेटी ने दूसरी जगह काम ढूढ़ना शुरू किया, लेकिन वे जहा भी जाती वही मालूम होता कि कोई पहले से ही लगा हुआ है। दो महीने तक इसी तरह टक्करे खाने के बाद उन्हे काम मिला।

छः महीने बीत गये। जिस मिल मे वैयापुरी काम करता था, उसमे मदूजरो ने हडताल कर दी। वहा के अगरेज मैनेजर ने एक मिस्त्री को पीट दिया था और बाद मे उसे और कुछ दूसरे मजदूरो को नौकरी से अलग कर दिया था। मजदूरो ने एक सभा की और महीने पर तनख्वाह लेने के बाद काम बन्द कर दिया। वैयापुरी को भी हड़ताल मे साथ देना पडा।

हडताल एक महीने तक रही। मज़दूरो ने सभाए की और शुरू-शुरू मे तो बडा उत्साह दिखाई दिया, लेकिन जब गाठ का रुपया खर्च हो लिया तो जोश ठडा पड़ गया। अन्त मे समझौता हुआ और मजदूर फिर काम करने लगे। एक हफ्ते बाद दरवाजे पर एक नोटिस चिपका हुआ मिला। उसमे पच्चीस आदमियो के नाम थे, जो नौकरी से हटा दिये गये थे और जिन्हे मिल के इलाके मे कदम न रखने की आज्ञा दी गई थी। उनमे वैयापुरी भी एक था।

"मै बिलकुल बेकसूर हू। मै तो नया आदमी हू, मेरा इन बातो से क्या वास्ता?" वैयापुरी ने मिस्त्री से शिकायत करते हुए कहा।

"मैनेजर का यही हुक्म है। यह काम उस बदमाश टाइमकीपर रगस्वामी नायक का है। उसी ने दूसरो के साथ तुम्हारा नाम भी भेजा था। मै इस मामले मे कुछ नही कर सकता" मिस्त्री ने जवाब दिया।

वैयापुरी ने रगस्वामी नायक के पास जाकर हाथ जोड़, लेकिन उसने कहा—"मै कुछ नही जानता। यह खज़ानेवाले क्लर्क का काम है।" मतलब यह कि किसी ने वैयापुरी की सहायता नही की और अन्त मे मैनेजर ने कहा—"तुम लिखना-पढना जानते हो, तुमने ही दूसरो को भड़काया होगा, मै तुम्हे वापस नही ले सकता।"

बहुत दिनो तक ठोकरे खाने और पास की कौड़ी-कौड़ी खर्च कर चुकने के बाद वैयापुरी बड़ी कठिनाई से मद्रास पहुचा। नौकरी से अलग किये गये पच्चीस आदमियों में-से भी दस आदमी उसके साथ-साथ नौकरी की तलाश में मद्रास गए। उनके पास जितना भी रुपया था उन्होने एक जगह इकट्ठा कर लिया और उसी से गुजारा करते हुए वे नौकरी के लिए एक मिल से दूसरी मिल मे गिडगिडाते फिरे। कुछ दिनो बाद वैयापुरी को एक मिल में काम मिल गया।

ड्योढीवान और मिल के दूसरे छोटे-छोटे अफसरो की मुट्ठी गरम करने के लिए वैयापुरी को पाच रुपयो की जरूरत थी। इसके लिए और खाने-पीने मे जो कर्ज हो गया था उसे चुकाने के लिए उसने अपनी सोने की मुरकिया गिरवी रखकर रुपये उधार लिये। अपने दु:ख को भुलाये रखने के लिए उसने थोडा नशा करना भी शुरू कर दिया, गोकि सेलम मे रहते हुए उसने कभी शराब छुई भी नही थी। कुछ मित्रों के यह सुझाने पर कि जुए से काफी रुपया कमाया जा सकता है वह जुआ भी खेलने लगा। खाने और कोठरी का किराया देने के बाद उसके पास जो कुछ बचता उसे वह घर न भेजकर इन बातो मे खर्च करने लगा। स्वभावत: पठान से लिया हुआ कर्ज बढता गया और इन परेशानियों को भूलने के लिए वह ज्यादा नशा करने लगा।

पहले तो उसने घर रुपये न भेज सकने के लिए बहाने लिख-लिखकर भेजे। बाद मे उसने लिखा कि अब मैं घर रुपये नही भेज सकता, अगर देवयानी चाहे तो मद्रास आकर किसी मिल मे नौकरी कर ले। इस पत्र को सुनकर देवयानी और पलनि का दिल टूट गया।

बहुत दिनों तक सब्र के साथ दुख और परेशानी उठाते-उठाते एक दिन देवयानी बोली—"मा, मै मद्रास क्यो न चली जाऊ? मैं काम करूंगी और वैयापुरी की तरह रुपये कमाकर कुछ तुम्हे भेजने की कोशिश करूंगी। मैंने सुना है कि मद्रास की मिलों मे बहुत-सी औरतें काम करती है।"

पहले तो मा इस बात के लिए राजी नही हुई और कुछ दिनो तक कहती रही कि ऐसी बात कैसे हो सकती है, जवान और अकेली औरतें किस तरह ऐसी जगह काम करने के लिए जा सकती है, लेकिन आखिरकार वह मान गई। देवयानी ने एक पडोसी के यहा अपने सोने के बुंदे गिरवी रख दिये और उससे बारह रुपये उधार लेकर वह मद्रास के लिए चल दी।

४

वैयापुरी ने देवयानी को मद्रास की एक मिल में सूत कातने के विभाग-मे नौकरी दिलवा दी। उसमें डेढ सौ औरतें काम करती थी, जिनमे से बहुत-सी अवस्था मे देवयानी से भी छोटी थी। देवयानी ओर दस दूसरी औरतो को एक सेठ के नीचे काम करना पड़ता था। शुरू-शुरू मे उसने देवयानी के साथ बड़ी दयालुता दिखलाई। लेकिन कुछ ही दिनो बाद वह उसे डाटने-डपटने लगा और फिर उससे बडी आजादी से बातचीत करने लगा, खासतौर से जब वह अकेली मिल जाती।

देवयानी ने अपने साथ काम करनेवाली एक स्त्री से पूछा—"इसका क्या मतलब, बहिन! यह मुझसे इस तरह की बाते क्यो करता है?"

तुम इतना भी नही समझी? गाव की हो न! अगर तुम उसे खुश नही करोगी तो तुम्हारी आधी मजदूरी जुरमानो मे कट जायगी और अगर वह खुश रहेगा तो तुम्हे बहुत तरह के आराम देगा" उस औरत ने हसते हुए कहा।

कुछ दिनो तक देवयानी यह सब सहती रही। धीरे-धीरे उसका परमेश्वर पर से विश्वास उठने लगा और उसने सेठ का विरोध करना छोड़ दिया। उसने अपना मस्तिष्क परिस्थिति के अनुकूल बना लिया और वह उससे घुलमिलकर बातें करने लगी। जल्दी ही उसे इन बातो मे आनन्द आने लगा और उसकी मजदूरी बढ़ गई।

कुछ महीने बीतने पर देवयानी को पता चला कि मै मा बनने वाली हूं। वह बड़ी डरी और जितने भी देवी-देवताओं के नाम जानती

थी उन सब की प्रार्थना करने लगी। "हाय, अब मैं किससे कहूं?" उसने मन-ही-मन मे सोचा। उसका चित्त बड़ा उद्विग्न हुआ और वह भय के मारे थर्रा उठी, ठीक वैसे ही जैसे जगल मे शिकारियो से पीछा किये जाने पर हिरनी कापने लगती है। उसे अपने भाई वैयापुरी से कहते हुए डर लगता था। साथ में काम करनेवाली कुछ लड़कियो को इस बात की खबर थी, लेकिन वे उसका मजाक उड़ाया करती थी और हंसती थी। उसने सोचा कि गांव चली जाऊं, लेकिन वह जानती थी कि वहा जाने पर अपमान होगा और मै बिरादरी से निकाल दी जाऊंगी। अपनी मा का ध्यान आते ही उसने वहा का विचार बिलकुल छोड़ दिया। अन्त मे उसने अपने को भगवान् के ऊपर छोड़ दिया और वह मिल में काम करती रही।

लेकिन जल्दी ही उसे फिर बड़ी घबराहट होने लगी--"हाय, अब मै क्या करूंगी? मैने अपने कुल को कलंक लगा दिया।"

"घबरा मत, देवयानी! ऐसा तो हम सबको होता है। इसके लिए एक दवा होती है जिसके पीने से तेरी सारी चिन्ता दूर हो जायगी," उसकी एक सहेली ने तसल्ली देते हुए कहा।

"मैने उसके बारे मे सुना तो है, लेकिन मुझे डर लगता है कि कही मर न जाऊं। हे भगवान्, मै कहा जाकर अपना पाप छिपाऊं?" देवयानी रोकर बोली।

उसकी सहेली ने कहा--"कही से दो रुपये ले आ। मुत्तुस्वामी आचारी गली मे एक औरत रहती है, वह तू जो चाहती है कर देगी।"

"अगर पुलिस को खबर हो गई तो वह मुझे जरूर पकड़ लेगी।"

"इसकी फ़िक्र मत कर, पुलिसवालों से उसका बडा मेलजोल है। तुझे मालूम होना चाहिए कि रुपये से सब कुछ हो सकता है।"

"रुपये के लिए मै किसके पास जाऊं? हे भगवान्, तूने तो मुझे छोड़ ही दिया। मै इस कमबख्त शहर मे आई ही क्यों?" यह कहकर देवयानी रोने लगी।

कुछ दिन बाद एक दूसरी औरत ने उसे दूसरी सलाह दी—"तुझे अपने बच्चे को मारना नही चाहिए। इस पाप का फल तुझे तीन जन्म तक भोगना पडेगा। गणेश मदिरवाली गली मे एक बुढिया रहती है। वह बड़ी नेक औरत है। अगर तू उसके पास चली जायगी तो वह सारी बातों की देखभाल कर लेगी। तेरी तरह बहुत-सी औरते उसके घर ठहर चुकी है और सही सलामत निबट आई है।"

देवयानी ने उसे धन्यवाद दिया और कहा—"भगवान् तुम्हे सुखी रखे, बहिन।" वह गणेश मदिरवाली गली मे उस उदार बुढिया के पास चली गई। समय पर प्रसव हुआ और बच्चे के कोमल स्पर्श ने देवयानी की दुनिया ही बदल दी। उसे ऐसा मालूम हुआ मानो किसी ने जादू कर दिया है। उस बच्चे मे उसका सारा ससार समा गया।

वह अपने बच्चे को उठाती और छाती मे लगाकर कहती यह फूल मुझे भगवान् ने दिया है। इसका क्या दोष है, पापिन तो मैं हूं।" सब दुखो को भूलकर वह कुछ दिनो तक सुख मे रही।

"तुम अभी काम पर जाने लायक नही हो। तुम्हे अभी कुछ दिन तक यहां और ठहरना होगा," गणेश मदिरवाली गली की उदार स्त्री बोली। देवयानी ने भगवान् को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया और मन मे सोचा -- "जिस दुनिया मे ऐसे अच्छे आदमी मौजूद है, उसे गालिया देना मेरे लिए कितना गलत था!"

एक महीने बाद देवयानी को असली बात का पता चला। वह बूढी औरत उन असहाय अभागिनो से, जो धोखेबाज मर्दो के चंगुल में फंस जाती थी, दुष्कर्म कराया करती थीं। देवयानी फंस गई और मिल मे फिर से काम करने नही गई।

५

"क्या तुम्हे उस लड़की देवयानी की याद है जो सेलम मे हमारे घर काम करती थी? वह भिखारिन उसी-जैसी दिखाई पडती थी," रामनाथ ने कहा।

रामनाथ सेलम के उस पेन्शनर के सब से बड़े लड़के थे जिसके घर जाकर देवयानी ने पहले-पहल काम किया था। वह मद्रास के एक बड़े बैंक में खजांची थे।

"आप तो सपना देख रहे है; भला सेलम की लड़की यहां कैसे आ सकती है ?" सीतालक्ष्मी बोली।

"यह बड़े शर्म की बात है कि ऐसी लड़कियां भीख मांगने के लिए तुरन्त के हुए बच्चों को गोद में लिये सड़कों पर फिरती हैं। हमारे देश की कैसी दशा हो गई है ?" रामनाथ ने कहा।

"आप हमेशा देश की ही बात सोचते रहते हैं। क्या अपने घरबार की ही फिक्र कर लेनी काफी नहीं है ?" उनकी पत्नी ने पूछा।

रामनाथ दूसरे दिन शाम तक भी उस भिखारिन को भूल न सके। वह दफ्तर से सीधे चीना बाजार चले गये, इस उम्मीद में कि अगर वह फिर मिल जाय तो उसकी बात पूछूं। रामनाथ बाजार में एक कोने से दूसरे कोने तक कार लेकर गये और उस दिनवाले होटल के सामने रुक-कर कुछ देर प्रतीक्षा करते रहे। बहुत-से भिखारी आये और उन्हें घेर कर "बाबू साहब, बाबूजी" चिल्लाते रहे, लेकिन वह नहीं आई।

शनिवार की शाम को रामनाथ और उनकी पत्नी फिर चीना बाजार पहुंचे।

"देखिए, वह रही आपकी भिखारिन," सीतालक्ष्मी ने कहा।

हां, वही भिखारिन थी। अपने बच्चे को लिए हुए वह किसी की कार के पास जा रही थी और कह रही थी — "माजी, एक इकन्नी दे दो, इस बच्चे का ख़याल करो।"

उसने रामनाथ की कार और उसमें बैठे हुए आदमियों को देख लिया था, लेकिन वह उसे छोड़कर दूसरी कार के पास चली गई थी क्योंकि वह जानती थी कि इनसे मुझे कुछ नहीं मिलेगा। भिखारी लोग अपने अनुभवों से ही निर्णय करना सीख लेते हैं। चतुराई और समझ की गुंजाइश तो हर काम में होती है।

रामनाथ को इतना साहस नहीं हुआ कि वह स्वयं जाकर भिखारिन को पुकारे। कुछ देर तक वह इस प्रतीक्षा मे रहे कि शायद वह बाद मे हमारी कार के पास आवे। लेकिन वह भीड़ में गायब हो गई और फिर दिखाई नहीं दी।

अब चलिये," सीतालक्ष्मी ने कहा।

आठ दिन बाद रामनाथ और सीतालक्ष्मी सिनेमा देखने गये। कहानी वही पुरानी राजा नल की थी। दरवाजे के सामने बहुत भीड़ थी। दमयन्ती का काम नई स्टार धनभाग्य कर रही थी।

"सारी सीटें भर गई। अब एक भी जगह नहीं रही।" तख्ती पर यह लिखा हुआ देख कर रामनाथ ने कहा--

"तो चलो, घर चले, दूसरे शो मे आ जायगे,"

सीतालक्ष्मी के उत्तर देने से पहले ही कोई कार के दरवाजे के पास आकर चिल्लाया --"माजी, कुछ भिक्षा मिले।"

रामनाथ यह देखने को मुडे कि सेलमवाली लडकी तो नहीं है। उन्हे उसके लिए एक वैराग-सा हो गया था, लेकिन वह कोई दूसरी भिखारिन थी।

"अगर हम यहा कार रोके रखेंगे तो भिखारी हमें तंग करेंगे। राम नायर, कार जल्दी से घर ले चलो," सीतालक्ष्मी ने शोफर से कहा।

उसी समय एक पुलिसवाले ने आकर अपना डंडा घुमाया और भिखारिन को भगा दिया।

उस रात रामनाथ ने भिखारिन को देखा, लेकिन स्वप्न में।

"तुम देवयानी हो? कहां से आई हो?" रामनाथ ने पूछा।

औरत ने उन्हें आंखें फाड़कर देखा और खुश होकर पूछा — "आप सेलमवाले बाबूजी के लड़के हैं न, जो नीम के पेड़वाले मकान में रहते थे?"

"नायर, उससे कहो सामनेवाली गद्दी पर बैठ जाय," उन्होंने ड्राइवर से कहा। घर पहुंचने पर उनकी पत्नी बोली--"इस कमबख्त को यहा क्यों ले आये?"

"हम उसे अपने यहा नौकर क्यो न रख ले ? चार रुपये महीना और खाना दे दिया करेंगे," वह बोले ।

"क्या ही अच्छा खयाल है आपका ! पतित स्त्रियो को घर मे रखना भी क्या कोई बुद्धिमानी की बात है ? निकल यहा से," सीतालक्ष्मी ने कहा और भिखारिन को बाहर निकाल दिया ।

"मै चोरी नही करूगी और आप जो हुक्म देगी वही करूगी," उस दुःखी स्त्री ने गिड़गिड़ाते हुए कहा ।

"यह कभी नही हो सकता, निकल जा मेरे घर से," सीतालक्ष्मी ने जवाब दिया ।

रामनाथ ने उसे एक रुपया देने के लिए बटुआ निकालने को जेब में हाथ डालना चाहा लेकिन न तो वह अपना हाथ हिला सके, न उनका हाथ बटुए तक पहुंच ही सका । भिखारिन का बच्चा जोर-जोर से रोने लगा ।

रामनाथ की नीद टूट गई । यह सब सपना था, उनकी अपनी लड़की राधा पलग पर बैठी-बैठी रो रही थी ।

"भगवान् को धन्यवाद है, सीतालक्ष्मी इतनी निष्ठुर नही हो सकती थी, यह केवल सपना था ।" अपने मन मे यह सोचकर रामनाथ प्रसन्न हुए ।

इसके बाद बहुत दिनो तक रामनाथ देवयानी को बाजार मे, रेलवे स्टेशन पर, सिनेमा मे, हर जगह खोजते रहे, लेकिन वह उन्हे फिर दिखाई नहीं दी ।

: ११ :

चुनाव

कोट्टूर ज़िले के इसी नाम के सब से बड़े कस्बे में हरिजनों का एक मोहल्ला है जो पहले कट्टांचेरी कहलाता था लेकिन अब पिछले चार वर्ष से जेम्सपेट कहलाने लगा है। उसी मोहल्ले में सीरंग नाम का एक हरिजन रहता था। वहां के करीब तीस अछूतों में अकेला वही ऐसा था जो अपना पेट अच्छी तरह पाल लेता था। जेम्सपेट के निवासी अधिकतर कुली थे जो सोनाई पहाड़ के बगीचों में रोज की मजदूरी पर काम कर अपनी जीविका चलाते थे। सीरंग कुलीगीरी नहीं करता था, वह कोट्टूर और पास के दूसरे बाज़ारों से चीजें खरीद कर लाता था और कॉफी के बगीचों में के यूरोपियन मालिकों के यहां थोड़े-से मुनाफे पर बेच देता था। इस तरह वह अच्छी खासी रकम पैदा कर लेता था। पहाड़ के सभी स्त्री-पुरुष उससे दयालुतापूर्वक व्यवहार करते थे और उस पर विश्वास करते थे।

ठेकेदार सीरंग की ईमानदारी और अच्छी आदतों की खबर कोट्टूर के कलक्टर को भी मिल चुकी थी। जब म्युनिसिपल बोर्ड में हरिजन मेम्बर की जगह ख़ाली हुई तो पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, ज़िला के मेडिकल अफसर और लन्दन मिशन के पादरी ने अंगरेज़ी क्लब के ख़ानसामा स्वामिप्रिय को उस जगह पर नामज़द करने के लिए कलक्टर पर जोर डाला; लेकिन कलक्टर की पत्नी ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और कहा कि पहाड़ पर रहनेवाली सब अंगरेज़ औरतें सीरंग ठेकेदार के पक्ष में है, इसलिए

इस जगह पर उसी को नियुक्त करना चाहिए। स्वभावतः वह अपने पति को यह समझाने में मफल हो सकी कि जो कुछ मैं कह रही हू वही ठीक है ।

"आप लोग नही समझते कि अगर हम क्लब के चपरासी को नामज़द करेंगे तो शहर के देशभक्त इसके विरुद्ध आन्दोलन करेंगे और उपद्रव उठायगे । हमे होशियारी से काम करना चाहिए," कलक्टर ने दूसरे अफ़सरो को समझाते हुए कहा और इस प्रकार उनकी आपत्तियो का समाधान करते हुए मीरग का नाम पेश कर उसे नामज़द करा दिया ।

मीरग की समृद्धि उसी समय मे कम होने लगी। अब वह बड़ा आदमी बन गया था। कलक्टर और बड़े-बड़े अफ़सर उससे हाथ मिलाते और बातचीत करते थे। अब उसने अपने कारबार की ठीक तरह से देखभाल करनी छोड़ दी थी। चीज़े ख़रीदने के लिए खुद न जाकर वह अब अपने भतीज वरद को भेजता था। पहाड़ी पर वह दिन में केवल एक बार जाता था और अपने बदले ज़्यादातर भतीजे को ही भेज देता था। उसे वह अपने मुनाफ़े म-से हिस्सा देता था ।

जैसे-जैसे सीरंग का ध्यान अपने व्यापार की ओर से कम होता गया वैसे-वैमे मुनाफ़ा भी कम होता गया। उसे अब अपने परिवार के ख़र्च के लिए रुपया नही बचता था, इसलिए वह बाग़वानों की पत्नियों से पेशगी मिला हुआ रुपया ख़र्च करने लगा। यह सोचकर कि यह हमारा पुराना और ईमानदार ग्राहक है और अब म्युनिसिपल-कौसिलर के पद पर है, दूकानदार उसे उधार दे देते थे। लेकिन अब सीरंग को औरतों को हिसाब देते समय कुछ झूठ बोलना पड़ता था। व्यापार में जब कोई बेईमानी करने लगता है, चाहे वह कम हो या ज़्यादा, तो उससे जल्दी ही उलझने पैदा होने लगती हैं और अन्त में व्यापारी सदा के लिए नष्ट हो जाता है। यही बात सीरंग के साथ हुई। उसने पहले जो मान पाया था उसे अब वह खो बैठा। पहले लोग कुछ तो हंसी में और कुछ गंभीरता के साथ–

कहा करते थे कि सीरग सब मे ज़्यादा ईमानदार कौंसिलर है, लेकिन अब उनका यह कहना भी बन्द हो गया ।

२

म्युनिसिपेलिटी के चेयरमैन गोपाल चेट्टियार की एकाएक मृत्यु हो गई और उनकी जगह दूसरे आदमी के चुनाव के लिए तैयारिया होने लगी। एक ओर तो सूत के बड़े व्यापारी धनपाल चेट्टियार खड़े हुए और दूसरी ओर वकील रामस्वामी मुदलियार उनके विरोध में उठे । एक महीने तक बाजार में और वकीलों के बीच बस इसी चुनाव की चर्चा रही।

रायों के लिए दौड़धूप शुरू हुई। चुनाव की तारीख निश्चित होने से चार दिन पहले सुनाई पड़ा कि रुपया पानी की तरह बहाया जा रहा है । कुछ ने कहा कि चेट्टियार ने हर मेम्बर के वोट के लिए एक-एक दो-दो हजार रुपये लगाये है। यह बात कुछ अशो मे ठीक थी और कुछ अशो मे गलत भी। रामस्वामी मुदलियार ने बिल्कुल साफ तौर पर कह दिया कि मै इस तरह की चाले नहीं चलूगा। इससे उनके मित्रो का उत्साह ठंढा पड़ गया। उनकी सलाह न मानकर मुदलियार अपने इरादे पर दृढतापूर्वक जमे रहे ।

चुनाव सोमवार की सुबह आठ बजे होनेवाला था। एक दिन पहले, इतवार की रात को आठ बजे मुदलियार के गाढे मित्र उनके घर पर जमा हुए।

"ठीक है, तुम्हारा तो कुछ नही बिगड़ेगा, लेकिन हम लोगो की नाक कट जायगी", सूघनी के व्यापारी रग पिल्लै ने कहा ।

"इस हार के बाद हम कोट्टूर मे नही रह सकते, हमे कही और चला जाना पड़ेगा," सीतारामैयर दूकानदार बोले ।

मुदलियार ने कोई जवाब नही दिया ।

सीतारामैयर ने फिर कहा—"तो इसका मतलब यह है कि यह आदमी पब्लिक को बेईमान बनाता और म्युनिसिपेलिटी को बरबाद करता रहे और हम खड़े-खड़े तमाशा देखते रहे ।"

"आजकल की बेईमानी को हम कहा तक रोक सकते है ? पहले के चेयरमैन बड़े इज़्ज़तवाले होते थे। आजकल तो ईमानदार आदमियो को कही कोई मौका ही नही है," मुदलियार ने कहा।

"मुदलियार साहब ! जहर को जहर ही मारता है। आपको इस मामले में ज़्यादा दिलचस्पी लेनी चाहिए। इस तरह की उदासीनता मे काम नही चलेगा," वैद्य राघवाचारी बोले ।

दो मिनिट बाद घडी ने नौ बजाये। "देखिये, घड़ी भी हमे अच्छा शकुन बता रही है, अब हमे वक्त बरबाद नही करना चाहिए ?" यह कहते हुए सीतारामैयर खडे हो गये और मुदलियार के कंधे पर हाथ रख-कर उन्हें बड़ी मोहब्बत के साथ उनके दफ्तर मे ले गये।

एक घंटे तक दोनो ने एकान्त मे बातचीत की। तब सीतारामैयर मुसकराते हुए बाहर आये और सभा को सम्बोधित करते हुए बोले—"सब कुछ ठीक है। काम पूरा हो गया। अब आप लोग जो कुछ जरूरी समझें करें। सब कुछ एक रात मे ही करना है।" यह समाचार सुन सब खुशी से खिल उठे ।

३

सारी रात मोटरें दौड़ती रही। दो बजे मुदलियार के घर ख़बर पहुंची कि पैंतीस मेम्बरो में-से सत्तरह उन्हे राय देने के लिए पक्के हो गये है। इनमें-से दस ने तो चेट्टियार के भेजे हुए रुपये लौटा दिये है और सात ने कहा है कि हम किसी और से भी रुपया नहीं लेंगे लेकिन मुदलियार को अपनी राय अवश्य देंगे। बस एक राय और पक्की करनी रह गई थी। बाकी अठारह कौसिलरों मे-से एक किसी काम से नागपटन गया हुआ था और वह दूसरे दिन तक वापस नही लौट सकता था। सोलह रायें धनपाल चेट्टियार की पक्की थी, उनमे से एक भी नहीं तोड़ी जा सकती थी। केवल सीरंग की राय बची थी और वह अनिश्चित थी ।

चारों ओर ढूढने पर भी अभी तक सीरंग का पता नही लगा था मालूम हुआ कि वह पहाड़ी पर गया है ।

"उसके छोटे भाई मास्टर मुनिस्वामी से भी पूछा ?" सूघनी के व्यापारी रंगपिल्लै ने कहा।

"हा, हम उसके पास गये थे। वह कभी कुछ कहता है, कभी कुछ। पहले उसने कहा कि शायद सीरंग पहाडी पर गया है, फिर बोला कि घरमे ही कहीं छिपा है। परेशानी की इन बातो मे भला ग़रीब आदमी अपने को क्यों फंसाय ? उन्हे तो चतुराई से काम करना होता अगर वे एक के भले बनेंगे तो दूसरा उनसे बिगड़ जायगा।"

"ऐसा मालूम होता है कि एडी-चोटी का पसीना एक करने पर भी नतीजा कुछ नही निकलेगा", सीतारामैयर बोले।

"निराश होने से क्या फायदा ?" यह कहते हुए रंग पिल्लै गुस्से में उठकर खड़े हो गये।

"तो तुम खुद ही क्यो नही कोशिश करके देखते ?" सीतारामैयर ने ताना मारते हुए कहा।

"हम ग़रीबों का कौन विश्वास करेगा ? हम अमीर थोडे ही है," रगपिल्लै ने उत्तर दिया।

"मुदलियार ! सब कुछ रग पिल्लै को ही करने दो; अब मै कुछ नही करूगा। मेरा अब इस मामले से कोई वास्ता नही।" सीतारामैयर ने कहा।

"यह झगड़ने का वक्त नही है," वीरराघव चेट्टियार ने कहा और सीतारामैयर को, जो उठकर खड़े हो गये थे, पकड़कर फिर उनकी जगह पर बैठा दिया। फिर वह मुदलियार के पास जाकर बोले —"हमें तो इस काम में हाथ ही नही डालना चाहिए था, लेकिन जब हमने एक बार काम उठा लिया है तो उसे कामयाबी के साथ पूरा करना चाहिए। हम जो कुछ चेष्टा करके पा रहे है उसे क्या मुह से बोलकर खो दें ? सीरंग का मामला रंग पिल्लै के सिपुर्द कर दो, आगे भगवान् मालिक। हम ज़रूर जीतेंगे।"

मुदलियार भी उस समय जोश मे थे। वह अन्दर गये। बक्स के खुलने और बन्द होने की आवाज आई। मुदलियार हाथ में एक थैली

लिये हुए बाहर निकले और रंग पिल्लै को साथ लेकर दूसरे कमरे में चले गये।

४

सूघनी के व्यापारी रग पिल्लै जेम्सपेट पहुचकर मुनिस्वामी से मिले। उन्होंने बिना कुछ कहे-सुने कागज के पाच बंडलों में लपेटे हुए चांदी के सौ रुपये उसके हाथ पर रख दिये। मुनिस्वामी ने अपने जीवन में, कभी सपने तक में भी, इतने-सारे चादी के रुपये एक साथ नही छुए थे। वह रंग पिल्लै की ओर टकटकी बाधकर देखता रहा। उसकी आंखों में पागलपन की-सी झलक थी।

रग पिल्लै ने कहा—"बहुत-से आदमियो ने तुम्हें बुरा-भला कहा होगा। इन दिनों गरीबो की मदद कौन करता है और कौन उनपर विश्वास करता है? यह तो गरीब ही जानते है कि उन्हें कैसी-कैसी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। भाई! ये रुपये तुम्हारे हो चुके; हम जीतें चाहे हारे। मुझे सच-सच बता दो कि सीरग कहा है?"

"मै आपसे झूठ नही बोलूगा। सीरग को धनपाल चेट्टियार ने अपने अस्तबल में ताले में बन्द कर रखा है और कडा पहरा लगा रखा है। आपको शायद पता नही कि उसने चेट्टियार से डेढ़ सौ रुपये उधार ले रखे हैं। वे कल उसे अपने साथ म्युनिसिपेलिटी के दफ़्तर ले जायंगे," अध्यापक मुनिस्वामी ने बताया।

"अच्छा मुनिस्वामी सुनो, इस मामले मे जैसा मै कहू वैसा करो। रुपये का कोई ख़याल नही," रग पिल्लै ने कहा।

थोडी देर तक वे कानाफूसी करते रहे। तब यह कहते हुए कि जरा ठहरिये, मुनिस्वामी घर के भीतर चला गया।

कुछ समय तक सीरंग की मा से बातचीत करने के बाद वह बाहर आया और चेरी मारिअम्मा मन्दिर के सामने वाली पत्थर की बेंच पर रंग पिल्लै को बैठाकर और स्वय उनकी गाडी पर चढकर धनपाल चेट्टियर के मकान की ओर चल दिया।

धनपाल चेट्टियार अपने घर की बरसाती मे अपने मित्रो के साथ बेंच पर बैठे हुए थे। लालटेन की रोशनी में वह पेंसिल से कुछ लिख रहे थे। मुनिस्वामी गाड़ी से उतरकर चेट्टियार के पैरों में गिर पड़ा और बोला — "मालिक, इस वक्त आकर मैंने आपके काम में जो रुकावट डाली है उसके लिए माफ़ कीजिए। सीरंग की मा मर रही है; कह नही सकता कि वापस लौटने पर जिन्दा मिलेगी या नही। आप सीरंग को भेज दीजिये, वह अपनी मा से मिल आय।"

"एकाएक उस बुढ़िया को क्या हो गया ? यह सब गडबड़घोटाला है। मालूम होता है मुदलियार ने तुम्हें यहा भेजा है," धनपाल चेट्टियार ने कहा।

"भगवान जानता हे, मालिक ! झूठ बोलकर हम बच थोड़े ही सकते हे। बुढ़िया को सचमच दस्त आ रहे है, वह बचेगी नही। उसे कल बीस दस्त आ चुके है और वह बेहोश पड़ी है। मं हाथ जोड़ता हू, किसी तरह मेरे भाई को भेज दीजिये, नहीं तो हमारी मा की आत्मा तडपती रह जायगी," यह कहकर वह बड़े करुणाजनक ढग से रोने लगा।

"अच्छी बात है। श्रीनिवासैयर, तुम सीरंग के साथ जाओ और देखकर आओ कि बात क्या है," चेटिटयार ने अपने क्लर्क से कहा।

"इसमें कोई चाल है। चेट्टियार तो सब पर विश्वास कर लेते है किसी ने कहा।

क्लर्क श्रीनिवासैयर अन्दर गया और सीरंग को अस्तबल मे निकाल कर पीछे के रास्ते गाड़ी के पास ले गया। मुनिस्वामी भी वही पहुंच गया।

"तुम सोच क्या रहे हो ? गाड़ी में बैठ जाओ," धनपाल चेट्टियार ने कहा।

छुआछूत का विचार उस समय मिट गया था। चुनाव के कामों में इन बातो पर कैसे ध्यान दिया जा सकता है ! दोनों एक ही गाड़ी में सवार हो गये।

५

जेम्सपेट पहुचकर जब गाड़ी सीरंग के घर के सामने ठहरी तो अन्दर से बड़े जोर से रोने की आवाज आई।

"बात तो सच मालूम होती है," श्रीनिवासैयर ने मन में सोचा और सीरंग से कहा कि घर में जाकर देखो क्या बात है।

सीरग और मुनिस्वामी अन्दर गये। थोड़ी देर बाद मुनिस्वामी बाहर निकला और ब्राह्मण के कान में यह कहकर कि प्राण निकल गये, फिर अन्दर चला गया।

"हाय, तुम तो चल बसी, हाय तुम हमे छोड़ गई, हमारा तो घर बरबाद हो गया," अन्दर से विलाप करने की आवाज आई।

श्रीनिवासैयर ने एक लड़के से, जो उसके पास खड़ा उसे देख रहा था, पूछा—"इस घर में क्या हो गया है ?"

"आपको नही मालूम ? बुढ़िया को हैजा हो गया था; वह मर गई," लड़के ने जवाब दिया।

श्रीनिवासैयर के होश उड़ गये। एक तो अछूतो की बस्ती और दूसरे हैजा ! उसने तय किया कि यहा रुकने से कोई लाभ नही। इतने में मुनिस्वामी भी बाहर आ गया और बोला—"बुढिया बेहोश है, साहब ! न तो वह बोलती है, न उसे सांस आती है। शायद वह मर चुकी है। सीरग की जिम्मेदारी मैं लेता हूं, आप जाइये।" ऐयर जल्दी-जल्दी घर की ओर चल पड़ा।

घर के अन्दर बुढिया ने इशारा करके अपने बेटे को अपने पास बुलाया। सीरंग अपना कान अपनी मा के मुंह के पास ले गया।

"मेरे बच्चे, वे एक हजार रुपया देने को कहते है। इसे इन्कार नही करना चाहिए। पागलपन मत कर और बुढ़िया का कहना मान।"

"बात क्या है ? क्या तुमने इसीलिए मुझे बुलाया है ?" सीरंग बोला।

ओह !" मुनिस्वामी ने जोर से कहा और दूसरों ने भी उसका साथ दिया। वे सब-के-सब जोर-जोर से रोने लगे।

"मेरे बच्चे !" बूढ़ी औरत ने फिर कहा, "मुझे हैजा-वैजा कुछ नही हुआ है, लेकिन मुझे कुछ अजीब-सा लग रहा है। सूंघनी बेचने वाला जो हजार रुपये लाया है वह ले लो और इस अभागे कारबार को बद कर दो। अपना कर्ज उतारकर भले आदमियों की-सी जिन्दगी बिताओ। मुझे अब ज्यादा दिन जीना नही है।"

सीरंग भय, क्रोध और आश्चर्य से परेशान चुपचाप खडा रहा। घर वाले मुनिस्वामी के संकेत के अनुसार एक बार फिर "हाय, हाय" कर रो बैठे।

६

सीरग आकर रग पिल्लै के पास खड़ा हो गया। रग पिल्लै ने कहा — "सीरंग, गाड़ी में बैठो। मुदलियार के घर पहुचकर मै तुम्हें सब बातें समझा दूगा।" वे सब अन्दर बैठ गये और रग पिल्लै ने कहना शुरु किया — "सीरंग, तुम बड़े भाग्यवान् हो। जब सारे आदमी इस तरह रुपया कमा रहे है तो तुम ही क्यों चूको ? तुमने ही क्या कसूर किया है ? इस मौके को हाथ से न जाने दो। बताओ, तुम क्या चाहते हो ? उसे पूरा कराने की जिम्मेदारी मै लेता हू।" जब तक गाड़ी मुदलियार के घर पहुची तब तक वह सीरंग से इसी तरह की बात करते रहे।

रंग पिल्लै ने जाकर मुदलियार से थोड़ी देर एकान्त में बातचीत की। तब वह हाथ में एक कपडे की पोटली लिये हुए सीरंग के पास आये। सीरग बरामदे के बाहर बैठा था। पोटली उसके सामने रखते हुए रग पिल्लै ने कहा —"देखो, इसमें इतना रुपया है जितना तुम जिन्दगी भर काम करके भी नही कमा सकते। अपना सारा कर्ज चुका दो और कोई कारबार शुरू करो। मुदलियार तुम्हें इससे भी ज्यादा रुपया देगे। वह इस बात का ध्यान रखेंगे कि तुम्हें किसी बात की कमी न रहे।"

सीरंग गूंगा बना बैठा रहा।

वीरराघव चेट्टियार ने पोटली उठाकर सीरग की गोद में डाल दी और कहा—"उठो और शपथ लो। सब बात पक्की हो गई, अब किस सोच-विचार में पड़े हो ?"

सीरंग ने पोटली अपनी गोद में से उठाकर एक तरफ जमीन में रख दी और एक मिनिट तक वह सोचने का बहाना करता रहा। सब लोग चुपचाप इस इन्तजार में रहे कि यह कुछ कहेगा।

लेकिन लोगों के देखते ही देखते वह कूदकर गली में भाग गया। कुछ आदमी उसके पीछे दौड़े, लेकिन वह इतना तेज भागा कि जल्दी ही सब की आंखो से ओझल हो गया। "चला गया," यह कहते हुए सब लोग वापस आ गये।

मुदलियार रुपयो की थैली उठा अन्दर चले गये। उसे ताले में बन्दकर वह लौटे और बोले—'देखा, बदमाश ने हमें कैसा धोखा दिया ?"

"अपनी नीच जाति का सबूत दिया है," सबने मिलकर कहा।

× × ×

दूसरे दिन चुनाव के समय सीरंग मौजूद नही था।

"उसकी मा मर गई," एक ने कहा।

"नही,नही, वह सब चाल थी," दूसरे बोले।

जो कौंसिलर नागपटन गया था वह लौट आया था और राय देने को तैयार था।

"धनपाल चेट्टियार को छब्बीस रायें मिलेंगी," किसी ने कहा।

"नही जी, दोनों को सत्तरह-सत्तरह मिलेंगी और एक निर्णायक राय होगी," दूसरे ने कहा।

"सब रुपये का खेल है," तीसरा बोला।

"वे रुपया भी लेंगे और बदमाशो को धोखा भी देंगे," एक ओर बोला।

अन्त में धनपाल चेट्टियार को तेइस वोट मिले और मुदलियार को दस। एक कोरा कागज था। इस परिणाम को सुनकर बाहर भीड़ ने धनपाल चेट्टियार की जय पुकारी।

"बेईमानी," दूसरी तरफ के आदमियो ने चिल्लाकर कहा।

"ईमानदार तो सिर्फ सीरंग है," मुदलियार ने कहा।

: १२ :

देव-दर्शन

सुन्दर चेट्टियार एक बजाज था। थोड़ी-सी पूंजी से कारबार शुरू कर उसने अपनी ईमानदारी और चतुराई से जल्दी ही बहुत-सा धन कमा लिया था। उसकी पत्नी मीनाक्षी बड़ी धर्मात्मा थी। वह जीवन के पुराने नियमों का पालन करती थी और हर महीने एकादशी के दिन कड़ा व्रत रखती थी। दोपहर को वह प्रतिदिन घर से बाहर जाकर पहले कौओं और चिड़ियों के लिए चावल फैला आती और उसके बाद स्वयं भोजन करने बैठती। चेट्टियार उसका बड़ा आदर करता था। उसे विश्वास था कि मेरे व्यापार में उन्नतिमे री पत्नी की धर्मपरायणता के ही कारण हुई है।

"जय सीताराम !" साधु के वेश मेंए क अधेड़ उम्र के पुरुष ने चेट्टियार के घर में प्रवेश करते हुए कहा। उसके हाथ में कमण्डलु था और मुख पर तेज।

यह दीपावली से एक दिन पहले की बात है। चेट्टियार की पत्नी ने अंजलि में चावल भर कर साधु का स्वागत किया, किन्तु उस आदरणीय व्यक्ति ने कहा — "मुझे चावल नहीं चाहिए; भोजन की इच्छा है।"

"भोजन अभी तैयार हुआ जाता है; कृपा कर थोड़ी देर ठहर जाइये," मीनाक्षी ने कहा और साधु को बैठने के लिए एक पटिया बिछा दी।

भोजन कर चुकने के बाद साधु बोला—'देवि, तुम्हें कभी किसी बात की कमी नहीं रहेगी। तुम धर्मात्मा और पतिव्रता स्त्री हो। मैं

तुम्हें एक पवित्र मत्र सिखाता हूं। अगर तुम सिर पर तेल मलकर स्नान करने के बाद इस मंत्र का जाप करो तो तुम अपने पुरखो, स्वर्ग के देवताओं और ऋषियों के दर्शन कर सकोगी।"

सुन्दर चेट्टियार की धर्मपरायणा स्त्री यह सुनकर बहुत आनन्दित हुई और उसने मंत्र सीख लिया। अगले दिन वह बडे तड़के उठी और तेल मलकर नहाई। इसके बाद उसने साधु के कहने के अनुसार मत्र का १००८ वार जप किया। जाप के समाप्त होते ही उसे जयजयकार और शंखों की ध्वनि सुनाई दी। पूजा के स्थान के सामने एक बहुत बड़ी भीड़ खड़ी थी, जहां चमकते हुए सिहासन वृत्ताकार में सजे हुए थे और उनपर देदीप्यमान महापुरुष विराजमान थे।

सुन्दर चेट्टियार की पत्नी ने देखा कि उनमे उसके पति के परपितामह के अतिरिक्त और भी कई व्यक्ति थे। एक के हाथ में बांसुरी थी, वह कृष्ण भगवान् मालूम होते थे। उनके बराबर ही हाथ में बड़ा-सा धनुष लिये जो खड़े थे वह राम जैसे दिखाई देते थे। उनके बाद वृद्ध ऋषि वसिष्ठ खड़े थे। अपना हल लिये बलराम भी वहां विद्यमान थे और अपना फरसा सम्हाले क्रोधी परशुराम भी। दूसरी ओर अर्जुन, भीम और धर्मपुत्र युधिष्ठिर बैठे थे। मीनाक्षी ने जिधर भी दृष्टि फेरी उधर ही उसे भारत के ऋषियों और महापुरुषों के दर्शन हुए। ऐसा मालूम होता था कि वे अपना रूप बदल रहे है ; कभी वे एक रूप में दिखाई देते थे, कभी दूसरे में। भीड़ इतनी थी कि तिल रखने की भी जगह नही थी। इस दृश्य को देखकर मीनाक्षी आनन्द से गद्गद् हो गई और "नारायण" कहकर मूच्छित हो गई।

पत्नी की चीख सुनकर चेट्टियार जल्दी-जल्दी सीढियों से उतरता हुआ नीचे आया। वहां उसने जो कुछ देखा वह उसकी समझ में नही आया। "ये अजीब तरह की पोशाकें पहने यहां कौन लोग बैठे है ?" किसने यह अभिनय रचा है ?" चारों ओर देखकर उसने अपने मन मे सोचा। बजाज होने के कारण उसका ध्यान सबसे पहले उनके कपड़ो

की ओर गया । "यह तो गाधीजी के अनुयायियो का प्रदर्शन मालूम होता है", उसने फिर मन में सोचा। सब-के-सब खद्दर पहने हुए थे। किसी ने बहुत मोटा खद्दर पहन रखा था, किसी ने बहुत महीन और किसी ने बीच के सूत था। लेकिन थे सब कपड़े खद्दर के ही।

"श्रीमानो ! आप यहा क्यो पधारे है ? पुलिस आपत्ति करेगी", चेट्टियार ने कहा ।

सब-के-सब खिलखिलाकर हस पड़े ।

"आप हस सकते है। हो सकता है कि आप जेल जाने को तैयार हों, लेकिन मै तैयार नही हू," चेट्टियार बोला। "आप लोग कृपा कर कही दूसरे घर मे चले जायं। अगला ही मकान एक वकील का है , आप वहा जाकर यह प्रदर्शन कर सकते है ।"

एक बूढे महाशय ने चेट्टियार के पास आकर कहा—"बेटा , क्या तूने मुझे पहचाना नही ? सुन्दर, मे तेरे बाबा का बाप हू जिसने तेरे बाप को जन्म दिया था। तू डरता क्यो है ?" यह कह कर उन्होंने चेट्टियार को छाती मे चिपटाकर स्नेहपूर्वक प्यार किया ।

"वृद्ध महाशय ! आपका अभिनय सचमुच बहुत सुन्दर है, में आपके चरण छूता हूं। लेकिन कृपा कर मेरे घर से चले जाइये, मै अपने घर मे यह खद्दर की सभा नही चाहता। आज त्योहार है, इसलिये मै उचित नही समझता कि ऐसे दिन पुलिस आकर हमें परेशान करे," चेट्टियार ने कहा ।

"खद्दर से तुम्हारा क्या मतलब है, बेटे ? हम तो इसके सिवा और कोई दूसरा कपड़ा ही नही जानते । मै जब यहा इस पृथ्वी पर रहता था तब भी सिर्फ इसी तरह के कपडे पहनता था। मै ही नहीं, हम सब इसी किस्म के कपड़े पहनते थे। हम करते भी क्या ? इसके अलावा कोई दूसरा कपड़ा ही नहीं था। इन्ही कपडों को पहने-पहने मै स्वर्ग चला गया। स्वर्ग में कपड़े न घिसते न फटते। तुम्हारी पतिव्रता स्त्री ने मुझे पुकारा और मै जल्दी में चला आया," वृद्ध महाशय ने कहा।

चेट्टियार हक्काबक्का रह गया। "ये सब व्यर्थ की बाते है, जरूर यह कांग्रेसियो की कोई सभा है, नही तो ये सब-के-सब खद्दर क्यों पहने होते ?" मन मे यह सोच चेट्टियार धर्मपुत्र के पास गया जिनकी वेशभूषा से ही विश्वास की भावना उत्पन्न हो रही थी। उनके सामने साष्टांग पड़कर उसने कहा — "श्रीमान, आप सच्चे आदमी मालूम होते है, मुझे ठीक-ठीक बताइये कि यह सब क्या है ?"

"सब ठीक है, बेटा ! चिन्ता या भय करने की कोई बात नही। जब हम इस पृथ्वी पर रहते थे तो हाथ के कते-बुने कपडे के सिवा कोई दूसरा कपड़ा जानते ही नही थे। तुम अब उसी कपडे को खद्दर कहते हो। हमारे पास दूसरी तरह का कोई कपडा नही था जिसे हम पहन सकते। उन दिनों भारत में कपड़ा बहुत था और बाहर से नही आता था, बल्कि हम ही यहा से बाहर कपड़ा भेजा करते थे। मिले न हमारे देश में थी, न कही और। स्वर्ग में तो हमलोग अब भी यही कपडा पहनते है। तुम भी ऐसा ही क्यों नही करते ? सुनता हूं कि देश मे बडी गरीबी है। क्या यह बात सच है ?"

सब को अच्छी तरह प्रणाम करने के बाद चेट्टियार मे काफी साहस आ गया और उसने हरेक का कपडा अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच रगड़कर देखा। राम, बलराम, कृष्ण, परशुराम, भीष्म, अर्जुन सभी ने शुद्ध खद्दर पहन रखा था।

"यह अजीब बात है ! मै तो सोचता था कि केवल महात्मा गाधी ने हाल मे यह मजाक शुरू किया है और वही हरेक पर खद्दर पहनने के लिए जोर डाल रहे है। लेकिन इस समाज में तो सबने खद्दर पहन रखा है," चेट्टियार ने मन-ही-मन मे सोचा और अपनी पत्नी की ओर देखा।

मीनाक्षी अभी उस स्वर्गीय आनन्द की मूर्च्छा से पूरी तरह जागी भी नही थी कि सबने एक साथ मिलकर कहा —"भगवान तुम्हें सुखी रखें, अब हम जाते है," और चेट्टियार का बडा कमरा खाली हो गया।

यह बिलकुल सच है कि हमारे पुरखों के पास कोई दूसरी तरह का कपड़ा नही था। उसी कपड़े को पहने-पहने वे स्वर्ग सिधार गये थे और स्वर्ग में अब भी उसे ही पहने हुए हे। वही कपडा हम यहा भी क्यो न पहनें ? यह विश्वास किया जा सकना है कि ऐसा करने से हम अपनी पुरानी महानता को भी प्राप्त कर लेगे।

: १३ :

अबोध बालक

"मा, जब मै सफेद गाय के पास जाता हूं तो वह मुझे सीग से डराती है, लेकिन करुप के सामने चुपचाप खडी रहती है; यह क्या बात है ?"

"वह उससे परच गई है , इसलिए उसके सामने चुपचाप खडी रहती है। तुमने नही परची है, इसलिए तुम्हें मारती है।"

"मै भी उसे परचा लूं, मा ?"

"नही, नही, तुम्हें क्या करना है ? तुम खेलो-कूदो। वह तो अछूत है, इसलिए उसे गाय चरानी पडती है। आओ , केक खा लो।"

मुब्बु था तो चार साल का, लेकिन अपनी अवस्था के लिहाज से वह बहुत बढचढ़कर बातें किया करता था और उसके माता-पिता उसे बडा लाड-प्यार करते थे । उससे पहले उसके दो बहनें हो चुकी थी।

"मा, तुम ऐसे केक कैसे बनाती हो ?"

"चीनी, दाल और नारियल की गिरी मिलाकर। खाकर बताओ, अच्छा है या नही।"

"अछूत क्या होता है ? करुप घर के अंदर क्यों नही आता ? और तो सब आते है।"

"वह अछूत जो है ।"

"लेकिन अछूत क्या होता है ?"

"मै बनाऊंगी तो तुम्हारी समझ मे नही आयगा । सवाल-जवाब छोडो और अपनी पोली खाओ ।"

"मैं नहीं खाता । करुप घर के अंदर क्यो नही आता ?"

"बकवास बन्द करो और भाग जाओ । देखते नही, वह कितना मैला है । अगर वह घर मे आयगा तो हम सब मैले हो जायंगे ।"

"मैला किसे कहते हैं, मा ? गोबर को ?"

"गोबर मैला नही होता । उसका बदन बहुत मैला है, वह कभी नही नहाता, वह अछूत है ।"

"तो मै करुप को अपने घर मे नहाने के लिए कह दू ?"

"क्यों बकबक करते हो ? भाग जाओ । उसके साथ मत खेलना ।"

"मै तो उसीके साथ खेलूंगा और किसी के नही । उसे भी एक पोली दो ।"

"नही अछूत के लड़के को पोली नही दी जाती । अगर मै उसे दे दूगी तो घर मे रखी हुई सब पोली गन्दी हो जायगी । जाओ तुम्हे बाहर चाचा बुला रहे हैं । जाकर देखो वह क्या चाहते है ।"

"पहले मुझे दूसरी पोली दो, मै उसे जरूर दूगा । उसे भी एक पोली खाने दो ।"

'नहीं; पहले यहा बैठ कर इसे खालो तब जाना, लेकिन उसके पास मत फटकना ।"

"तो मै नहीं लेता," वह बोला और पोली नीचे रख कर घर के पीछे वाले आगन में भाग गया ।"

× × ×

"करुप, क्या तुम अछूत हो ?"

"हां ।"

"क्या मै भी अछूत हू ?"

"नहीं, नही; तुम तो ब्राह्मण हो । अछूत मै हूं ।"

"तुम्हारे मा है ?"

"हां, मेरे मा है।"

"क्या वह मेरी मा-जैसी है ?"

"हां।"

"क्या वह तुम्हारे लिए पोली बनाती है ?"

"पोली ! नही हमारे घर में पोली नही होती," उसने हसते हुए कहा।

"आज दीवाली है। आज हम सब तेल मलकर गरम पानी मे नहाये है। क्या तुम भी नहाये हो ?"

"हमारा कुआ सूख गया है और तेल खरीदने के लिए हमारे बाप के पास पैसा कहा से आया ?"

"हमारे घर मे नहा लो।"

"राम-राम, क्या तुम्हारी मा मुझे अन्दर घुसने देंगी ?"

"तुम मेरे साथ आओ। अगर तुम नहाकर साफ हो जाओगे तो वह तुम्हे घर के अन्दर जाने देंगी।"

"नही जाने देंगी। ठोकर मारकर वह मुझे बाहर निकाल देगी।"

"नही, नही, मेरी मा तुम्हें कभी नही पीटेगी।"

वे बाते कर ही रहे थे कि कृष्णैयर चाचा आ गये।

"तुम यहां हो सुब्बु ! देखो यह पटाखों का पाकिट।"

"सुब्बु कूद कर चाचा के कधे पर चढ़ गया। कृष्णैयर ने उसे प्यार कर पटाखो का पाकिट दे दिया और कहा -- "क्या तुम इन्हें सुलगाना जानते हो ?"

हा, हा, जानता हूं," उसने पाकिट खोलकर पटाखों को फैलाते हुए कहा। "इन्हें आधा-आधा कर दो और एक हिस्सा करुप को दे दो।"

"अछूत का लडका इनका क्या करेगा ? उसे छूना मत। आओ अन्दर चले" चाचा ने कहा और अछूत के लड़के की ओर देखकर धमकाया -- "क्यों बे अछूत के बच्चे, इतनी बदतमीजी ? हमारे लड़के के इतने पास मत आया कर। भाग यहां से।"

करुप भागकर कुछ दूर खडा हो गया, लेकिन उसकी आखे पटाखो के पाकिट पर ही लगी रही ।

मुब्बु की मा के आने पर कृष्णैयर ने कहा—"अपने लाडले बेटे को तो देखो, सावित्री ! चाहता है कि मै अछूत छोकरे को पटाखे दे दू ।" यह कहकर उन्होने मुब्बु को उठा कर प्यार किया ।

"कितना अच्छा है यह ! क्या बताऊ इसकी बाते ?" मा ने अभिमान के साथ कहा और उसे अपनी गोद मे उठाकर छाती से चिपटा लिया ।

मुब्बु की समझ मे कुछ नही आया । करुप गाय को बाहर निकालकर खेत पर चला गया ।

इतने मे मुब्बु की बहन पार्वती भारती का एक गीत गाती हुई आई—

"परैया स्वतत्र होगे ! तीया स्वतत्र होगे !

और पुलैया भी, पुलैया भी,

सब के लिए स्वतंत्रता, सब के लिए स्वतत्रता !

"मा, क्या तुमने आज का अखबार पढा है ? उसमे लिखा है कि अछूतो के लिए सारे मन्दिर खोल दिये जायगे," उसने मा से कहा ।

"क्या जाने इन सब बातो का क्या नतीजा निकलेगा," सावित्री ने कहा ।

"तुम्हे नही पता ? अब दुनिया उलट रही है," कृष्णैयर ने कहा ।

: १४ :

सीताराम

सब-कलक्टर सीताराम की तनख्वाह बारह सौ रुपया महीना थी। लेकिन वह अपने घर का खर्च बडी किफायत के साथ करते थे। शहर के दूसरे अफसर और उनकी पत्निया उन्हे मक्खीचूस कहा करती थी।

सीताराम और उनकी पत्नी मे परस्पर बडा प्रेम था, फिर भी उनमे एक भेद की बात थी। हर महीने तनख्वाह मिलते ही सीताराम नौ सौ रुपये इंग्लैण्ड भेज देते थे और उनकी पत्नी चेष्टा करने पर भी यह नही समझ पाई थी कि आखिर ये रुपया हर महीने क्यों भेजे जाते है। पहले वह समझती रही कि उनके पति रुपया इग्लैण्ड के किसी बैंक मे जमा होने के लिए भेजते है और यह सोचकर उन्हे बड़ी प्रसन्नता होती थी। किन्तु बाद मे उनकी समझ मे आया कि यह बात नही हो सकती। स्वयं अपनी इच्छा से धन बचाने मे और विवशतावश किसी को रुपये देने मे बड़ा अन्तर होता है, जो कि हमारे दैनिक व्यवहारो में और उसके कारण उत्पन्न होनेवाली मानसिक दशा द्वारा स्पष्ट दिखाई दे जाता है।

एक दिन सीताराम ने अपनी पत्नी से कहा—"जब मै इंग्लैण्ड में पढ रहा था तो मुझपर कर्ज हो गया था और उसी कर्ज को उतारने के लिए मै हर महीने रुपया भेजा करता हू।" लेकिन उनकी पत्नी की समझ में यह बात नही आई कि जब सारा खर्च ससुर करते रहे थे तो फिर पति पर कर्ज कैसे हुआ। फिर भी पत्नी को न तो शंका प्रकट करने की गुंजा-

इश होती है और न बहुत-से प्रश्न करने की। कभी चर्चा छिड़ती भी तो सीताराम चुपचाप बात बदल देते और दूसरा प्रसंग ले उठते। कभी-कभी उनकी पत्नी इंग्लैण्ड के जीवन के विषय में सुनी हुई बातों का ध्यान कर उद्विग्न हो उठती, किन्तु उनके प्रति सीताराम का प्रेमपूर्ण व्यवहार इन शंकाओ को टिकने न देता। "मुझे चिन्ता करने की जरूरत ही क्या है," वह सोचती, "बात चाहे कुछ भी हो, मै समझूगी कि उनकी तनख्वाह ३०० रुपये ही है।" ऐसी ही बातों से वह अपने आप को तसल्ली देती; भारतीय नारियो के परम्परागत पतिव्रत की विशेषता और शक्ति होती ही ऐसी है।

सीताराम ससुर के रुपये से इग्लैण्ड गये थे और वहां तीन वर्ष रहकर उन्होने आई. सी. एस. की परीक्षा पास की थी। जब वह इंग्लैण्ड के लिए रवाना हुए थे तो उनकी पत्नी सुन्दरी की अवस्था उन्नीस वर्ष की थी। वह बड़ी रूपवती थी, लेकिन गहने-कपडे पुराने ढंग के पहनती थी। वह समझती थी कि इस बात से उनके पति प्रसन्न होगे। उनका और उनकी मा दोनो का यह हार्दिक विश्वास था कि जितने ही अधिक गहने खरीदे और पहने जाते है उतनी ही अधिक सुन्दरता भी बढती है। इसके विपरीत, बेचारे सीताराम सोचते कि अगर मेरी पत्नी अपनी नाक से वह भद्दी नलकी और कान से वे बड़े-बड़े बुंदे निकालकर सिर्फ बारीक चूडियो का जोडा पहने रहे और पुराने ढंग की चक्करदार साड़ी के बजाय हलकी साड़ी नए ढग से सफाई के साथ पहने तो कितनी सुन्दर लगे! इसी तरह रेशमी किनारी की कोहनी तक लटकती हुई भद्दे रग की आस्तीनें भी उन्हे बुरी लगती और वह सोचते कि आस्तीने तो बिलकुल होनी ही नही चाहिए।

लेकिन सच पूछिये तो वह स्वय भी पुराने विचारों के थे। उन्हें अपनी पत्नी को यह बताने में बडा सकोच होता था कि पहनने-ओढने के बारे में उनके अपने विचार क्या है। वह सोचते कि अगर मै कहूंगा तब भी ये पुराने विचारवाले आदमी मेरी बात मानेंगे नहीं और इस

प्रकार वह असतोष के कीडे को अपना मस्तिष्क चाटने देते। वह सिनेमा जाते और वहा रूपवती स्त्रिया देखते—परदे पर दिखाई जानेवाली और सिनेमा देखने आने वाली भी। "एक ये है जो अपने रूप का अच्छे-से-अच्छा उपयोग करना जानती है और एक मेरी स्त्री है जो कोरी वृद्ध है," वह अपने मन मे विचार करते और अपने दुर्भाग्य पर ठडी आह भरकर रह जाते। लेकिन फिर यह सोचकर कि अच्छा इग्लैण्ड हो आऊ तो सब बाते ठीक करूगा, वह बात टाल देते और इससे उन्हे कुछ तसल्ली हो जाती।

सीताराम इग्लैण्ड पहुचे। जिधर भी उनकी दृष्टि गई उन्हे सुघडता-ही सुघडता दिखाई दी। उन्होने सोचा—"कैसा सुन्दर शरीर है! कैसे सुरुचिपूर्ण कपडे! मेल और अनुपात का कैसा सूक्ष्म विवेक! ये सुन्दर आचार-व्यवहार! ये चमकते हुए मुखडे! यह अनुकूल वातावरण! यह तो सचमुच स्वर्ग है, इससे अधिक मनुष्य और क्या चाह सकता है?"

कुछ दिनो तक इस स्वर्ग मे अप्सराओं के बीच रहने के बाद एक अप्सरा उनसे अधिक आत्मीयता के साथ मिलने-जुलने लगी। "इस स्वर्गीय जीव से तो केवल बाते करने में इतना आनन्द आता है!" उन्होंने सोचा कि जीवन को सुखी बनाने के लिए इसके अतिरिक्त और क्या चाहिए, न विवाह न बच्चे! ऐसा था वह सुख जो उन्हे उसके संग मात्र से मिलता था। उससे अलग होते ही वह उदास हो जाते। उन्हे अपनी पत्नी सुन्दरी की याद आती जिसे वह गांव मे छोड आये थे। धीरे-धीरे उसके लिए उनके मन में एक प्रकार की अरुचि-सी होने लगी।

एक दिन सीताराम के बुरे ग्रह पराकाष्ठा पर थे। उस अप्सरा ने अपना जाल बड़ी सफलता के साथ फैलाया था और अन्त मे सीताराम उसमे फंस ही गये। उन्होने उससे ब्याह करने का निश्चय कर लिया। बाते तै हुईं और तीन सप्ताह के भीतर-ही-भीतर सब कुछ

समाप्त हो गया। इंग्लैण्ड में ऐसा प्रबध होता है कि यदि कोई चाहे तो आध घंटे से भी कम में ब्याह सम्पन्न हो जाय।

शुरू-शुरू में बातें करते समय एक दिन सीताराम ने खुशी की एक गैर-जिम्मेदार भावना से प्रेरित हो उस स्त्री से कह दिया कि मैं अभी तक क्वारा हूं। स्वभावत: उन्हे बाद में भी यह असत्य निभाना पड़ा। ऐसी भूलो को सुधारना बडा मुश्किल होता है।

बाते इसी आधार पर आगे बढती रही और अन्त मे यह असत्य ब्याह के समय रजिस्टरी करनेवाले सरकारी अफसर के सामने दुहराया गया। ब्याह के समय इस प्रकार की घोषणा आवश्यक होती है, क्योंकि इंग्लैण्ड में पत्नी के जीवित रहते हुए कोई पुरुष दूसरी स्त्री के साथ ब्याह नही कर सकता। इस दृष्टिकोण से अंग्रेजी कानून में स्त्री और पुरुष में कोई अन्तर नही माना जाता।

सीताराम और उनकी अप्सरा ने विवाह के बाद फौरन ही पति-पत्नी की तरह जीवन बिताना आरम्भ नही किया। कुछ कठिनाइयां ऐसी थी जिनके कारण यह बात थोड़े दिनों के लिए रोकनी पडी। सीताराम ने अपने घर पत्र लिखा और कुछ कारण बताकर अधिक रुपया मंगवाया। ससुर ने रुपया भेज दिया और उसके बाद सीताराम अपनी अंग्रेज पत्नी के साथ रहने लगे।

सीताराम ने अनुभव किया कि उनकी अप्सरा का स्वभाव दिन पर दिन शीघ्रता के साथ बिगड़ता जा रहा है। जिस सुशीलता और सुघड़ता की पहले वह इतनी प्रशंसा किया करते थे वह धीरे-धीरे कम होती दिखाई दी और अन्त में बिलकुल लुप्त हो गई। उन्हे उसके स्वभाव में सचमुच की कठोरता दिखाई देने लगी, यहां तक कि एक दिन उन्होंने सोचा कि सुन्दरी निश्चय ही उससे ज्यादा अच्छी है।

जल्दी ही सीताराम को यह मालूम हो गया कि जिन सुन्दर होठों की मै प्रशंसा किया करता हूं वे लिपस्टिक से बराबर रगे रहने के कारण इतने भले मालूम पड़ते है और जब वे रंगे हुए नही होते तो

सचमुच भद्दे दिखाई देते है। कभी-कभी वह सोचते कि उम्र के बारे मे भी मैने धोखा खाया है। तब उन्हें सुन्दरी के होठों और मुंह का ध्यान आता और वह इस नतीजे पर पहुंचते कि वे अंग्रेज अप्सरा के होठों और मुह से हजारगुने सुन्दर हैं।

एक दिन सीताराम को यह भी पता चला कि अग्रेज अप्सरा के सिर पर जो बाल है वे उसके अपने नही हैं। उस दिन उन्हें जो मानसिक पीड़ा हुई उसका वर्णन नहीं किया जा सकता, क्योंकि नरक में पड़ी हुई आत्माएं ही उसे समझने में समर्थ हो सकती हैं। अन्त मे यह बात भी स्पष्ट हो गई कि केवल बाल ही नही, भौहें भी रंगकर काली बनाई गई है। एक महीने बाद उन्होंने यह भी देखा कि श्रीमती के मोती-जैसे सफेद दांत एक डिब्बे के अन्दर दो कतारो में हिफाजत से रखे हुए हैं। निस्सन्देह इन बातों की खबर उन्हें देर से लगी।

सीताराम अधिक सहन न कर सके। उन्होंने गले में फांसी डालकर इस कष्ट से छूटने का संकल्प किया।

वह कुरसी पर कमर लगाकर बैठ गये और अपने आपको कोसने लगे। उन्हे अपने गांव और मन्दिर की याद आई। उन्हीका ध्यान करते हुए उन्होंने आंखें बन्द कर लीं और सोच में डूब गये। बचपन के दिनों की याद नदी की तरह उमड आई। मरी हुई माता का रूप उनकी आखों के सामने आ खड़ा हुआ। उन्होंने देखा कि मा की आंखों में दया भरी हुई है। इसके बाद उन्हें अपनी पत्नी की सुध आई। उन्हें ऐसा लगा मानो भोली सुन्दरी उनके वापस आने की प्रतीक्षा कर रही है और उसके मुख पर तेज है, जैसा तपस्या के समय उमा के मुख पर था। आत्महत्या से पूर्व मनुष्यों को ऐसी ही मानसिक अनुभूतियां होती है और उन्हें ऐसे ही सपने दिखाई देते हैं। सीताराम की आंखों में आंसू भर आये।

तब एकाएक उन्हें डिब्बे में रखे हुए दांतों का ध्यान आया। नकली दांतों की दोनों पक्तियां उनके सामने सजीव बनकर खड़ी हो गई

और उनका मखौल उडाती हुई बोली—"मूर्ख, तू धोखा खा गया।"

"तो क्या इस सड़ी हुई औरत के पीछे मै अपनी जान दे दू? नही, नही; कितनी बडी मूर्खता का काम करने जा रहा था मै!" सीताराम ने अपने मन मे कहा और कुरसी मे उठ वह कपडे पहनकर बाहर चले गये।

कुछ दिनों तक इधर-उधर मारे-मारे फिरने के बाद एक दिन संयोगवश उन्हे मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज के एक प्रोफेसर मिल गये। उन्होंने अपनी शिक्षा उसी कॉलेज मे प्राप्त की थी। प्रोफेसर मे उन्होने अपनी मूर्खता की सारी कहानी कह सुनाई और उनकी सहायता मांगी। प्रोफेसर को अपने पुराने शिष्य पर दया आ गई। वह उमे जाल से निकालने की चेष्टा करने लगे और अन्त मे उम औरत को समझौते के लिए तैयार करने में सफल हो गए। सीताराम को इस बात के लिए राजी होना पडा कि जब वह इम्तहान पामकर इंडियन मिविल सर्विस मे ले लिये जायेंगे तो अपनी तनख्वाह का, चाहे वह कितनी भी हो, एक बडा हिस्सा हर महीने उस औरत को भेज दिया करगे। रकम तै कर दी गई और इकरारनामे पर हस्ताक्षर कर सीताराम ने सोचा—"बडे भाग्य जो इस जाल से छूटा; चाहे किसी भी शर्त पर सही!" व्याह करानेवाले अफसर के सामने झूठी घोषणा करने के कारण लम्बी जेल काटने, सदा के लिए अपमानित होने और किमी प्रकार की भी नौकरी न पाने का भय था।

उन्होंने कसकर पढाई की और आई. सी एस की परीक्षा मे उत्तीर्ण हो वह भारत के लिए चल पड़े। जहाज मे उतरकर भारत की भूमि पर पैर रखते ही उन्हे ऐसा लगा मानो वह अपनी मा की गोद मे आ गये हों और उन्हे बड़ी प्रसन्नता हुई। विदेश मे भारत लौटनेवाले सभी लोगों के हृदय मे ऐसी भावना उठती है, लेकिन सीताराम के साथ जो घटनाएं घटी थी उनके कारण उन्हें यह अनुभूति और भी

तीव्र रूप में हुई। घर पहुचकर जब उन्होने सुन्दरी को देखा तो परम्परा का ध्यान जाता रहा और उन्होंने सारी भीड के सामने उसे अपनी छाती से लगा लिया। उसके पुराने ढंग के कपड़े और गहने अब सचमुच सुन्दर दिखाई देने लगे; उसकी कोहनी तक पहुंचनेवाली आस्तीने, जिन्हे पहले वह घृणा की दृष्टि से देखते थे, अब सुरक्षा और हर्ष की भावना उत्पन्न करने लगी। डूबने से बचाये जाने पर जो भावना किसी व्यक्ति को सूखी भूमि पर खडे होने से होती है वही भावना सुन्दरी की पुराने ढग की चीजे देखकर सीताराम को हुई। सुन्दरी कितनी रूपवती और सुसंस्कृत है, यह बात उनकी समझ मे तब आई।

यह ज्ञान सीताराम को सचमुच बड़ा महगा पडा, लेकिन अब जिस प्रेम का उदय उनके हृदय में सारे ससार को जीवनदान देनेवाले सूर्य के समान हुआ, उसके लिए जो भी कीमत दी जाय वही कम।

१५

पटाखे

"बापू, मैं पटाखे लूंगा," वीर के लड़के ने रोकर कहा। लेकिन बेचारा वीर पटाखे कहां से लाता? ब्राह्मणों के मोहल्ले और जुलाहों की गली में दीवाली से तीन दिन पहले से ही बच्चे पटाखे छुटाने लगे थे। वीर का लड़का दस गज दूर खड़ा-खड़ा तमाशा देख रहा था। जब कभी वह बिना जले हुए टुकड़ों को उठाने के लिए नीचे झुकता तभी झिड़ककर दूर हटा दिया जाता।

दूसरे दिन और भी बुरा हुआ। पटाखों के छूटने की आवाज हर जगह से आ रही थी। "क्या बात है कि सबके घर में पटाखे हैं और हमारे घर में नहीं," यह प्रश्न बच्चे के मन में बराबर उठ रहा था, लेकिन उसका कोई समाधान नहीं हो पा रहा था। अपने बाप से पूछते हुए उसे डर लग रहा था।

उसे भूख लग रही थी, लेकिन अपने मोहल्ले में जाने का उसका मन नहीं कर रहा था। ब्राह्मणों की गली में खड़ा-खड़ा वह बच्चों के पटाखे छुटाने का मजा ले रहा था।

"दूर खड़ा हो," एक आदमी ने सड़क पर से निकलते हुए कहा। वीर का लड़का डर से कांप उठा और भागकर एक गली में दीवाल से सटकर खड़ा हो गया।

क्या वीर का लड़का जानता था कि उसे इस तरह डरकर क्यों छिपना पड़ा? बच्चे क्या सोचते हैं, यह कौन समझ सकता है? उसके

पास ही एक छोटा-सा पिल्ला खडा था। उस बेचारे जानवर से उसे आत्मीयता मालूम हुई और जब तक वह ब्राह्मण चला नही गया तब तक वह उसे थपथपाता रहा। फिर वह गली से बाहर निकल आया और बहुत देर बाद अपने मोहल्ले मे लौट गया।

"बापू मुझे पटाखे ला दो," उसने वीर से कहा। इसपर उसके बाप ने उसके गाल पर इतना कसकर तमाचा लगाया कि वह जमीन पर गिर पड़ा।

"नशे में चूर होकर घर आते हो और लगते हो बेचारे लड़के को पीटने" वीर की स्त्री ने चिल्लाकर कहा। "शराब-ताड़ी में जो रुपये फूकते हो उसमें-से क्या तुम एक पैसा भी बचाकर इसके लिए पटाखे नही खरीद सकते? क्या वह मांग भी नही सकता? इसके लिए क्या मार डालोगे उसे?" मा लडके को उठाकर पुचकारने लगी।

"मा, मै पटाखे लूगा" लड़के ने फिर कहा।

"चुप रह, अछूत के लड़के को पटाखों से क्या काम?" यह कहकर वह रसोई बनाने चली गई।

"अगर तूने फिर पटाखो का नाम लिया तो मै तुझे जान से मार डालूगा," वीर ने उसे धमकाते हुए कहा।

२

दोरस्वामी ऐयंगर के घर बड़ी धूम मच रही थी। मद्रास से उनका दामाद मय बिस्तर और ट्रंक के आया था। उनकी तीसरी लड़की का ब्याह शेल ऐयंगर नाम के यूनिवर्सिटी के एक ग्रेजुएट से हाल मे ही हुआ था। चार हज़ार रुपयों से जितनी धूमधाम की जा सकती थी उतनी ब्याह म की गई। ब्याह के बाद की यह पहली दीवाली थी और शेल बहुत-सारी चीज़ें लेकर आया था। अपने छोटे सालो के लिए वह बीस पाकिट पटाखो और फुलझड़ियो के लाया था। उन सबको बाटकर वह अपनी सास के पास चला गया। उसके सालो, किट्टू और चीनू ने, जो क्रमशः सात और चार वर्ष के थे, पटाखों को आपस में

बाट लिया। चीनू चाहता था कि सारे पीले डिब्बे मैं ही ले लू, लेकिन किट्टू ने देने के लिए मना कर दिया।

"बेबी को पीले डिब्बे दे दो," कमला ने कहा। कमला उस गर्वीली लड़की का नाम था जिसका हाल ही मे ब्याह हुआ था।

बच्चो का झगड़ा निबटाने के बाद उसने फिर कहा—"इन्हे अभी छुटाना मत, दीवाली तो कल है। कल जब तेल मलवाकर नहा लोगे तब ये पटाखे छुटाने को मिलेंगे।"

इसके बाद वह अपनी मा के पास चली गई।

× × ×

"मैं तो अपने पटाखे अभी छुटाऊगा," किट्टू ने कहा।

"मै नही छुटाता, मै तो अपने कल छुटाऊंगा," चीनू ने कहा।

"मै एक पाकिट आज छुटाऊगा और बाकी कल के लिए रख दूगा," किट्टू बोला।

वे दोनो अपने पटाखे लेकर मा के पास पहुचे।

"मा, इन्हे अच्छी तरह रख दो," चीनू बोला और उसने अपने हिस्से के पटाखे मा की गोद मे डाल दिये। दामाद के आने की प्रसन्नता मे मा ने चीनू को छाती मे चिपटा लिया और उसे प्यार करते हुए कहा—"तुम बडे राजा बेटा हो।" फिर पटाखो के डिब्बे को उस आलमारी मे रखकर जिसमे अक्सर चादी के बर्तन रखे रहते थे वह दामाद से बाते करने चली गई।

३

दीवाली का दिन आया। "हाय, वह तो सब कुछ ले गया, एक हज़ार रुपये के चांदी के बर्तन चले गये," दोरस्वामी की पत्नी मीना ने रोते-रोते कहा।

"उसने मेरा बटुआ भी चुरा लिया। बैंक से निकाले हुए सारे रुपये मैंने उसी मे रख दिये थे," दोरस्वामी ने विलाप-सा करते हुए कहा।

"हमे जाकर पुलिस में खबर करनी चाहिए," दामाद ने कहा।

"तुम्हारा कितना रुपया था ?" सीता के छोटे भाई आरामुदु ने पूछा।

"मा, सारे पटाखे कहां है ?" चीनू बोला।

"शी···ी···ी, मारे पटाखे चोर ले गया," किट्टू ने चुपके-मे उमके कान मे कहा।

"चोर कौन होता है" ? चीनू ने पूछा।

"वह काला आदमी होता है और रात को सबके सो जाने पर घर मे घुसकर सब चीजें ले जाता है," किट्टू ने बताया।

"क्या वह कल यहा आया था ?" चीनू ने पूछा और किट्टू ने गर्दन हिलाकर स्वीकारात्मक संकेत किया।

"तो क्या वह सारे पटाखे ले गया ?" चीनू ने पूछा और वह रोने लगा।

"रो मत बेबी ! हम चोर को पकड़कर मारेंगे," सीता ने कहा।

"कमबख्त चोर बच्चो के पटाखे तक ले गया," कमला बोली।

दोरस्वामी ऐयंगर ने अपने बटुए को चारो ओर तलाश किया और न मिलने पर वह सिर पकडकर एक कोने में बैठ गये।

"जो जाना था, चला गया, अब वापस तो आ नही सकता। चलो, नहा लो," सीता ने अपन दामाद की ओर मुड़कर कहा।

"नही, पहले हमे चावडियूर जाकर फौरन पुलिस को खबर करनी चाहिए। चाचा चलिये।" शेल ऐयंगर ने कहा और वह चाचा कृष्ण ऐयगर को साथ लेकर चला गया।

"चोर ने चादी का एक भी तो बर्तन नहीं छोडा; मै अपने दामाद का सत्कार कैसे करूंगी ?" सीता ने कहा।

४

वीर का लड़का पटाखे छुटा रहा था। मोहल्ले के दूसरे लडके चारो ओर खड़े होकर तालियां पीट रहे थे और खूब खुश हो-होकर चिल्ला रहे थे।

उन्हें पटाखे कहां से मिले ?

किसी को नही पता। दीवाली के दिन वीर ने चार डिब्बे पटाखो के लाकर अपने लड़के को दिये और कहा--"ले, इन्हें छुटा।" लडका खुशी से उछल पडा और "पटाखे, पटाखे' चिल्लाता हुआ मा के पास भाग गया।

× × ×

दीवाली से अगले दिन दो आदमी आये और वीर को ले गये। जब वीर वापस नही लौटा तो उसकी पत्नी अपने लडके को लेकर स्कूल के मास्टर के पास गई और बोली--"हमारी ओर से एक अर्जी लिख दीजिए।"

"वे पुलिस के आदमी थे। तुम्हारे आदमी पर ताला तोडकर मकान मे घुसने और चोरी करने का इल्जाम लगाया गया है," अध्यापक महालिंग पिल्ले ने बताया।

"हाय, मै तो बरबाद हो गई," औरत ने रोते हुए कहा और दोनो हाथों से अपना सिर पीट लिया।

ताड़ी की दूकान मे खबर मिलने पर पुलिसवाले सादे लिबास मे अछूतों के मोहल्ले मे गये और कुप को गिरफ़्तार कर पुलिस चौकी पर ले गये। उसके बाद पूछताछ करने के लिए वे फिर अछूतो के मोहल्ले मे गये। उन्हे कूडे मे पटाखो के टुकडे मिले और पूछने पर मालूम हुआ कि पटाखे वीर के छोटे लड़के ने छुटाये थे। पुलिसवाले सारे टुकडे इकट्ठे करके ले गये।

वीर को चावडियूर ले जाकर वे उससे अपने नियमित ढग से पूछताछ करने लगे।

"मारिये मत, मै आपको सारी बातें बता दूगा," वीर ने कहा।

दूसरे दिन तलैयूर के वेकट और चेन्नराय नाम के दो जरायम-पेशा जाति के आदमी गिरफ़्तार किये गए। पुलिसवालो ने पडोस के गांव में कुप सुनार के घर की तलाशी ली और उससे सवाल-जवाब भी किये। अगले दिन उसके ससुर के घर की तलाशी ली गई और वहां से पांच-सौ रुपये के नोट और चांदी के बर्तन बरामद हुए।

५

वीर का लड़का गवाहों के कटघरे मे खडा था।

"तुम्हारे बाप ने तुम्हे पटाखे दिये थे?" उससे पूछा गया।

"हा हजूर, नही हजूर," लडके ने कहा।

"सच-सच बोलो, डरो मत," दारोगा ने सख्ती के साथ कहा।

"मैने बापू से पटाखे मागे थे, लेकिन उसने मेरे मुह पर थप्पड़ मारा और मुझे धक्का देकर नीचे गिरा दिया। मै कसम खाकर कहता हू कि मैने पटाखे नही छुटाये," लड़के ने कहा।

"असली बात यही है, हजूर। दूसरा गवाह झूठ बोलता है। वे सब झूठे है," इजलास के एक कोने से एक औरत ने चिल्लाकर कहा।

"इसे गिरफ्तार कर लो," दारोगा ने डपटकर हुक्म दिया।

दो सिपाही फ़ौरन आगे बढे और उन्होंने वीर की स्त्री को ले जाकर मजिस्ट्रेट की मेज़ के पास खडा कर दिया।

"ख़बरदार! तू अदालत मे गवाही देते वक्त अपने लड़के को सिखाने-पढाने आई है?" मजिस्ट्रेट ने धमकाकर कहा और वीर की स्त्री ऐसी कांपने लगी मानो मूर्छित हो जायगी।

"इसे बाहर ले जाओ," मजिस्ट्रेट और दारोगा ने एक साथ आज्ञा दी।

मुकदमे की सुनवाई फिर शुरू हुई। वीर के लड़के ने पटाखों के बारे मे तीन तरह के बयान दिये।

"बस काफ़ी है," मजिस्ट्रेट ने कहा। इसके बाद दारोगा ने अदालत के सामने एक लम्बा-चौड़ा भाषण दिया।

एक सप्ताह बाद मजिस्ट्रेट ने वीर और तलैयूर के कैदियों को रिहा कर दिया। दोनों सुनारों को सज़ा हो गई। तलैयूर के कैदियों के संबंध में मजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में कहा—"सिर्फ़ वीर के पुलिस के सामने दिये हुए बयान पर तलैयूर के दोनों कैदियों को सज़ा नहीं दी जा सकती।"

वीर के खिलाफ़ भी काफ़ी शहादत नहीं थी। अछूतों के मोहल्ले में पटाखों के टुकड़ों का मिलना सन्देहजनक अवश्य था, लेकिन चूंकि इस बात का कोई पक्का सबूत नही था कि कूड़े के ढेर में पाये गये टुकड़े उन्ही पटाखों के थे जो दोरस्वामी ऐयंगर के घर से चोरी गये थे, इसलिए मजिस्ट्रेट ने वीर पर से अभियोग उठाकर उसे मुक्त कर दिया।

६

"वेंकट! पटाखो के पाकिट उस गधे के सिवा और किसी ने नही लिए होंगे। उसी की वजह से यह सारी मुसीबत आई," चेन्नराय ने कहा।

"मैंने तो उससे उसी वक्त कहा था कि कोई दूसरी चीज़ ले ले, लेकिन वह माना ही नही। जब वह सारे पटाखों को लेकर बांध रहा था तभी घर में किसी की आवाज़ आई और हमें फौरन भागना पड़ा," वेंकट ने कहा।

"जो पेशा जिस जाति का नही होता उसे करने से यही नतीजा निकलता है। उस आदमी को साथ लेकर हमने भूल की," चेन्नराय बोला।

चोरी का पेशा करनेवाले इन आदमियों को इस बात का बिलकुल पता नही था कि वीर का लड़का पटाखों के लिए रोया था या वीर ने उसे मारा था।

वीर वापस आ गया। जेल में उसे बराबर खाना मिलता रहा था, लेकिन उसके घर में एक दाना भी नहीं था। उसकी स्त्री हंडिया लेकर किसानों के मोहल्ले में दलिया मांगने गई। पति के घर लौटने पर उसे जो खुशी हुई उसे भूख भी नही दबा सकी।

वीर के लड़के ने फिर कभी पटाखों के लिए ज़िद नही की। अगर वह किसी को पटाखे छुटाते देखता तो अनायास भाग खड़ा होता।

: १६ :

जगदीश शास्त्री का सपना

बावन साल की उम्र में जगदीश शास्त्री रगून से अपने जन्म-स्थान तिरुविडैमरुदूर वापस लौटे। पहली बार वह रंगून सुब्बैयर नामक बैरिस्टर के रसोइया बनकर गये, परन्तु जल्दी ही उन्होंने भोजन बनाने का काम छोड दिया और वह वहा के बसे हुए ब्राह्मणो के धार्मिक संस्कार कराने का काम करने लगे। चूंकि उनका जन्म एक पुरोहित-कुल में हुआ था इसलिए वह कुछ मंत्र उच्चारित कर लेते थे। जिन मंत्रों का उच्चारण वह नही जानते थे उन्हे वह एक छपी हुई पुस्तक से, जो उन्होंने इसी काम के लिए अपने पास रख छोड़ी थी, पढकर सीख लेते थे।

रसोइया और पुरोहित का काम करके जगदीश शास्त्री ने जो रुपया कमाया उसे वह ब्याज पर चलाने लगे और जल्दी ही धनवान बन गये। अफ़वाह तो यहां तक थी कि उनके पास एक लाख रुपया नक़द है।

रगून मे रहते हुए जगदीश शास्त्री ने कई बार ब्याह करने की बात सोची, लेकिन उनकी इच्छा पूर्ण न हो सकी। बाद में अवस्था अधिक हो जाने के कारण उन्होंने यह विचार छोड़ दिया और निश्चय किया कि तिरुविडैमरुदूर में थोड़ी-सी ज़मीन ख़रीद ली जाय और स्वर्ग का रास्ता साफ़ करने के लिए एक बेटा गोद ले लिया जाय तथा शेष दिन शान्ति के साथ बिताये जायें। परन्तु तिरुविडैमरुदूर लौटकर

जब वह कुम्भ पर, जो उसी साल बारह वर्ष बाद पड़ा था, स्नान के लिए कुम्भकोण जाकर ठहरे तो वहां एक ऐसी घटना घटी जिससे उनके जीवन का प्रवाह ही बदल गया।

वहां वह जिस मकान में ठहरे थे उसमें नागेश्वरैयर नाम का एक दूसरा आदमी भी अपनी तीन लड़कियों के साथ ठहरा हुआ था। वे भी स्नान के लिए ही आये थे। जगदीश शास्त्री को पता चला कि नागेश्वरैयर एक जौहरी है और किसी बीमा कम्पनी का एजेन्ट भी। वह उत्तरी अरकाट जिले का रहनेवाला था, लेकिन बहुत दिनों तक आन्ध्र देश में रह चुका था और उसके बाद कुछ समय तक कलकत्ते में भी रहा था। उसकी दो बड़ी लड़कियों का ब्याह हो चुका था, परन्तु तीसरी अभी क्वांरी थी। उसकी उम्र चौदह वर्ष की थी। वह रूपवती और वीणा बजाने में बड़ी निपुण थी। जगदीश शास्त्री की आयु ५२ वर्ष की थी परन्तु थे वह अब भी हट्टे-कट्टे। नागेश्वरैयर का कहना था कि कोई भी उन्हें देखकर चालीस वर्ष से अधिक का नहीं समझ सकता था।

जगदीश शास्त्री को पता चला कि नागेश्वरैयर के पास बीमा कम्पनी का जो रुपया था उसे उसने खर्च कर दिया है और अब उसको पूरा करने का उसे कोई साधन नहीं मिल रहा है। इसलिए तय हुआ कि जगदीश शास्त्री ६ हजार रुपया देकर नागेश्वरैयर को अपना ऋण चुकाने में सहायता दें और शीघ्र ही तिरुपति में उनका नागेश्वरैयर की छोटी लड़की से चुपचाप ब्याह हो जाय। रुपया दे दिया गया और ब्याह भी हो गया। नागेश्वरैयर किसी आवश्यक कार्य से कलकत्ते लौट गया और जगदीश शास्त्री को बड़ा आश्चर्य हुआ जब उन्हें उसका कोई समाचार नहीं मिला। लेकिन इस बात पर ध्यान न देकर वह अपनी युवती पत्नी के साथ रंगून चले गये।

२

दो वर्ष भी न बीते होंगे कि जगदीश शास्त्री की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। जगदीश शास्त्री ने उसका बड़े लाड़-प्यार से

लालन-पालन किया जैसे कि सभी बडे-बूढे अधिक आयु मे पुत्र उत्पन्न होने पर करते है।

दो-तीन साल और बीतने पर उनकी पत्नी के चरित्र के विषय में इधर-उधर बदनामी की बाते कही जाने लगी। ये बातें शास्त्री के कानों मे पड़ी, लेकिन इस विषय मे उन्होंने अपने को बिलकुल लाचार पाया। एक दिन घर लौटने पर उन्होंने देखा कि उनकी पत्नी अपनी वीणा, गहने और कैशबक्स के सारे रुपये लेकर चम्पत हो गई है। इससे बूढे शास्त्री को बडा क्षोभ हुआ।

लड़का अब सात साल का था और स्कूल मे पढता था। उसकी शिक्षा और कुछ चुने हुए मित्रो के घर पुरोहिताई के काम मे व्यस्त रहकर शास्त्री अपना दुःख बहुत-कुछ भूल गये थे।

स्कूल की शिक्षा सफलतापूर्वक समाप्त कर रामचन्द्र विश्वविद्यालय में भरती हुआ और उन्नीस वर्ष की उम्र मे उसने बी० ए० की डिग्री ले ली। सन् १९३० ई० मे बाप-बेटा अपने देश लौट आए।

जगदीश शास्त्री के एक चचेरे भाई थे। उनका नाम सीतारामैयर था और वह एक बड़े सफल वकील थे। वह अपने काम में इतने निपुण समझे जाते थे कि जगह खाली होने पर उनके एडवोकेट-जनरल बनने की आशा थी। स्वभावतः जगदीश शास्त्री उन्ही के यहां आकर ठहरे और सीतारामैयर की पत्नी ने रामचन्द्र को अपनी लड़की पार्वती के लिए उपयुक्त वर समझा। "इससे अच्छा वर हमें और कहा मिल सकता है? बी० ए० तो वह कर ही चुका है; हम उसे आई. सी. एस. की परीक्षा के लिए इंग्लैण्ड भेज सकते है," उसने अपने पति से कहा और सीतारामैयर ने भी उसका समर्थन किया। लेकिन बीच में एक रुकावट थी--शारदा कानून। लडकी अभी ग्यारह साल की थी और क़ानून को बिना तोड़े उसका ब्याह फ़ौरन नही हो सकता था। किन्तु जिस व्यक्ति को एडवोकेट-जनरल बनने की आशा थी वह क़ानून के विरुद्ध कैसे काम कर सकता था?

सीतारामैयर की पत्नी ब्याह को टालकर इतने अच्छे जामाता के हाथ से निकल जाने देने का खतरा मोल लेना नही चाहती थी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अगर ब्याह अभी नही किया जा सकता तो कम-से-कम दोनो ओर से पक्की लिखा-पढी हो जानी चाहिए। अत आपस में लिखा-पढी हुई और तय हुआ कि लड़के को आई. सी एस. के लिए इंग्लैण्ड भेजने का सारा खर्च सीतारामैयर करेंगे और तीन वर्ष बाद उसके वहा से लौटने पर ब्याह हो जायगा। लडकी काली थी इसलिए रामचन्द्र को उसके प्रति कोई अनुरक्ति नहीं थी। फिर भी अपने पिता की इच्छा को ध्यान मे रखकर और इंग्लैण्ड जाने की उत्सुकता के कारण उसने कोई आपत्ति नही की।

३

रामचन्द्र के इंग्लैण्ड चले जाने के बाद जगदीश शास्त्री रंगून वापस चले गए, लेकिन वहा बिना अपने बेटे के अकेले रहने के कारण उनका चित्त शांत नही रहता था। अक्सर उन्हें अपनी स्वर्गीय पत्नी की याद आ जाती थी। इस मानसिक अशान्ति का प्रभाव उनके शरीर पर भी पड़ा और धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य गिरने लगा। इसे शारीरिक रोग समझकर उन्होंने अपने को डाक्टर को दिखाया। डाक्टर ने विश्वास दिलाया कि आपके स्वास्थ्य में कोई खराबी नहीं है, लेकिन आपको अपने देश लौट जाना चाहिए। जगदीश शास्त्री को यह सलाह अच्छी लगी और वह रंगून को सदा के लिए छोड़कर भारत चले आए।

स्टीमर में एक अनहोनी घटना घटी। जगदीश शास्त्री ने सेकण्ड क्लास में एक महिला को देखा जो उनकी खोई हुई पत्नी से मिलती-जुलती थी। थोडा-बहुत अन्तर तो अवश्य था, परन्तु उसे उन्हें छोड़कर गये भी तो पन्द्रह वर्ष से अधिक हो गये थे। स्टीमर के मद्रास पहुंचते-पहुंचते उन्हें इस बात का करीब-करीब पूरा विश्वास हो गया कि यह मेरी पत्नी ही है। बन्दरगाह पहुंचने पर जब वह महिला अपने असबाब

के साथ उतरने लगी तो वह उसके सामने जाकर खडे हो गये। एक क्षण तक वे एक-दूसरे को देखते रहे। फिर उस महिला ने कहा—"मै अगस्पनायक गली मे ६१४ नम्बर के मकान मे ठहरी हुई हू, अगर आप बातचीत करना चाहते है तो वहा आकर मिल सकते है।" इस पर शास्त्री हंस पड़े और बोले—"तो आखिर तुम्ही हो; मने ठीक समझा था।"

"हां, मै ही हू," उसने भी हसकर उत्तर दिया।

४

दो दिन तक शास्त्री अपने सम्बन्धी सीतारामैयर के घर रहे और वहा उनकी बडी शान के साथ खातिरें हुई। उन दिनों दक्षिण मे इस बात की चारों ओर चर्चा थी कि अछूतो को मदिर-प्रवेश की स्वतत्रता दी जानेवाली है। "सनातनधर्म नष्ट हो गया," सीतारामैयर के घर मे सबने कहा। शास्त्री का भी यही विचार था।

"शारदा बिल के पेश होने पर आप लोग चुप क्यों बैठे रहे? यह उसी का फल है," सीतारामैयर की पत्नी ने कहा।

"बेकार की बाते मत करो, उस बात का इसमे क्या सम्बन्ध?" सीतारामैयर बोले।

"नही, उनका कहना बिलकुल ठीक है," शास्त्री ने कहा। एक दूसरे वकील ने, जो सीतारामैयर के नीचे काम सीखा करता था, नम्रता के साथ कहा—"क्या आपको रगून जाने के लिए समुद्र पार नही करना पड़ा? इस बात से भी मन्दिर-प्रवेश का मार्ग साफ ही होता है।"

"इन अललटप बातों का क्या मतलब? क्या जीविका कमाने के लिए रगून जाना और पवित्र मन्दिरो को अछूतों के लिए खोल देना एक ही बात है?" जगदीश शास्त्री ने अधीरता के साथ पूछा।

"शास्त्रो में केवल चार वर्णो का उल्लेख है। कोई पांचवा वर्ण तो होता नही, अगर हम अछूतो की गिनती चौथे वर्ण में कर ले तो इसमे नुकसान क्या होगा?" छोटे वकील ने पूछा।

"आप लोग शास्त्रों के अनुवाद भर पढकर पूर्ण पंडितों की तरह बातें करने लगते हैं। चार वर्ण तो आरम्भ में ईश्वर ने बनाये थे, लेकिन बाद में दो वर्णों के मिलने से नये अपवित्र वर्ण उत्पन्न हो गये। चांडाल इन्हीं अनियमित विवाहों के फल है," जगदीश शास्त्री ने कहा।

"ऐसा मालूम होता है कि ब्रह्मा को अपने काम में सफलता नहीं मिली। क्या आपके कहने का मतलब यह है कि अछूत कही जानेवाली जाति के सभी लोग चरित्रहीन ब्राह्मणियों की सन्तान है?" छोटे वकील ने पूछा।

"इन बातों की गहराई तक जाने मे कोई लाभ नही। हम उन्हें पीढियों से चांडाल मानते आये है। हम अब उनकी पहचान के सबूत नही मांग सकते। हम ब्राह्मण है, इसी बात का क्या प्रमाण है?" जगदीश शास्त्री ने उत्तर दिया।

कचहरी जाने का समय हो जाने के कारण सभा विसर्जित हो गई और जगदीश शास्त्री ६१४ अंगप्पनायक गली के लिए चल पड़े।

५

उसी दिन शाम को जगदीश शास्त्री सेण्ट्रल स्टेशन पर बनारस का टिकट लेते हुए दिखाई दिये। सुबह की अपेक्षा उस समय उनकी आयु दस वर्ष अधिक मालूम हो रही थी।

"आप किस रास्ते से जाना चाहते हैं, बाबा?" टिकट बाबू ने पूछा।

"कोई भी रास्ता हो, लेकिन हो सबसे पास का। मुझे जल्दी-से-जल्दी गंगाजी में नहाकर अपने पाप धोने हैं," जगदीश शास्त्री ने कहा।

जगदीश शास्त्री के इस वैराग्य का कारण वे बातें थी जो उन्हें ६१४ अंगप्पनायक गली में अपनी पत्नी से मालूम हुई थीं। जगदीश शास्त्री का ससुर न तो ब्राह्मण था न जौहरी। उसका असली नाम परियारी नायक था। एसिस्टेंट एकाउन्टेण्ट-जनरल त्यागराजैयर उसे अपने साथ

कलकत्ते ले गये थे, जहां उसकी बाल काटने की एक दूकान थी। इस पुश्तैनी पेशे में लगे-लगे ही उसने एक अनाथ विधवा को घर मे पत्नी के रूप मे रख लिया था और जगदीश शास्त्री की पत्नी उसी से जन्मी थी। अपनी लड़की के ब्याह के बाद वह किसी फौजदारी के षड्यंत्र में फंस गया और उसे सात साल की जेल हो गई। वह अब भी लाहौर की जेल मे बन्द था।

जगदीश शास्त्री की पत्नी उन्हे रंगून में छोड़ने के बाद इधर-उधर घूमती फिरी और अन्त में वह एक सिनेमा कम्पनी में भरती हो गई और वहां उसने खूब धन कमाया। उसने शास्त्री को बताया कि मुझे अब किसी बात की कमी नही, मैं खूब खुश हूं और आपसे किसी तरह की सहायता लेना नही चाहती।

"मैंने और मेरे पिता ने मिलकर आपको ठगने का जाल रचा था; हमें केवल भगवान् ही क्षमा कर सकता है," उसने कहा।

इन सब बातों के होते हुए भी जगदीश शास्त्री अपनी पत्नी की प्रशंसा किये बिना नही रह सके। उसके प्रति उनके मन मे पहले से भी अधिक प्रेम उमड़ पडा और वह बच्चे की तरह रोने लगे।

फिर उन्होने कहा—"पता नहीं यह जात-पांत बनाई किसने? भगवान् ने ऐसा कभी नहीं किया होगा। चलो, पिछली बातों को भूलकर रंगून चले और वहां आनन्द से रहें।"

"ऐसी बातें कहने से कोई लाभ नही। मै तो आपको स्पर्श करने योग्य भी नही हूं। मेरा पाप तो सात पीढ़ियों तक नही धुल सकता। जाइये, गंगाजी नहाकर मुझसे ब्याह करने का पाप धो आइये," शास्त्री की पत्नी ने कहा। जब शास्त्री घर से बाहर निकले तो उन्हे बड़ा भय मालूम हुआ। उन्हें अपने लड़के का ध्यान आया जो उस समय इंग्लैण्ड में पढ रहा था और कुछ ही महीनों में वापस आनेवाला था। "उसका ब्याह होना है; अगर किसीको पता चल गया कि वह इस कुलटा का लड़का है तब? इस औरत की जाति क्या है? और इस लड़के की

जाति क्या है? सीतारामैयर और उनकी पत्नी क्या कहेगे?" शास्त्री का सिर चकराने लगा। वह लड़खड़ाते हुए बडी कठिनाई मे स्टेशन तक पहुंचे।

रेल-यात्रा की दूसरी रात को शास्त्री के साथवाले यात्रियो ने उन्हे बूढा और कमजोर समझ तरस खाकर लेटने की जगह दे दी। वह थके हुए थे और जल्दी ही गहरी नीद में सो गये। सोते-सोते उन्हे एक भयानक सपना दिखाई दिया।

"रामचन्द्र इग्लैण्ड से वापस आ गया है। अब वह एक सुन्दर ब्राह्मण का लडका नही लगता। शापग्रस्त त्रिशकु की तरह वह कुरूप होकर घर आया है और पूरी तरह से एक अछूत का लड़का बन गया है। वह आई सी. एस. नही बल्कि सिर्फ एक कुली है। परन्तु शास्त्री उसे अब पहले से भी अधिक प्रेम करने लगे है।"

उन्होंने देखा कि सीतारामैयर और उनकी पत्नी ने उन्हें घर से बाहर निकाल दिया है। माली, ड्राइवर और भंगी सब उन्हें झिड़किया दे-देकर वहां से भगा रहे है। गली मे भीड इकट्ठी हो गई, जिसमें-से शास्त्री अपने लडके के साथ किसी तरह निकल भागे।

अब शास्त्री अपने गांव में पहुंच गये, लेकिन वहा सबको पता लग गया कि उन्होने एक अछूत लड़के को अपने घर में शरण दे रखी है। लोगों की भीड़ इकट्ठी हो गई और उन्होंने उन्हे खदेड़कर ब्राह्मणो की गली से बाहर भगा दिया।

शास्त्री अपने बेटे के साथ फिर मद्रास पहुंचे। दोनो एक बस मे चढ़े। चढ़ते ही कण्डक्टर ने पूछा—""यह लड़का किस जाति का है?" गले में माला पहने हुए एक बूढे आदमी ने चिल्लाकर कहा—"यह लड़का चांडाल है अछूत है।" "इसे बाहर फेंक दो," बस मे बैठे हुए सब आदमियों ने चिल्लाकर कहा। बसवाले ने शास्त्री को घसीटकर बाहर खीचा और बाप-बेटा एक-साथ नीचे कूदे। इस अपमान को सह न सकने के कारण वे गली में जा छिपे।

इसके बाद दृश्य बदला। वे मैलापुर में सीतारामैयर के घर पहुचे। "क्या आप मेरे लड़के को अपने दफ्तर में क्लर्क नही रख सकते ?" शास्त्री ने सीतारामैयर से हाथ जोड़कर कहा।

"यह कैसे हो सकता है ? मेरी पत्नी को आपत्ति होगी," सीतारामैयर ने कहा और उसी समय उनकी पत्नी भी अन्दर से आ गई। जगदीश शास्त्री भय से कांपने लगे।

"हमारे दफ्तर मे अछूत बैठकर काम करे ? क्या ही अच्छा विचार है आपका ! हमें उसकी जरूरत नहीं। हमारा रुपया फ़ौरन वापस करो," सीतारामैयर की पत्नी ने कहा और एक दस्तावेज दिखाया। यह वही काग़ज़ था जिसपर रामचन्द्र के ब्याह का इकरारनामा लिखा गया था। सीतारामैयर रामचन्द्र के लिए पन्द्रह हज़ार रुपये खर्च कर चुके थे। उन्होने शास्त्री से यह रकम वापस करने को कहा।

दृश्य फिर बदला। पीले वस्त्र पहने और हाथ में त्रिशूल लिए एक महन्त मृगछाला पर बैठे दिखाई दिये। "स्वामीजी ! क्या आप मेरे लड़के की शुद्धि कर उसे ब्राह्मण बना सकते है ?" शास्त्री ने उनसे पूछा।

"असम्भव, एक जन्मजात चाडाल की शुद्धि की कोई आशा नही," स्वामी ने मधुर वाणी से कहा। "उसकी जाति तो उसी समय मिट सकती है जब उसका शरीर जलकर भस्म हो जाय। यदि वह इस जन्म में अपनी जाति के धर्म का पूर्ण रूप से पालन करे तो दूसरे जन्म में वह उच्च जाति में जन्म लेगा। फिर भी ब्राह्मण का जन्म पाने से पहले तो उसे कई जन्म लेने पड़ेगे।"

"बदमाश ! बड़ा संन्यासी बना है ? क्या तू उस विश्वासघात के मामले को भूल गया जिसमें तुझे दण्ड मिला था ? क्या तूने झूठी दरख्वास्तें नही दी थी ? क्या तूने किराये पर ली हुई चीजें नही बेच डाली थी ? तुझे तो जेल होनी चाहिए थी, लेकिन तू जुर्माना देकर ही छूट गया था। क्या इन बातों में कोई पाप नही है ?" शास्त्री ने चीखते हुए कहा।

संन्यासी की आंखे गुस्से से लाल हो गई। 'अछूत कही का, मै तुझे श्राप देता हूं। तूने मेरी निन्दा की है और एक सन्यासी को उसके जीवन की पहली बाते याद दिला दी हे," संन्यासी चिल्लाकर बोला और डडा लेकर मारने को दौड़ा। शास्त्री भागे और उनका सिर गली के फाटक से टकराया।

रेल की गद्दी से लुढककर नीचे गिरने से बूढे शास्त्री की आखे खुल गई और उनका सपना टूट गया।

दूसरी रात को शास्त्री को अपने लड़के के बारे मे और भी स्वप्न दिखाई दिये। आखें बन्द करते ही उनका ताता-सा लग गया।

शास्त्री अपने बेटे के साथ फिर इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे थे। दोनो को भूख लगी और वे एक कॉफी-घर में घुसे। बैरा ने उनके सामने दो पत्तो पर चावल के केक परस दिये। वे खाना शुरू ही करनेवाले थे कि पास मे बैठे हुए एक आदमी ने पूछा—"यह लड़का कौन है ?" शास्त्री ने डर के मारे कोई उत्तर नही दिया। इतने मे एक आवाज़ आई—"यह चाडाल है" और तब सब-के-सब एक-साथ चिल्ला उठे—"यह अछूत है, इसे बाहर निकाल दो।" बैरे ने लड़के से चावल का केक छीनकर कूड़े के बर्तन मे फेंक दिया और लड़के को धक्का देकर बाहर निकाल दिया। शास्त्री उसके पीछे "मेरे बेटे, मेरे बच्चे" कहते हुए भागे।

कुम्भकोण के रायबहादुर नरसिहाचारियर दिल्ली असेम्बली के मेम्बर थे। शास्त्री ने उनसे कहा—"जब आप दिल्ली जायं तो कृपाकर मेरे लड़के को अपना क्लर्क बनाकर ले जायें। वह बी० ए० पास कर चुका है, परन्तु मेरे पाप के कारण वह अचानक अछूत बन गया है।"

"नही शास्त्री! यह ठीक है कि दिल्ली में हम जातपात अधिक नही मानते। लेकिन एक अछूत को हम अपने घर मे कैसे रख सकते है? अगर वह शूद्र होता तब भी कोई बात नही थी," नरसिहाचारियर ने कहा।

"तो क्या आप उसे शुद्धकर शूद्र बना सकते है?" शास्त्री ने उत्सुकता से पूछा।

"मै शूद्र कैसे बना सकता हूं? आप तो कह रहे थे कि मै अपवित्र जाति का हूं," लड़के ने कहा।

"हा, यह सच है। क्या इन शास्त्रों को जलाया नही जा सकता?" शास्त्री ने चिल्लाकर कहा।

"कोई बात नही पिताजी, मं रेल का कुली बन जाऊगा, वहां किसी को आपत्ति नही होगी," रामचन्द्र बोला।

"यह भी कोशिश कर देखो," शास्त्री ने दुःखी होकर कहा।

रामचन्द्र फौरन रेल का कुली बन गया। पहली बार के असबाब ढोने मे उसे चार आने पैसे मिले। लेकिन दूसरे दिन जब वह किसी आदमी का ट्रंक और बिस्तर उठाकर अपने सिर पर रखनेवाला था तभी एक दूसरा लड़का दौड़ता हुआ आया और चिल्लाया--"साहब, साहब, यह अछूत का लड़का है।"

उस ट्रंक और बिस्तर का मालिक एक ब्राह्मण अफसर था। उसने कहा--"क्यों बे, तूने मेरे असबाब को छूने की कैसे हिम्मत की?" और अपनी छतरी की नोक से लडके की कमर खोदी। रामचन्द्र ट्रंक और बिस्तर को नीचे डालकर अपराधी की तरह भाग खडा हुआ।

अपने अभिशापित लडके को लेकर शास्त्री फिर चले। आकाश के किसी भाग से "चाडाल, चाडाल" की ध्वनि बराबर आ रही थी। जब वृक्षो की पत्तियां खड़खड़ाती तो उनमें से भी वही ध्वनि सुनाई देती थी। बूढे शास्त्री थककर चूर हो गये, उनकी टांगों में दर्द होने लगा और प्यास के मारे उनका हलक सूख गया। लेकिन पास में कोई तालाब या कुआं दिखाई नहीं दिया।

"मै बहुत प्यासा हू बेटा, थोडा-सा पानी ले आओ," शास्त्री ने कहा।

"मुझे पानी कौन देगा, पिताजी?" रामचन्द्र ने कहा।

"ठीक है, मेरे बच्चे। न तो कोई हमे पानी देगा, न कही से लेने ही देगा। हमे तो मरना ही पड़ेगा।

हम मरेगे क्यो, उठिये, पिताजी; हम इग्लैण्ड चलेगे। वहा जात-पांत या छुआछूत का कोई झगडा नही।"

"हम इंग्लैण्ड कैसे जा सकते है ? अभी तो हम वृदाचल मे ही है," शास्त्री ने कहा।

"देखिये, सामने एक सीढियोंवाला कुआं है। चलिये हम वहा उतर-कर पानी पिये," यह कहकर लडका अपने पिता को उस ओर ले चला। भय से कांपते हुए वे सीढियो से नीचे उतरे। वहां कोई नही था, इस-लिए दोनों ने जी भरकर प्यास बुझाई। ऊपर चढते समय उन्हें एक बूढी औरत मिली। उन्हे देखकर वह चिल्लाई—"जल्दी आओ, जल्दी आओ; किसी चाडाल ने आकर हमारे गांव का कुआ अपवित्र कर दिया। दुष्ट कही का!"

फौरन भीड़ जमा हो गई। गुस्से में भरकर सब लोग लड़के पर टूट पड़े। शास्त्री लड़के का हाथ पकडकर एक दूर के मन्दिर की ओर भागे।

"हे भगवान्!" हमारी रक्षा तुम्ही कर सकते हो, उन्होने चिल्ला-कर कहा। लेकिन जब वह मन्दिर के पास पहुचे तो उनके मन में एक शका हुई और वह रुक गये।

"भगवान्! सब कहते है कि मेरा लडका चांडाल है। क्या हम तुम्हारे मन्दिर में भी नही आ सकते? तुम्हारे सिवा और कौन हमें शरण दे सकता है?" उन्होने रोकर कहा।

"तुम बिना किसी डर के अन्दर आ सकते हो, मै सबका माता-पिता हूं। मै कोई भेदभाव नही करता," अन्दर से एक आवाज आती हुई सुनाई दी। शास्त्री अपने लड़के के साथ अन्दर चले गये। "तो आखिर हमें शरण और रक्षा की जगह मिल ही गई," उन्होंने कहा।

उसी समय एक पुरोहित चिल्लाता हुआ आया—"हे भगवान्! देवता के घर में चांडाल घुस आया।" बहुत-से दूसरे आदमी भी आ

पहुचे और बाप-बेटे के चारो ओर तुरन्त ही भीड इकट्ठी हो गई ।

"इस अछूत लडके की ढिठाई तो देखो ! मारो इसे ठोकर लगाओ," वे चिल्लाये।

"यह चाडाल नही है, यह मेरा बेटा है," शास्त्री ने चिल्लाकर कहा।

उसी समय कही से शास्त्री की पत्नी आ पहुची। "यह झूठ है, बूढे का विश्वास मत करो, वह मेरा बेटा है, दोगला है, चाडाल है," उसने चिल्लाकर कहा।

"चुड़ैल ! विश्वासघातिनी ! बदजात ! शास्त्री ने मन्द स्वर में कहा। फिर वह भीड़ की तरफ़ मुह करके खड़े हुए और बोले—"भगवान् ने स्वय अपने श्रीमुख से हमे अन्दर आने की अनुमति दी है, क्या आपने नही सुना ?"

"हमने कुछ नही सुना, इसकी खाल उधेड़ दो, इसे जान से मार डालो " वे चिल्लाये और रामचन्द्र पर टूट पड़े।

"हे भगवान् !" शास्त्री चिल्लाये और उठकर बैठ गये। उन्होने देखा कि टिकट-चेकर उन्हे धीरे-धीरे थपथपाकर जगा रहा है। "उठकर बैठो बाबा ! तुम चिल्ला क्यो रहे हो ? अपना टिकट तो दिखाओ।"

यह केवल सपना था, लेकिन शास्त्री बहुत देर तक बैठे-बैठे कापते रहे। जाग जाने पर भी उन्हे ऐसा मालूम होता रहा कि पटरी पर चलने से गाडी का जो शब्द हो रहा था उसमे से 'अछूत, अछूत' की ध्वनि आ रही थी।

× × ×

कुछ समय बाद रामचन्द्र इंग्लैण्ड से लौट आया और कुरनूल में असिस्टेण्ट कलक्टर नियुक्त हो गया। उसके जन्म की कथा न उसे बताई गई न सीतारामैयर को ही।

जगदीश शास्त्री का लापता हो जाना सबको बुरा लगा और कुछ दिनो तक सब लोग उन्हें प्रेमपूर्वक याद करते रहे। किसी ने कहा कि

उन्हे एकाएक वैराग्य उत्पन्न हो गया और वह संन्यासी बनने के लिए बनारस चले गये; किसी ने कहा कि वह गंगा में डूब मरे।

कुछ दिनों तक उनके लौटने की प्रतीक्षा की गई, लेकिन जब वह वापस नही आए तो इकरारनामे के अनुसार असिस्टेण्ट कलक्टर मिस्टर जे. आर. चन्द्र का ब्याह सीतारामैयर की लडकी के साथ हो गया। मैलापुर के और ब्याहों की भांति यह ब्याह भी धूमधाम और शान के साथ हुआ।